Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

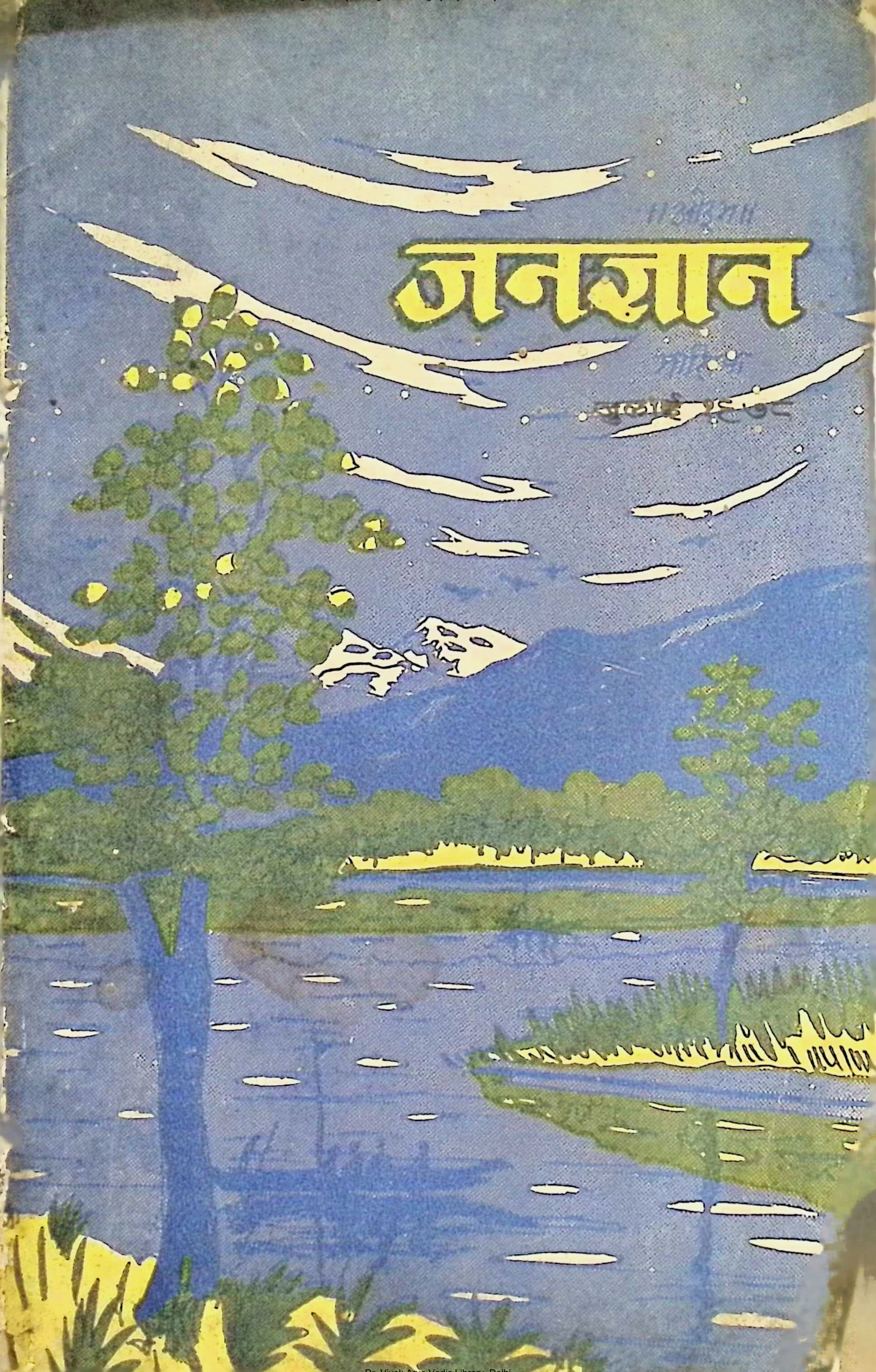

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संस्थान समाचार

७ जून को आत कारणों से वेद मन्दिर में आग लग गयी। एक पूरा कमरा जिसमें साहित्य व लकड़ी का मूल्यवान सामान था स्वाहा हो गया। १०-१२ व्यक्तियों ने घण्टों परिश्रम कर आग पर काबू पाया इस अग्निकांड में संस्थान को भारी क्षति हुई।

निर्माण कार्य

वेद मंदिर में निर्माण कार्य चालू है। मंदिर के द्वार के आधार खड़े हो गए हैं। द्वार निर्माण के लिए श्री शिवशंकर जी ने अपने पिता जी की स्मृति में ५००० रु. दिया था। किन्तु अभी कार्य वहुत शेषहै। जो प्रभु कृपा से ही पूर्ण होगा।

यज्ञशाला निर्माण

हमने अपने सभी सदस्यों से केवल १०० ईंटों का व्यय २५ रु. मांगा था, किन्तु वहुत कम ने ही हमारी प्रार्थना स्वीकार की। यज्ञशाला का निर्माण पैसे की कमी से रुका हुआ है, केवल दीवारें ही अभी तक बन सकी हैं। श्रावणी रक्षा वन्धन पर सभी कम से कम २५ रु. भेजने की तैयारी करें यदि हमारे सभी माननीय सदस्य स्वयं कष्ट उठाकर भी इस दिशा में प्रयत्न करें तो समस्या सुलझ सकती है।

वेद भाष्य १०१ में देने का साहसपूर्ण निर्णय

कागज महंगा, छपाई जिल्द सभी महंगे हो गये किन्तु आप का संस्थान अभी भी वेद को घर घर पहुंचाने में लगा हुआ है।

श्रावणी के उपलक्ष्य में अध्यक्ष महोदय ने १०१ रु. में ही पुनः वेद भाष्य २जिल्दों में और १२५ रु. में चार जिल्दों देने का साहसपूर्ण निर्णय लिया है। केवल दयानन्द संस्थान ही इस महान् विशाल ग्रन्थ को आज १०१ रु. में देने का साहस कर सकता है। आप सब भी इस अवसर का लाभ उठाएं। और अधिक से अधिक परिवारों में वेद भाष्य पहुंचाने का निश्चय करें। आप के मित्र व परिचितों में कोई घर ऐसा न रहना चाहिए जहां पर प्रभु की वाणी न पहुंचे. यत्न कीजिए, आदेश भेजिए—जल्दी ताकि २५ अगस्त तक वेद भाष्य आपके पास पहुंच सके।

मुझे विश्वास है कि उत्साह उभरेगा, आप जागेंगे और वेद की अमरवाणी कम से कम ५००० परिवारों में पहुंचा कर हम वेद प्रचार सप्ताह मनाएंगे।

—प्रबंधक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि दयानन्द

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन – ज्ञान

[मासिक]

सम्पादक
सुमेधा

दूरभाष : ५६६६३९

पता
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
[निकट ३१-नाईवाला]
करौल बाग, नई दिल्ली-५

वार्षिक शुल्क २०)
विदेश मे ६ पौंड
(विमान से)

४ पौंड : समुद्री डाक से
(आजीवन ३०१)

एक प्रति : २ रुपये
वर्ष ११ : अंक ३

श्रावण : सम्वत् २०३५

सम्पादकीय—

कल तुम्हारा होगा

आप अपने विचार बदलें, यह समय की मांग है, पर आप को विचार बदलने के लिए बाध्य तो नहीं किया जा सकता। कोई भी शक्ति ऐसी नहीं जो किसी के सोचने का ढंग बदल सके।

यही स्थिति आज भी है। हम चाहते हैं कि आप बदल जाएं, पर आप सोचते हैं आप ठीक हैं। इसी ठीक ने पाकिस्तान को जन्म दिया। इसी ने नागालैंड उत्पन्न किया, और यही भारत के अस्तित्व को समाप्त कर देगा।

आज भारत पर मृत्यु के बादल छाए हैं। निराशा, स्वार्थ, फूट, भ्रष्टाचार और साम्प्रदायिकता ने इसके अस्तित्व को चुनौती दे रखी है। पर कोई माँ का बेटा इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं।

सब कायर हो चुके हैं। स्वार्थ ने उन्हें अंधा कर दिया है। सोचने का दायरा केवल अपने घर की दीवारों तक ही सिकुड़ चुका है। पड़ौसी का घर जल रहा है, जले! हमें क्या? कोई मर रहा है, मरे, हम क्यों परेशान हों? यह चिन्तन सब कुछ समाप्त करने की तैयारी कर चुका है।

आप जो अपने को ऋषि सन्तान कहते हैं, आप जो अपने को दयानन्द का अनुयायी मानते हैं, आप जो बड़े लम्बे चौड़े भाषण झाड़ते हैं यदि नहीं बदलते, तो फिर कोई ऐसी शक्ति नहीं जो सर्वनाश से हमारी रक्षा कर सके।

आप के जागरण पर भारत का भविष्य निर्भर है। जागरण का अर्थ है, परिवर्तन। काम करने के ढंग का, योजनाओं का, विचारों का परिवर्तन।

जो हो रहा है वह विनाश का निमन्त्रण है। जो होना चाहिए उस के लिए कोई तैयार नहीं। फिर आप ही बताइए—अन्त क्या होगा?

माँ का भाग्य उजड़ जाएगा, सत्य समाप्त हो जाएगा, असत्य जीत जाएगा, क्या तुम गर्व से सिर उठा सकोगे?

जागो! मेरे प्राण! जागो, सिंहनाद करो, क्रान्ति करो, युद्ध करो और विजय के लिए सर्वस्व समर्पित कर दो। विजय या मृत्यु का संकल्प लेकर **कर्मक्षेत्र में आओ—कल तुम्हारा ही होगा—कल की प्रतीक्षा न करो** ……………!

—सुमेधा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रावणी : रक्षा बन्धन पर

प्रति वर्ष दान भेज कर

दयानन्द संस्थान का संचालन कीजिए ।

२५) वार्षिक भेजकर	—	सहायक सदस्य
५१) वार्षिक भेजकर	—	प्रेरक सदस्य
१०१) वार्षिक भेजकर	—	संचालक सदस्य
२५१) वार्षिक भेजकर	—	विशिष्ट सदस्य
५०१) वार्षिक भेजकर	—	सहयोगी सदस्य
१००१) वार्षिक भेजकर	—	सहयोगी सदस्य
५००१) वार्षिक भेजकर	—	संरक्षक सदस्य बनिए

दयानन्द संस्थान आपकी अपनी सम्पत्ति है ।

वेद-धर्म-सत्य का प्रचार-प्रसार
संस्थान का चरम लक्ष्य है ।

आपका जितना सहयोग मिलेगा
काम उतना ही अधिक होगा ।

—राकेशरानी पंडित

अध्यक्ष :

दयानन्द-संस्थान

वेद मन्दिर, शहीद लेखराम नगर दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपमान सहना सब से बड़ा तप है।

—भारतेन्द्र नाथ

वेद की बात : करने का अधिकार क्या आपको है ?

वेद संसार के सब से प्राचीन ग्रन्थ हैं। वेद मानवमात्र के धर्म ग्रन्थ हैं ? वेद के मार्ग पर राम चले, कृष्ण चले, ऋषि-मुनि सभी चले, बाद में हम उन्हें भूल गए।

आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द ने वेदों का उद्धार—प्रचार किया। दयानन्द के अनुयायियों ने वेदों का नाम लिया पर वेद का प्रचार नहीं किया।

कितने दयानन्द भक्त हैं जो वेद पढ़ते हैं ? जिनके घर में चारों वेद हैं ? 'वेद' पर श्रद्धा कितनों को है, कितने उन्हें अपना धर्म ग्रन्थ मानते हैं ?

आज सभी विश्वविद्यालयों में वेदों की हत्या हो रही है। प्रमुख पत्रों में वेद के नाम पर वेद विमुख करने वाला प्रचार हो रहा है। वेद को नष्ट करने का सभी षड़यन्त्र कर रहे हैं। पर वे कहां हैं जो वेद की रक्षा का काम कर रहे हैं ?

आर्यसमाज की शक्ति वेद के प्रचार में नहीं लग रही। वेद के प्रति उत्साह के दर्शनों का अभाव सर्वत्र है। जलसे, सम्मेलनों के लिए जो उत्साह उभरता है क्या वह कभी 'वेद' के लिए उभरा है।

हम ने वेद का नाद गुंजाया। इस भीषण अपराध का दण्ड हमें आर्थिक संकट में गुजरने का भोगना पड़ रहा है। २० हजार परिवारों में वेद पहुंचाया, यह क्या हमने पाप किया ? स्वास्थ्य खोया, गालियां खायीं, घाटा खाया और सहयोग देने वाले कितने आगे आए ?

प्रश्न वेद का ही नहीं धर्म का है। वेद के साथ मानवता का भाग्य बन्धा है। धर्म, दर्शन, अध्यात्म सभी की भाग्य रेखा बन्धी है वेद के साथ ....वेद का भविष्य संसार का भविष्य है।

अज्ञान और अन्धविश्वासी मत वेद के साथ नहीं चल सकते। दयानन्द का प्रकाश मतवादों का अस्तित्व शून्य कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देगा। पर उस प्रकाश को लेकर चलने वाले व्यक्ति कहाँ से लाएं ?

आग और पानी साथ नहीं चल सकते। स्वार्थ और वेद एक साथ नहीं बढ़ सकते। वेद का प्रचार उस क्रांति का नाम है, जो एकांगी नहीं सर्वतोमुखी होगी।

श्रावणी पर यज्ञ करोगे—पर क्या यज्ञाग्नि मन मन्दिर में भी दहका सकोगे ? क्या दयानन्द के लिए मरने की चाह कभी आप के मानस में जाग सकेगी ? क्या वसुन्धरा के मस्तक पर वेद का तिलक लगाने का साहस संजो सकोगे ?

क्रान्ति बलिदान मांगती है। वेद आप के सर्वस्व की आहुति चाहते हैं। धर्म यज्ञ में प्राणों की समिधा का समर्पण ही नयी धरती को नया रूप देने में समर्थ हो सकेगा, यह मेरा विश्वास है।

आलोड़न हो मानस का, मंथन हो समाज का, निर्माण हो वसुधा का, यह शक्ति हमें चाहिए। हम वह सब मिटा देना चाहते हैं जो वेद के विरुद्ध है। उन सभी मतवादों का अस्तित्व हमें समाप्त करना है जो मनुष्य को भटकाने वाले हैं। इस धर्म युद्ध में विजय वरण का उत्साह आप के मन में जागे। आप वेद को जीवन का प्रतीक समझें और यह मानें कि वेद की रक्षा कर आप धरती के सौभाग्य को संवारने का पुण्य प्राप्त कर सकेंगे।

श्रावणी से जन्माष्टमी तक वेद के सम्बन्ध में विचार कीजिए—आइए कर्म-क्षेत्र में—यह हमारी प्रार्थना है।

आप मुझे दें मैं आप को दूंगा !

आप जो भी हमें देंगे, हम वह आप की इच्छित भावनाओं को अर्पित कर देंगे। आप जो सपने देखते रहे हैं, उन्हें पूरा करने के लिए हम आप से भिक्षा मांगते हैं।

धन लक्ष्य नहीं है, पर वह लक्ष्यपूर्ति का साधन अवश्य है। देश और संसार को बदलने का काम रुका पड़ा है। योजनाएं धीरे-धीरे बढ़ रही हैं, जब कि हम दौड़ना चाहते हैं।

१. कार्यकर्त्ता तैयार करने का विद्यालय,
२. वैदिक अनुसन्धान का महान् केन्द्र,
३. अराष्ट्रीय तत्वों की समाप्ति का प्रबल प्रयत्न।

क्या बिना धन के सम्भव होगा ? एक ओर आप काम चाहते हैं, दूसरी ओर सहयोग पूरा नहीं मिल रहा है, फिर आप ही बताइए क्या करें हम ?

साधन आप दीजिए,
काम हम से लीजिए।

काम हो रहा है, हम बढ़ रहे हैं, अर्थाभाव एकमात्र समस्या है। इस समस्या का हल कीजिए—वेद मन्दिर ज्योतिर्मय होकर धरती का अंधकार दूर कर देगा।

वेद मन्दिर आपका है।
आप वेद मन्दिर के स्वामी हैं।
हमारा काम सेवा करना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आइए, सम्भालिए, आगे बढ़िए और अपने पूरे बल से - उदारता से— धन भेजिए —

हम धरती को नया रूप देंगे, हमारी प्रार्थना है कि—

काम चाहिए तो दान चाहिए: इतना दीजिए कि काम बढ़ता जाए—क्या आप सुनेंगे— ?

हम

हंसकर सहते अपमान हैं हम,
बढ़कर करते सब काम हैं हम,
हम ने सीखा जिन्दा जलना,
जलकर जीते अविराम हैं हम।

हम नाम नहीं करते अपना,
हम काम नहीं करते अपना,
सब सौंप दिया जो कुछ भी था,
पूरा करना ऋषि का सपना।

सपनों में रंग भरेंगे हम,
प्रश्नों का उत्तर देना है,
आगे बढ़कर सब से पहले,
धरती का भाग्य बदलना है।

हम कहते हैं सब काम करो,
मिलजुल कर सब जन काम करो,
काम करो बस काम करो,
झगड़े-उलझन में काम करो।

जीवन दे सकता है काम तुम्हें,
नवयौवन देगा यह काम तुम्हें,
है काम सत्य यह धरती का,
सौभाग्य बनाए काम तुम्हें।

तुम कर्मवीर बन, धर्म सजा,
वर्तमान को बदलो रे।
तूफानों में, या झंझा में,
कायर की भाषा बदलो रे।

अब आओ, साथ हमारे तुम,
बलिपथ की कर तैयारी रे।
अब कफन सजाओ माथे पर,
जीने की कर तैयारी रे।
मरना जीना चलता रहता,
मरने की चिन्ता छोड़ो रे!
माता का दूध बुलाता है,
जीने की चिन्ता छोड़ो रे।

तथ्य: जीवन का

कितने पल जीना है,
कितना अब चलना है,
कौन जानता है यह—
फिर भी सब चले जा रहे हैं,
अपने में छले जा रहे हैं।
देह प्यार से पाली है,
इस को तो जलना है,
कैसी यह छलना है,
प्राणों को कल ना है,
रूठे सब साज हैं।
सत्य को उघाड़ दो,
जीवन तथ्य जान लो।
प्राणों को पहचानो प्रिय,
उन को ही रहना है,
मेरा यह कहना है।
भटको मत, अटको मत,
सपनों में-जागरण में,
शांति को बहने दो,
सपनों को सजने दो,
गीतों को गाने दो।
यही बस सत्य है
जीवन का तथ्य है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहिए केवल प्यार

मैं आप से केवल आप का प्यार मांगता हूं। इतनी बड़ी धरती पर मैं अधिक से अधिक व्यक्तियों का अपनापन पा सकूं, यह मेरी कामना है।

आप मुझे अपना समझें, अपने मन की गहराइयों में छोटा सा स्थान मुझे भी दे दें। अपना सुख-दुःख मेरे साथ बांट लें और मैं अनुभव कर सकूं कि जिस राह पर मैं चल रहा हूं, आवाज देने पर मेरे साथ कुछ और भी आ जाएंगे, तो यह मेरी पूंजी होगी।

मैंने प्यार बांटा है, वही मांगा भी है। और कुछ भी नहीं चाहिए। चाहता हूं कि आप यह समझें कि मेरे मन की हर तंरग केवल आप के बारे में ही सोचती है। अपने लिए तो मैंने कभी कुछ सोचा ही नहीं

मेरे सपने आप के बन जाएं। उनमें रंग भरने के लिए आप भी चलें, और यत्न करें नयी दुनियां बनाने का। गीत हम मिलकर ऐसे गाएं कि जो भी सुने साथी बन जाए।

आप सुखी हों दूसरों को सुखी बनाने के लिए मुझे अपना साथी बनाएं। मेरा जीवन सफल हो जाएगा। समझ लीजिए कि प्यार ही वह अस्त्र है जिस से धरती पर स्थायी साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है।

लड़ना छोड़ दो

किस लिए लड़ते हो, क्या मिलेगा लड़ने से, सोचा है कभी, मेरे भाई, यह विवादों की भट्टी तुम्हारे सुख-शान्ति और आनन्द को भस्म कर देगी।

कब तक लड़ोगे, किस से लड़ोगे, क्या सभी तुम्हारे अपने नहीं हैं? क्या सभी तुम्हारे बन्धु नहीं हैं। उन का दर्द क्या तुम्हारी पीड़ा नहीं है।

कोई रोता है तो क्या उसका रुदन सुनकर तुम शाँत रह सकते हो? किसी के क्रन्दन में क्या तुम गीत गा सकते हो — सोचो तो सही, सब अपने हैं तो फिर लड़ोगे किस से?

किसी को गिराने की मत सोचो। किसी को मिटाने की न सोचो, किसी को जलाने की न सोचो।

गिरते को उठाओ, डूबते को बचाओ, सब को प्यार से अपना बनाओ, सच मानों तुम्हें स्वर्ग मिल जाएगा?

लड़ो पाप से, अज्ञान से, अनाचार से, अभाव और अन्याय से। सब अपने हैं अतः अपनों से न लड़ो, फिर देखो तुम कैसे देवता बनते हो?

धर्म को बचाओ

आदि काल में प्रभु ने धर्म की गंगा वेदामृत के रूप में हमें प्रदान की थी। मनु-राम-कृष्ण-शिवा-प्रताप दयानन्द और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त ऋषि मुनियों ने धर्म की रक्षा की।

आज इसी शाश्वत धर्म पर आसुरी शक्तियों ने आक्रमण किया है। आर्य रक्त ठंडा पड़ गया प्रतीत हो रहा है। युवकों के हाथ में वीरता नहीं — चूड़ियां शोभायमान हैं।

क्या धर्म समाप्त हो जाएगा।
क्या सत्य मर जाएगा?
क्या ज्ञान मिट जाएगा?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रश्न पूछ रहा हूं पर कायरता के प्रवाह में उत्तर देगा कौन ? स्वार्थ के वातावरण में आगे कौन आयेगा ? मृत्यु से टकराने कौन चलेगा ?

शंख ध्वनि गूंज रही है। कृष्ण का स्वर फिर उदय हो रहा है। नयी दिशा में नए प्रभात के स्वागत के लिए हम प्रबल प्रयत्न कर रहे हैं ?

आप की निद्रा कब टूटेगी ? कब आप हमारी, धर्म की-सत्य की सेना सजा कर विजय पथ पर प्रस्थान करेंगे ?

क्या आप उत्तर दे सकेंगे ?

तुम क्या दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते ?

आज बहुत दु:खी मन से प्रत्येक दयानन्द की जय बोलने वाले से यह पूछना चाहता हूं कि क्या तुम दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते ?

दयानन्द जैसा महापुरुष और कोई नहीं हुआ, पर आज उसका लक्ष्य भक्तों के अभाव में सिसक रहा है। असत्य और अज्ञान पर चलने वालों के विचार पर लगा कर फैल रहे हैं और मेरे गुरु का संदेश घुट रहा है। यह देख कर अगर मैं रो सकता हूं तो क्या आप नहीं रो सकते ?

आप दयानन्द की जय बोलते हैं पर जय कैसे होगी ? क्या कभी सोचा है ? क्या कभी कुछ किया है आपने दयानन्द के लिए ? उत्तर क्यों नहीं देते !

अपने-अपने स्वार्थों में उलझे तुम, हां तुम, दयानन्द का नाम लेने वाले ही दयानन्द के विचार प्रसार की सबसे बड़ी बाधा बन गए हैं। दयानन्द के नाम पर जीवन देने वाला कहीं भी तो दिखायी नहीं पड़ रहा ? आखिर क्यों ?

किसे कहूं, क्या कहूं, क्या करूं, कुछ समझ नहीं आता, आर्यसमाज मंदिरों में शून्यता, अधिकारियों में निराशा,नेताओं में पदों का मोह—क्या हो गया है सब को।

कहाँ गया वह सपना धरती को आर्य बनाने का, कहां गया उत्साह अरब में हलचल मचाने का, कहाँ गया जोश मतवादों को चुनौती देने का।

पाखंड खंडिनी उठा कर चलने वाले हाथों ने चूड़ियां क्यों पहन लीं, क्राँति करने वाले मस्तिष्क भ्रान्ति में क्यों फंस गए—युग बदलने के अरमान कहां चले गए ?

मेरे प्रश्नों का उत्तर दो ! दयानन्द के अनुयायियों से मैं पूछना चाहता हूं कि तुम क्यों नहीं कुछ करते दयानन्द के लिए। या तो उसे अपना मानना छोड़ दो या फिर कुछ करो, आगे बढ़ो।

यह ठीक है कि समय का प्रवाह उलटा है लेकिन उतना नहीं जब अकेले दयानन्द ने युग को चुनौती दी थी। आज तो तुम्हारे पास भवन हैं, साधन हैं, मार्ग

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai
है, फिर तुम कुछ नहीं कर पा रहे यह तुम्हारी कायरता है या स्वार्थ—आलस्य है या प्रमाद। इस पर स्वयं चिन्तन करो।

देव दयानन्द के प्राणों की ज्योति आज भी हमें बुला रही है पर हमारे कान बहरे हो गए हैं, वे पुकार सुनकर भी अनसुनी कर रहे हैं। हम हारे सिपाही की तरह घर में घुसकर बैठ गए हैं और हमारा देश आसुरी अज्ञान की छाया से ग्रस्त होता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं दीख रहा जब कहीं—ईसालैंड होगा कहीं पाकिस्तान, कई टुकड़े छोटे-छोटे। सब कुछ होगा पर धर्म नहीं होगा। राम नहीं होंगे, कृष्ण नहीं होंगे। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत नहीं होंगे। तब क्या होगा ?

जब सब कुछ मिट जाएगा तब रोने से भी क्या होगा ? इसलिए आज और अभी उठो। चूड़ियाँ तोड़ कर, हथकड़ियों का स्वागत करो। जो भी कर सकते हो करो। पागल बनकर दयानन्द की बात फैलाने में लगो, उत्साह और उमंग से भर कर आर्यसमाज मंदिरों को शक्ति प्रसार का केन्द्र बनाओ।

ऐसी अग्नि जलाओ कि अज्ञान जल जाए। ऐसी आंधी बनो कि पाप उड़ जाएं, ऐसी शक्ति संग्रह करो कि तुम्हारे सामने कोई ठहर न सके।

लेखराम श्रद्धानन्द की राह पर चलने के लिए आर्यवीर मचलें। आर्यसमाज के अधिकारी लकीर पीटनी छोड़कर मन में उमंग और प्रचार योजनाएं बनायें। उपदेशक, विद्वान्, संन्यासी अपनी प्रखर वाणी से युग को चुनौती दें।

दयानन्द की जय के लिए जो कुछ कर सकते हो करो—करो या मरो·· अन्यथा इतिहास तुम्हें क्षमा नहीं करेगा।

फिर पूछता हूं क्या तुम दयानन्द के भक्त नहीं बन सकते। दयानन्द के लिए सब कुछ अर्पित कर दयानन्द का काम करो। अन्यथा मृत्यु निश्चित है :

वेद प्रचार सप्ताह

इस बार १८ अगस्त से वेद प्रचार सप्ताह जन्माष्टमी तक मनाया जाएगा। हमारी प्रार्थना है कि सारे आर्यसमाज इस सप्ताह को मनाने की अभी से तैयारी करें। इस सप्ताह में—

(१) अधिक से अधिक परिवारों में परमात्मा की अमरवाणी 'वेद' पहुंचाने का निश्चय कीजिए। कोई परिवार ऐसा न बचे जहां चारों वेद न हों।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) अधिक से अधिक वैदिक साहित्य अपने क्षेत्र में प्रसारित कीजिए

(३) वेद विषय पर विद्वानों के प्रभावशाली भाषण स्थान-स्थान पर कराइए।

(४) अधिक से अधिक आर्यसभासद बनाने का यत्न कीजिए।

(५) प्रतिदिन आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय का संकल्प सभी को दिलाइए। तैयारी अभी से कीजिए। समय थोड़ा है। पोस्टर लगवाइए, ट्रैक्ट बंटवाइए और यत्न कीजिए कि आप का सारा क्षेत्र वेदमय हो जाए।

घर पर "ओ३म्" पताका

श्रावणी के दिन प्रत्येक आर्य यज्ञोपवीत बदलें। अपने घर पर नयी ओ३म् पताका लहराएं और सपरिवार प्रतिदिन यज्ञ करने का निश्चय करें। यह निश्चय आगे बढ़ने के लिए हमें शक्ति और प्रेरणा देगी।

कार्यकर्ता तैयार करने का विद्यालय

हम वेद मन्दिर में एक ऐसा विद्यालय शीघ्र से शीघ्र खोलना चाहते हैं जिस में कम से कम १० प्रचारक पुरोहित – संचालक प्रतिवर्ष निकल सकें।

इन्हें १ वर्ष की ट्रेनिंग निःशुल्क दी जाएगी। एक वर्ष के बाद इन्हें जहां आवश्यकता होगी वहां काम करने हेतु भेजा जाएगा। इन के जीवन निर्वाह का समुचित प्रबन्ध भी करना होगा।

इस विद्यालय के लिए ५ कमरे निवास के, एक शिक्षा का, एक भोजनालय व एक आचार्य कुटीर शौचालय आदि की व्यवस्था होते ही कार्यारम्भ कर दिया जाएगा।

वेद मन्दिर का आर्यसमाज को आगे बढ़ाने के लिए यह प्रथम काम होगा। क्या आप स्थान का प्रबन्ध कर सकेंगे?

— **भारतेन्द्र नाथ**

वेद मन्दिर के नोट मंगाइए

दयानन्द संस्थान ने वेद मन्दिर निर्माण हेतु १) - २) - ५)—११)—२५)—५१)—१०१) के नोट छपवाएं हैं।

सभी से प्रार्थना है कि यह नोट मंगाकर धन संग्रह कर संस्थान को भेजें।

—प्रबन्धक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

— पं० वेदभूषण संयोजक अंतराष्ट्रीय वेद जयंती समारोह

अंतर्राष्ट्रीय वेद-भाष्य शताब्दी पर एक स्पष्टीकरण

अभी पिछले दिनों दो तीन पत्रिकाओं में मुझे वेद-भाष्य शताब्दी समारोह की आलोचना भरे लेख पढ़कर मुझे बहुत दुःख हुआ ! इन लेखों में तथ्य रहित भ्रम मूलक आलोचना है। कब तक छोटी-छोटी बातों को हृदय में बाँधे हम अपना भद्दा चित्र संसार के समक्ष रखते रहेंगे ?

आलोचना एकदम स्वस्थ एवं ऊंचे स्तर की हो तो उससे भी प्रेरणा मिलती है।

इस समारोह के मनाने में न तो लोकेषणा न किसी प्रकार के आर्थिक लाभ की भावना रही है। मेरे पास प्रशंसा भरे ढेरों पत्र पड़े हैं जिन्होंने इसमें भाग लिया था। ये सारी प्रशंसा आर्यजगत् की है। व्यक्ति का कोई महत्व नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि—मैंने इस समारोह को सफल बनाने में क्या योगदान किया है ?

हमें परस्पर निन्दा और रागद्वेष जनित निन्दा का परित्याग करना चाहिए। आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान पं० युधिष्ठिर जी ने विद्वानों के असम्मान की बात पर अगली पंक्तियों में आचार्य वीरेन्द्र जी के बारे में असम्मान जनक बातें लिख डालीं। कब तक विद्वान् आपस में लड़ते रहेंगे ? एक दूसरे पर कीचड़ उछालेंगे। मैं पं० युधिष्ठिर जी का और आचार्य वीरेन्द्र जी का, श्रद्धेय पं० उदयवीर जी शास्त्री सभी को सम्मान की दृष्टि से देखता हूं।

हाँ जो विद्वान् अर्थ लोभी हैं केवल उनकी इस प्रवृत्ति से घृणा अवश्य करता हूं पर व्यक्ति से घृणा नहीं करता।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने व्यवहार भानु में पण्डितों के लक्षण देते हुए प्रथम श्लोक में ही लिखा है **"यसर्थानाप कर्षन्ति सः वै पण्डित उच्यते"** अतः मेरी श्रद्धेय पं० जी से प्रार्थना है कि—वे अन्यथा न समझें।

और सभी आलोचकों से प्रार्थना है कि—वे आगे से अपने समारोहों के उज्वल पक्ष प्रस्तुत करें। किसी की बुराई दृष्टिगोचर हो तो उसे व्यक्तिगत रूप से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप जैन-ज्ञान पढ़ते हैं.......?

प्रति माह पढ़ते हैं। आपको तो मेरे मन की बात समझनी चाहिए। अगर मैं आप के घर पहुंच जाऊं, १-२ समय ठहरूं, तो क्या आप भोजन नहीं कराएंगे ?

मैंने आप से केवल १०० ईंटों का व्यय २५) मांगा है। क्या आप एक दिन व्रत रखकर अपनी आवश्यकताएं रोक कर भी २५) नहीं भेज सकते ?

दुनिया को बदलने की बात बातों से नहीं बनेगी कुछ करना होगा, हमारे कामों को देखिए और यदि आप को विश्वास हो—तो **इन पंक्तियों को पढ़ने के बाद पहला काम यह करिए कि १०० ईंटों का दान दीजिए। २५) का M. O. पहले कर आइए। २५) भी न हों तो चाहे १) ही भेजिए पर आज ही भेजिए।**

मैं आप का प्यार चाहता हूं। आशीर्वाद चाहता हूं।

प्रतीक्षा कर रहा हूं—क्या आप निराश करेंगे—

—भारतेन्द्र नाथ

पत्र लिखकर सत्प्रेरणाएं दें पर पत्रकारिता के उज्वल धर्म का पालन करें तथा पूरे आर्यजगत् में एक अच्छा वातावरण तैयार करें। पारस्परिक निन्दा, दलबन्दी आदि को अनुत्साहित करके आर्यसमाज के गौरव की रक्षा करें।

नेतागण अपने को सेवक समझें। अनुयायियों से निवेदन है कि वे भी सारा दोष नेताओं पर ही न मढ़ें। नेतागण लोकेष्णा एवं अपने व्यक्तिगत मान-सम्मान से बचें और पूरे समाज में एक आदर स्नेह-सद्भाव के वातावरण के निर्माण का प्रयत्न करें।

मैं उन सभी भाइयों का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने समारोह को सफल बनाने में अपना प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया एवं जो कोई कमी इस विराट् समारोह में रही हो उसके लिए क्षमा चाहता हूं। और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि -- मेरा आर्यसमाज स्नेह व सद्भाव फैलाते हुए आगे बढ़े। परस्पर विरोधों को समाप्त कर हम सब मिलकर काम करें। जिन पत्रों में किसी भी प्रकार की आलोचना छपी है मैं व्यक्तिगत रूप से अपने मन में कोई दुराव नहीं रखता सब के लिए शुभ कामना व सत्प्रेरणा की कामना करता हूं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—धर्मेन्द्र कुमार

उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा

वेद में विज्ञान का भाव बहुत है। अध्यात्म उपदेश के साथ-साथ वेद-मंत्रों में विज्ञान की बातों का भी वर्णन हुआ है। वायु के सम्बन्ध में वेद से क्या शिक्षाएं प्राप्त होती हैं और उससे मनुष्य को क्या-क्या लाभ हो सकता है, इस लेख में इसी विषय पर वार्ता है। वेद कहता है —

उत वात पितासी न उत भ्रातोत नः सखा।
स नो जीवा तवे कृधि ।। (ऋग्वेद १०।१८६।२)

हे वायु ! तू हमारा पिता, भ्राता, सखा और मित्र है। इसलिए हमारे दीर्घायु के लिए हमें जीवन प्रदान कर।

वायु के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है ? हमें वायु के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इस विषय का बोध कराने के लिए उक्त मंत्र में वायु को हमारा पिता, भ्राता और सखा कहा है। अपना पिता, भ्राता और सखा जो होता है उसे प्रसन्न रखने के लिए सब तत्पर रहते हैं। जब वायु प्रसन्न अर्थात् शुद्ध-पवित्र रहता है तो उससे हमारे प्राणों की रक्षा होती है। यह प्रथम ज्ञान इस मंत्र द्वारा हमें प्राप्त होता है।

वायु हमारा पिता है। वायु हमारा रक्षक है। जो रक्षक होता है, वही पिता होता है। प्राण के द्वारा वायु हमारी रक्षा करता है। वायु के न मिलने से हमारा एक क्षण भी जीवित रहना सम्भव नहीं। जिस प्रकार पिता के बिना पुत्र नहीं रह सकता, उसी प्रकार प्राण वायु के बिना हम नहीं रह सकते।

वायु हमारा भ्राता है। पोषण करने वाले को भ्राता कहते हैं। शरीर को पोषण (पुष्ट), स्वस्थ, बलयुक्त और शक्तिशाली बनाने का गुण वायु में है, इसलिए वायु को भ्राता अर्थात् पोषण करने वाला कहा है। शुद्ध वायु शरीर को स्वस्थ रखता है। शरीर के विकार को दूर करके स्वास्थ्य प्रदान करता है, इसलिए वायु को शरीर का सखा व मित्र भी कहा है।

इस विचार (दृष्टिकोण) को ध्यान में रखने से पता लगता है कि वायु मनुष्यों का जैसा पिता है, वैसा ही भ्राता और सखा भी है। इसके बिना हमारा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(प्राणियों) का जीना दुर्लभ है, असम्भव है। इस वैदिक आदर्श को सामने रखकर मनुष्य को स्वस्ति पथ का अनुगामी होना चाहिए।

वायु में अमृत—

> यददो वात ते गृहे ३ मृतस्य निर्धिहितः।
> ततो नो धेहि जीवसे ॥ (ऋग्वेद १०।१८६।३)

हे वायु ! तुम्हारे गृह में जो अमृत का भण्डार है, उससे हमारे हित के लिए हमारे आयु को दीर्घायु प्रदान करो।

वायु में अमृत है, जिससे मनुष्य दीर्घायु प्राप्त कर सकते हैं। सभी मनुष्य चाहते हैं कि वे दीर्घायु हों। कोई यह नहीं चाहता कि उसका आयु कम हो। आयु के बढ़ाने की इच्छा सब के मन में रहती है। इसलिए वे नित्य-प्रातः-सायं आयुदाता परमेश्वर से अपने दीर्घायु के लिए प्रार्थना करते हैं :—

> आयुषेत्वा वर्चसे च बलाय च। (अथर्व १६।२६।३)

मंत्र में कहा गया है कि वायु के पास जो अमृत है, उस से आयु बढ़ता है। इसलिए दीर्घायु चाहने वालों को चाहिए कि वे वायु अमृत का सेवन करें। क्योंकि जो वायु हमारे चारों ओर वह रहा है उसमें कई वस्तुएं हैं, जिनमें अमृत भी एक वस्तु है। प्राणवायु अर्थात् आक्सीजन यही वायु में अमृत है। शुद्ध वायु के अन्दर यह विद्यमान रहता है। दूषित वायु में अमृत नहीं होता। पर्वतीय स्थानों, नदी और सागर के तटों, वनों तथा बगीचों में वायु शुद्ध रहता है, उसको वह अमृत प्राप्त होता है। अमृतमय वायु से ही आयु बढ़ता है।

वायु के शोधन का उपाय—

> आत्मा देवानां भुवनस्य गर्भो यथा वशं चरति देव एषः।
> घोषा इदस्य शृण्विरे न रूपं तस्मै वाताय हविषा विधेम ॥
> (ऋग्वेद १०।१६८।४)

वायु इन्द्रियों का आत्मा जीवन (आत्मा) है। यही प्राणियों का आधार है। वह वायु देव अपनी इच्छानुसार फिरता रहता है। उसके चलने का शब्द हम सुनते हैं, परन्तु उसका रूप (आकृति-शक्ल) नहीं देख सकते। उस वायु (अमृतमय वायु) के प्राप्ति के लिए हम (सुगन्धित द्रव्यों द्वारा) यज्ञ में आहुति देते हैं।

इस मंत्र में अनेक बातों का उपदेश किया गया है। जिस प्रकार शरीर में जीवात्मा है, उसी प्रकार इन्द्रियों के लिए वायु है। वायु से ही इन्द्रियों में कार्य करने की क्षमता उत्पन्न होती है। इसलिए सब इन्द्रियों को स्वस्थ रखने के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुद्ध वायु का होना आवश्यक है। मंत्र में वायु को आत्मा से उपमा दी गई है। इस उपदेश के साथ जहां वायु को निराकार अर्थात् न रूप बताया है, वहां ईश्वर का भी कोई रूप व आकृति नहीं है। जैसे वायु के होने का इन्द्रिय (त्वचा) द्वारा ज्ञान होता है, वैसे ही ईश्वर के होने का आत्मा (हृदय) में ज्ञान (अनुभव) होता है। जैसे प्रतीक में वायु के दर्शन नहीं होते, वैसे ही प्रतीक में परमात्मा के दर्शन भी नहीं होते, क्योंकि प्रतीक परमात्मा नहीं है। मंत्र में गर्भो और देव पद से ईश्वर, आत्मा से जीवात्मा और वाताय पद से प्रकृति, इन तीनों अनादि सत्ता के पृथक्-पृथक् होने का ज्ञान और उपदेश भी हुआ है। यही इस मंत्र का सार है।

वायु के कार्य—

वायु से आयु बढ़ता है। शरीर स्वस्थ और बलिष्ठ होता है। इस विषय का वर्णन ऊपर हो चुका है। अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि वायु इन सब कार्यों को किस प्रकार कर सकता है? इसका उत्तर अगले मंत्र में दिया गया है। वेद कहता है—

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयो भुनो हृदे।
प्रण आयूंषि तारिषत् ॥ (ऋग्वेद १०।१८६।१)

वायु के द्वारा औषध बहता हुआ आता है, वायु सबका कल्याण कर्त्ता, सुख देने वाला, और हृदय का साधन करने वाला है। ऐसे वायु से हमारे प्राण (आयु) दीर्घ होवें।

इस मंत्र में वायु का हमारे स्वास्थ्य से क्या सम्बन्ध है, अच्छी तरह वर्णन है। मंत्र का प्रथम भाग यह है कि औषध वायु के द्वारा बहता हुआ आता है। वायु जिस समय बहता, उस समय अपने साथ अच्छी या बुरी गंध को लाता है। वायु के चलने के समय वह अपने पृथिवी के कणों को उड़ा ले जाता है। जिस समय दुर्गन्ध वाली वस्तुओं के ऊपर से वायु होकर चलता है, उस समय वायु दुर्गन्धमय हो जाता है। ऐसे ही जिस समय वायु वनों, वृक्षों, जंगलों, फूलों और औषध के ऊपर से होकर बहता है, उस समय वह बड़ा सुगन्धित और आनन्ददायक प्रतीत होता है। इस से सिद्ध होता है कि वायु अपने साथ कई पदार्थों को लाता है। जिस समय वह औषधियों के ऊपर से होकर बहता है या यज्ञ के होम पर से होकर बहता है, उस समय वायु बड़ा शुद्धियुक्त होता है। यही उपदेश इस मंत्र में है। जो वायु जंगलों, बनों, जड़ी-बुटियों आदि के ऊपर से बहता हुआ आता है, उसका सेवन करना चाहिए। प्रातः-सायं ऐसे स्थानों का भ्रमण करना चाहिए। मंत्र के दूसरे भाग में वायु को शम्भू अर्थात् कल्याण करने और सुखी करने वाला कहा है। यही कल्याण-मय वायु हमारे हृदय को आनन्द देने वाला है। मनुष्यों को चाहिए कि हमारे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषियों और आचार्यों ने वनों में जो गुरुकुल स्थापित किए हैं उनमें अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने के लिए भेजें, जिससे वनों और होम का शुद्ध वायु मिल सके। वे स्वस्थ और बलिष्ठ हो सकें।

दो प्रकार का वायु –

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यद्रपः ॥
(ऋ० १०।१३७।२)

इस मंत्र में दो प्रकार के वायु का वर्णन है। एक वायु समुन्द्र के ऊपर से होकर आता है और दूसरा पृथिवी के ऊपर से होकर चलता है। एक बल से ढके हुए वायु को लाता है और दूसरा रोगों के बीजों को अपने साथ बहा ले जाकर शोधन के लिए ले जाता है।

यह मंत्र बड़ा विचारणीय है। सभी मनुष्य जानते हैं कि वायु के बहाव के भाग किए जाएं तो उसके दो भाग हो सकते हैं। सागर के ऊपर से आने वाला शुद्ध वायु और पृथिवी के ऊपर से बहकर जाने वाला रोगयुक्त वायु। परमात्मा ने ऐसा प्रबन्ध कर रखा है कि इन दोनों वायु द्वारा हमारे नगरों, ग्रामों का वायु शुद्ध होता रहता है। समुद्र के तटों पर आबादी न होने के कारण से वहां का वायु प्राकृतिक रूप में शुद्ध होता है, जो शक्ति देने वाला होता हैं। समुद्र का भाग पृथिवी के भाग से दो गुना अधिक है। समुद्र का वायु दिन में कई घंटे पृथिवी पर चलता है और अशुद्ध (दूषित) वायु दूर करता रहता है। जिस समय वायु का बहाव बदल जाता है उस समय पृथिवी का दुर्गन्धयुक्त वायु समुद्र की ओर चला जाता है। और वहाँ जाकर शुद्ध हो जाता है। इस प्रशार दो प्रकार का वायु पृथिवी पर कार्य कर रहा है। एक शक्ति का देने वाला और दूसरा रोगों को दूर करने वाला। यदि शरीर की ओर भी देखा जाय तो यही कार्य वहां भी चल रहा है। नासिका के द्वारा प्राण अन्दर जाता है और तहाँ रक्त शुद्ध और स्वस्थ हो जाता है तथा वहां का दूषित वायु अपान के द्वारा बाहर आ जाता है। इस क्रम से हमारा आयु बढ़ता है। यही बात पृथिवी के ऊपर भी होती है। जो वायु समुद्र से पृथिवी पर आता है वह प्राण है और जो पृथिवी से समुद्र की ओर जाता है वह अपान है। यह एक वैदिक सिद्धान्त है जिसकी ओर ध्यान देना चाहिए।

देवों का दूत वायु—

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद्रपः।
त्वं हि विश्व भेषजो देवानां दूत ईयसे ॥
(ऋग्वेद १०।१३७।३)

हे वायु! औषधियों के परमाणुओं (कणों) को हमारे पास ले आओ और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे रोगों को हम से दूर फैंक दो। हे वायु तुम ही सम्पूर्ण विश्व का औषध रूप हो, तुम्हीं देवों का दूत बनकर घूम रहे हो।

वायु के दो कार्यों में शक्ति का बढ़ाना और रोगों का दूर करना है, जिनका वर्णन उक्त मंत्रों में हो चुका है। यहां दो कार्य औषध के भी हैं। एक से जीवन को देना और दूसरे से रोगमुक्त कराना है। किन्तु यह कार्य शुद्ध और पवित्र वायु के सेवन से ही हो सकता है। जो मनुष्य नियमपूर्वक शुद्ध वायु में रहते हैं और दूषित वायु से अलग रहते हैं, उनको औषधियों की कम आवश्यकता पड़ती है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वायु में सब औषधियों के प्रमाणु सम्मिलित रहते हैं, इसीलिए वायु को विश्व भेषज अर्थात् औषधियों का भण्डार (औषधालय) कहा है।

इस मंत्र में वायु को देवों का दूत भी कहा है। देव अर्थात् विद्वान मनुष्य जो होते हैं, उनका कार्य अपने सेवक की सहायता करना है। इस प्रकार जो विद्वान वायु विज्ञान को जानते हैं और उसके अनुसार व्यवहार करते हैं उनका सेवक बनकर वायु उनकी सहायता करता है।

अन्तिम बात यही है कि, क्योंकि वायु का मनुष्य (प्राणीमात्र) के जीवन से सदा का सम्बन्ध है इसलिए इस अमृत रूप वायु का सेवन करते हुए अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट, सुन्दर, स्वस्थ प्रसन्न रखकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि करके इही लोक और परलोक में सुखी बनें। वायु अमृत (आक्सीजन) है। एक बार तो यह मृतप्राय व्यक्ति में भी प्राण फूंक देता है। इसी से वेद ने कहा है—

यददो वात ते गृहे३मृतस्य निर्धिहितः।
ततो न देहि जीवसे॥

श्रावणी : रक्षा बन्धन पर

वेद प्रचार : वेद मन्दिर व महर्षि दयानन्द के सपनों को पूर्ण करने के लिए

अधिक से अधिक धन भेजने की तैयारी कीजिए।

प्रवन्धक :

दयानन्द-संस्थान

वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यस्त मनुष्य अधिक जीता है

शतं जीव शरदो वर्धमान

अर्थात् सौ वर्षों तक उन्नतिशील जीवन जिओ। जीवन-शक्ति को ऐसे संयम से खर्च करो कि सौ वर्षों तक पूर्ण कर्म-शील रह सको।

वर्च आ धेहि मे तन्वां सह ओजो वयो बलम्।

अर्थात् अपने शरीर को भगवान् का दिव्य मन्दिर समझकर उसकी पूरी देख-भाल रखो। शरीर में तेज, साहस, ओज, आयु और बल की वृद्धि करो।

अश्मानं तन्वं कृधि।

अर्थात् शरीर को पत्थर जैसे सुदृढ़ बनाओ। श्रम और शारीरिक कष्ट से शरीर मजबूत बनता है।

मेरे पड़ोस में एक सरकारी कर्मचारी पचपन वर्ष की पकी आयु में सरकारी नौकरी से रिटायर हुए। वे यह कहा करते थे कि 'सरकारी दफ्तर से मुक्त होने पर कोई काम-काज न रहेगा, तो बड़े आनन्द से रहेंगे, बस, स्वास्थ्य-ही-स्वास्थ्य बनायेंगे। शेष जिन्दगी मजेदारी से गुजरेगी तथा कठोर कार्य और नियन्त्रण से फुरसत रहेगी।

एक दिन उन्हें पेन्शन मिली। काम से छुट्टी मिल गयी। अब वे सारे समय के खुद मालिक थे। फुरसत-ही फुरसत थी।

उन्हें फुरसत तो मिली, पर मन भारी रहने लगा। और स्वास्थ्य को तो मानो जंग ही लग गया। दो-चार दिन तो इधर-उधर दुकानों, मिलने वाले मित्रों के घर और मुहल्ले में बैठकर दिन काटे पर फिर उनका मन न लगा। एक दिन, चार दिन, एक मास,दो मास! आखिर कहां तक बैठे रहें? जिन्दगी बड़ी लंबी, पता नहीं इसकी जड़ कहाँ तक चले? निठल्ले जीवन से बैठे-बैठे ऊब गये! यह बीमारी बढ़ती गयी और उन्होंने खाट ही पकड़ ली! डाक्टरी इलाज चलने लगा। जो व्यक्ति कुछ मास पूर्व मजे में आठ घंटे श्रम करता था, आज वही खटिया पर पड़ा डाक्टर को नब्ज दिखा रहा था और मौत की घड़ियाँ गिन रहा था!

खाट पर पड़े-पड़े परमात्मा की कुछ ऐसी प्रेरणा हुई कि 'बेकाम का निठल्ला जीवन तो मानो जंग लग-लगकर अकाल-मृत्यु को प्राप्त करना है। एक प्रकार की आत्महत्या है। जब तक शरीर चले, तब तक कुछ न कुछ करना चाहिए।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बस, वे अपने पुराने दफ्तर गये। संयोग से उन्हें उसी दफ्तर में दैनिक मजदूरी पर फिर मामूली सा काम मिल गया। उन्होंने उसी को ले लिया।

महान् आश्चर्य ! भगवान की लीला ! दो-चार दिन तो दफ्तर कठिनाई से गये, पर तीन-चार दिन बाद शरीर की मशीन फिर चल निकली। कार्य करने से जंग लगे पुर्जे फिर पूर्ववत् काम करने लगे। काम में लगे रहने से अब उन्हें इतनी फुरसत ही न थी कि वे बुढ़ापे, कमजोरी या बीमारी की निरर्थक कायरतापूर्ण कल्पनाओं में लगे रहें।

आज वे उसी प्रकार दफ्तर जाते हैं। जवानों की तरह काम करते हैं। पैसा बहुत कम मिलता है, पर उसकी परवाह नहीं करते। प्रतिदिन शिकंजे में कसे हुए जिन्दगी आगे चल रही है। सुबह दस बजे से शाम पांच बजे तक काम में दिन बीत जाता है। उसकी धर्मपत्नी मर चुकी है। घर पर कोई काम नहीं है। पर फिर भी काम में व्यस्त रहते हैं। अपने जीवन का निचोड़ वे इन शब्दों में व्यक्त करते हैं—

'मैं दवा दारू से भी काम को आदमी की सबसे बड़ी दवाई मानता हूं। जो लाभ कीमती दवाईयां नहीं करतीं, वह कर्ममय जीवन से सहज ही हो जाता है। कर्म से जीवन और स्वास्थ्य बढ़ते हैं। कुछ न कुछ शारीरिक और मानसिक काम करते रहने से आदमी अधिक जी सकता है। प्रकृति के दीर्घजीवी जानवर कर्ममय हैं, अगर स्वास्थ्य और दीर्घ जीवी बनना है, तो जिन्दगी के आखिरी दम तक कर्म में लगे रहिये।'

८० वर्षीया छात्रा

पेरिस का एक समाचार है कि बर्फ जैसे सफेद बालों वाली एक परदादी ६० वर्ष पूर्व विवाह में पति से मतभेद होने के कारण छोड़ी गयी थी। उसने अपने लिए काम ढूंढा, तो उसे अनुभव हुआ कि पढ़ने-लिखने के कार्य में वह सबसे अधिक आनन्द ले सकती थी। उसने व्यस्त रहने के लिये पुनः पेरिस के सारबोन विश्वविद्यालय में पढ़ना शुरू कर दिया। ८० वर्षीय यह उत्साही महिला १६०५ में भी सारबोन विश्वविद्यालय की विशिष्ट छात्रा थीं, क्योंकि उस जमाने में वह विज्ञान का अध्ययन कर रही थीं। इस महिला के तीन पुत्र, सात पोतियाँ तथा एक प्रपौत्री हैं। मानसिक रूप में स्वस्थ्य और दीर्घजीवी बनने के लिए वह काम को जरूरी मानती हैं। अब उसने अंग्रेजी एवं जर्मन अध्ययन करने के लिए विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया है।

वह कहा करती हैं, मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से इस नतीजे पर पहुंची हूं कि आदमी की मशीन को लगातार चलाते रहने से बहुत दिनों तक चलती रहती है। मनुष्य जितना अधिक किसी उपयोगी काम में लगा रहता है उतना ही उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहां हमें महात्मा गांधी जी की वह उक्ति याद आती है, जिसमें उन्होंने कहा है कि 'सच्चा विद्यार्थी वही है, जिसको विद्योपार्जन की सच्ची भूख लगी हो, जो विद्या प्राप्ति की कठिनाइयों को देखकर आनन्दित होता हो और जो विद्या को ही साध्य और केन्द्र बनाकर अन्य सब बातों को भूल जाता हो। यदि कोई यह समझ कर विद्या पढ़े कि वह उसे अर्थ-प्राप्ति का उद्देश्य सिद्ध करेगी, तो जीवन में लक्ष्य प्राप्त करने का न उच्चदर्शन मिलेगा और न तब उसका श्रम ही सार्थक होगा।'

एक सौ पंद्रह वर्ष का डाक का कर्मचारी

धनबाद में एक सौ पंद्रह वर्ष की दीर्घ आयु भोगकर अभी हाल ही में एक डाक विभाग का कर्मचारी इस असार-संसार से विदा हुआ है। लोग उसकी बड़ी प्रशंसा करते हुए सुने गये हैं।

परिचित व्यक्तियों का कहना है कि उक्त कर्मचारी पोस्ट मैन का काम पैदल करता था। जीवन भर खूब घूमता फिरता रहा। निठल्ले और आलसी जीवन से उसे अत्यन्त घृणा थी। उसने साइकिल भी लेना पंसद नहीं किया था। अपनी इतनी लंबी आयु में भी स्वभाव से बड़ा शान्त था। उसको कभी कोई नशा करते नहीं देखा गया और न कभी क्रोध !

अपने सेवाकाल के बाद भी उसने पूरे साठ साल तक विश्राम भत्ता पाया था। नाती-पोतों से भरा पूरा परिवार छोड़कर जाने वाले इस कर्मचारी का स्वास्थ्य टहलने, घूमने-फिरने और किसी-न-किसी काम में अपने को व्यस्त रखने के कारण पूर्णतया सुरक्षित था। जब कभी उससे किसी ने उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा, तो उसने एक ही बात कही, 'मैं कभी निठल्ला नहीं रहता, कुछ न कुछ करता रहता हूं मेरा विश्वास है कि काम करने से ही आदमी स्वस्थ्य और दीर्घजीवी बन सकता है।'

१५६ वर्ष की आयु में भी घुड़सवारी

मास्को सोवियत संघ के अजरबेजान गणराज्य के सबसे बूढ़े शिराली मिसलिमोव ने बाकू में अपना १५६ वां जन्म-दिवस मनाया। बाकू में उनके सम्मान में एक समारोह आयोजित किया गया। मिसलिमोव ने घर से बाकू तक ६ मील की दूरी कार से तय करने से इन्कार कर दिया। वे कुछ दूर पैदल और फिर घोड़े पर सवार होकर समारोह स्थल तक गये। 'तास' के अनुसार इतने वृद्ध होने पर भी मिसलिमोव बहुत चुस्त हैं। वे पैदल चलने और भेड़ पालने में व्यस्त रहते हैं। खाली नहीं बैठते। काम में रुचि है। वे कभी शराब नहीं पीते, न सिगरेट ही, पर वे अधिकतर सब्जियां और फल आदि खाते हैं। उनकी पत्नी की आयु ८५ वर्ष है और उनका सबसे बड़ा पोता ६५ साल का है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—डा० सुरेन्द्र प्रसाद गर्ग

कैंसर का कारण और इलाज

अप्राकृतिक आहार स्वाभाविक जीवन के परित्याग एवं नशीली वस्तुओं, विषैली दवाओं, इंजेक्शनों एवं रासायनिक पदार्थों के सेवन के साथ-साथ नित्य नूतन घातक रोगों की वृद्धि दिन-दूनी रात-चौगुनी होती जा रही है। इन्हीं रोगों में कैंसर भी एक घातक रोग माना जाता है।

यह कैंसर आमाशय, आंत, गर्भाशय, स्तन, फेफड़ा, मुंह, चर्म, जीभ, ग्रंथि आदि शरीर के किसी भी अंग में हो सकता है। प्रायः इसे रसूली या गाँठ कहा जाता है। ये रसौलियां हानिरहित तथा घातक दो प्रकार से होती हैं। रोग के होने पर चंद लक्षण, जैसे आक्रान्त भाग में पीड़ा, भूख की कमी, चक्कर आना हाथ-पैरों का लड़खड़ाना, बार-बार प्यास लगना, चटपटे एवं चीनी के बने पदार्थों के लिए रसना का लपलपाना रक्त की कमी आदि प्रकट होते हैं। अनेक विदेशी डाक्टरों ने कैंसर पर बड़े-बड़े ग्रन्थ लिख डाले हैं और रोगों के कारणों एवं चिकित्सा पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। परन्तु प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से कैंसर रोग के वही कारण हैं जो अन्य रोगों के। जिस अनुपात में हमारा जीवन अप्राकृतिक तथा विषों से ओत-प्रोत हो जाता है, उसी अनुपात में इस रोग की व्यापकता एवं उग्रता बढ़ रही है। कैंसर रोग के निम्नलिखित कारण हैं —

कारण

यह रोग प्रायः रक्त की अशुद्धि बढ़ जाने के कारण उत्पन्न होता है। जब शरीर में विष बढ़ जाता है तो वह शरीर के किसी भी भाग में एक प्रकार की सड़न या गलन पैदा करके पीड़ा उत्पन्न करती है। पीड़ा प्रकृति का संकेत है कि विष को कम करो। परन्तु जब इस संकेत की परवाह नहीं की जाती, आहार-सुधार द्वारा रक्त को शुद्ध नहीं किया जाता तो विष-वृद्धि राह पाकर तमाम शरीर में व्याप्त होकर मृत्यु का कारण बनती है। चीनी, नमक, मैदा की बनी वस्तुएं, मिठाइयां, घी या तेल में पके खाद्य पदार्थ, चाय, काफी तथा अन्य कृत्रिम पेय रक्त को अशुद्ध तथा विषैला बनाते हैं। कुछ डाक्टरों ने चाय तथा काफी को कैंसर उत्पत्ति का मुख्य स्रोत माना है। दानेदार चीनी तथा नमक आहार सम्बन्धी सर्व घातक शत्रु हैं, पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आदत एव गलत धारणा के वशीभूत होकर इनका सेवन खुलकर किया जाता है।

आधुनिक औषधियों का अभिशाप

कैंसर का दूसरा मुख्य कारण वर्तमान प्रचलित अंग्रेजी तथा देशी दवाएं और विषैले इंजेक्शन हैं। इन दवाओं के प्रयोग से किसी भी रोग के लक्षय अल्प समय के लिए दब जाते हैं परन्तु शरीर की भीतरी सफाई नहीं होती। अमेरिका के एक सुप्रसिद्ध एलोपैथिक डाक्टर हैंनरी लिंदरलाहर ने अपने अनुपम ग्रन्थ 'नेत्रनिदान' में आजकल ली जाने वाली प्रत्येक दवा जैसे आयोडीन, कुनैन, ब्रोमाइड तथा अफीम आदि के तत्त्वों का विश्लेषण करते हुये उन्हें शरीर के लिए घातक सिद्ध किया है। मतलब यह है कि विषैली औषधियों से भी शरीर में विष जमा होकर कैंसर जैसे रोग को प्रोत्साहन देता है।

अप्राकृतिक जीवन-यापन अर्थात् अशुद्ध गंदा धुंआं, धूल मिश्रित वायुमण्डल में रहना, शरीर पर धूप न लगने देना, अधिक इन्द्रिय सम्भोग में डूबना, शक्ति से अधिक परिश्रम करना और चिन्तित रहना आदि भी रक्त को दूषित करके कैंसर की उत्पत्ति में सहायक होते हैं।

चिकित्सा

प्राकृतिक पद्धति के अनुसार कैंसर का रोग असाध्य एवं घातक नहीं है। जिससे रोग उत्पन्न होता है, उस कारण को दूर कर देने मात्र से रोग के पैर उखड़ने लगते हैं। दूसरे शब्दों में इस रोग के रोगी को शुद्ध सात्विक एवं प्राकृतिक आहार द्वारा रक्त को शुद्ध बनाना चाहिए। रक्त को शुद्ध करने की दृष्टि से कच्चे शाक-पात ऋतु के फल तथा उनके रस का सेवन करना चाहिए। दैनिक भोजन में इनकी प्रधानता रहनी चाहिए। नमक एव दानेदार चीनी शनैः-शनै (धीरे-धीरे) हानि पहुंचाने वाले विष हैं। उनसे बचना आवश्यक है। नमक खाने की आदत धीरे-धीरे तोड़ी जा सकती है। रोग की हालत में एक-एक, दो-दो दिन के उपवास तथा रसाहार से भी सहायता मिलती है और रोग जल्दी चला जाता है।

प्राकृतिक चिकित्सा विज्ञान अन्य रोगों की भांति कैंसर को भी पैतृक, छूत तथा जीवाणुओं से होने वाला नहीं मानता। माता-पिता को जो रोग हो वही रोग सन्तान में भी आवे यह आवश्यक नहीं। रोग वहीं जन्म लेता है जहां बिजातीय द्रव्य एकत्रित हैं और प्राकृतिक जीवाणुओं का विजातीय द्रव्य को खा-पीकर चटकर डालने के लिए उत्पन्न करती हैं। वे रोग के कारण नहीं परिणाम होते हैं और उन्हें रोग का कारण मानकर मारने का प्रयास करना भयंकर भूल है।

आज हमारे देश में प्रत्येक क्षेत्र में विकास एवं सुधार की बात की जा रही

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। पर दुर्भाग्य का विषय यह है कि चिकित्सा प्रणाली में आसुरी, व्यय एवं देश के लिए अकल्याणकारी पद्धति का ही आश्रय लिया जा रहा है। पर अब समय है कि हम इस सम्बन्ध में महात्मा गाँधी, मोरार जी देसाई स्वास्थ्यवादियों के विचार-धाराओं के अनुसार व्यवहार करें। जिससे हमारा जीवन स्वतंत्र, सुखी, स्वस्थ्य एव समृद्ध बन सके।

कैंसर की मिश्रित चिकित्सा प्रणाली

फेफड़े के एक विशेष प्रकार के कठिन कैंसर का निदान मिश्रित चिकित्सा-प्रणाली द्वारा सम्भव बन पड़ा है—कम से कम २० प्रतिशत रोगी तो इससे ठीक किये ही जा सकते हैं।

अमेरिका में फेफड़ के कैंसर से पीड़ित होने वालों में कम से कम १५ प्रतिशत 'ओट सेल कर्सीनोमा' से पीड़ित होते हैं। इसका प्रमुख कारण धूम्रपान है। धूम्रपान के कारण यह रोग शीघ्रता से फैलता है और जब इसकी पहचान होती है, तब इसकी शल्यक्रिया असम्भव हो जाती है। अब तक, इस प्रकार के कैंसर रोग का एकमात्र निदान विकिरण चिकित्सा ही है जो केवल १० प्रतिशत रोगियों को मात्र एक वर्ष तक ही जीवित रखने में समर्थ है। परन्तु, उस अवस्था में जब कैंसर पूरी तरह फैल चुका होता है, रोगी सात सप्ताह में ही मौत का ग्रास बन जाता है।

अब से तीन वर्ष पूर्व, इस प्रकार के रोगियों की चिकित्सा चार सशक्त औषधियों के एक मिश्रण द्वारा कर पाना सम्भव हुआ। इससे रोगियों के जीवनकाल में कुछ वृद्धि तो की जा सकी, परन्तु अधिकांश मामलों में यह कैंसर मस्तिष्क तक फैल जाता और तब रसायनिक औषधियां काम करना बन्द कर देती हैं। तब, इस दोष को विकिरण-चिकित्सा द्वारा दूर किया जाता है जिससे औषधियों का प्रयोग जारी रह सके।

इण्डियाना विश्वविद्यालय के चिकित्सा केन्द्र में डा० लौरेन्स एनहोर्न ने रोगियों की इस प्रकार की चिकित्सा में औषधि मिश्रण, विकिरण और एक विशेष दवा बी०-सी०-जी०—का सम्मिलित प्रयोग शुरू किया। इसके प्रयोग से शरीर की प्रतिरोधी क्षमता को उद्वेलित करने में सहायता मिलती है। डा० एनहोर्न ने इस प्रणाली का प्रयोग ५८ रोगियों पर किया और सभी रोगी एक वर्ष से अधिक समय तक जीवित रहे। इनमें से लगभग २० प्रतिशत तो पूर्ण निरोग हुए। शेष रोगियों में भी महत्त्वपूर्ण सुधार आया और इनमें से कई लोग अपने काम पर वापस लौट सके। डा० एनहोर्न को आशा है कि इनमें से कुछ रोगी अवश्य कैंसर से छुटकारा पा सकेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रक्तचाप की बीमारी

वैज्ञानिक विधियों तथा व्यापक देशी प्रणालियों का उपयोग करके भारत एक ऐसी समस्या को सुलझाने के लिए प्रयत्नशील है, जो संसार भर में व्याप्त है और यह है—अति तनाव या रक्तचाप।

छूत के रोग तथा कुपोषण अभी भी बड़ी स्वास्थ्य समस्याएं हैं, फिर भी हृदयवाहिका सम्बन्धी रोग खराब स्वास्थ्य के बहुत बड़े कारण बन गये हैं। रुमेटी हृद्रोग ग्रामीण एवं शहरी जनता के हृद्रोग का सबसे साधारण स्वरूप है, करोनरी हृद्रोग, विशेषत: शहरी लोगों में, दूसरे नम्बर पर तथा उच्च रक्तचाप तीसरे नम्बर पर है।

सारे देश में उच्च रक्तचाप के रोगियों की संख्या मालूम करना कठिन है। कुछ अध्ययनों से मालूम हुआ है कि ग्रामों में ३ से १५ प्रतिशत तथा शहरी व औद्योगिक क्षेत्रों में ४ से १५ प्रतिशत है। आल इण्डिया इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्स के हाल के आँकड़े से संकेत मिलता है राजधानी नई दिल्ली में चालीस हजार रजिस्टर्ड मरीजों में से १५ प्रतिशत उच्च रक्तचाप से पीड़ित हैं।

बम्बई में एक सर्वे किया गया जिसमें पाया गया कि २० साल से ऊपर के छह हजार व्यक्तियों में से दस प्रतिशत उच्च रक्तचाप से पीड़ित थे। इसमें सभी वर्ग के व्यक्ति आ गये। इनमें अनेक मामलों की पहचान नहीं हो सकी। इसलिए समस्या ज्यादा गम्भीर प्रतीत होती है।

भारत में उच्च रक्तचाप की रोकथाम की परिस्थितियां वही हैं, जैसी और स्थान पर। अधिक आय वाले मरीजों में से ८० प्रतिशत अनिवार्य उच्च रक्तचाप से पीड़ित थे। माध्यमिक उच्च रक्तचाप के मरीजों की संख्या मालूम होना कठिन है, क्योंकि मरीजों की पहचान मुश्किल है तथा प्रयोगशालाओं में जांच-पड़ताल भी नहीं हो सकती। लेकिन शहरी अस्पतालों में जहां सुविधाएं हैं, आंकड़े यह बताते हैं कि युवा मरीजों में उच्च रक्तचाप गुर्दा रोगों के कारण होता है।

उच्च रक्तचाप का एक असामान्य रूप आम तौर से युवा वर्ग, मुख्यत: युवतियों, को प्रभावित करता है, यद्यपि बड़े मरीज भी देखे गये हैं। इस रोग के लगभग सौ मामले देखे गये हैं तथा उनकी जांच भी हुई है। इसमें गुर्दे से जुड़ी धमनियों पर असर पड़ता है और इसके कारण महाधमनी का अन्दरूनी भाग संकुचित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो जाता है। इसका कारण ज्ञात नहीं है, लेकिन भारतीय वैज्ञानिकों का विचार है कि इसका कारण हल्का तपेदिक हो सकता है।

उत्तर भारत के पंजाब व हरियाणा क्षेत्रों तथा दक्षिण के कुछ भागों में मूत्र नली में गुर्दा रसोली का रोग पाया गया है। इसके कारण मूत्र का बहाव रुक जाता है और माध्यमिक उच्च रक्तचाप हो जाता है।

सारे भारत में माध्यमिक उच्च रक्तचाप की शल्य-चिकित्सा की जाती है लेकिन इनकी संख्या उच्च रक्तचाप से पीड़ित कुछ लोगों में से बहुत कम है। अन्य स्थानों की तरह, प्राथमिक उच्च रक्तचाप, जिसका कारण अज्ञात है, प्रमुख खतरा है।

उच्च रक्तचाप वाले मरीजों की पहचान डाक्टरी पड़ताल के समय की जा सकती है या लकवा मारने या दिल का दौरा जैसे रोगों के समय प्रथम बार देखे जा सकते हैं। दिल की धड़कन बन्द होना तथा पक्षाघात उच्च रक्तचापीय हृद्रोग की सबसे सामान्य जटिलता है।

भारत में काफी मात्रा में मरीजों का इलाज देशी चिकित्सा प्रणालियों, आयुर्वेद व यूनानी, से किया जाता है। लेकिन चूर्ण आदि की सही-सही निर्माण विधि ज्ञात नहीं है। एक औषधि को विश्वव्यापी मान्यता मिली है और वह है—सर्पगंधा। इसकी जड़ों से सरपीन प्राप्त की जाती है। अन्य परम्परागत औषधियों के तत्वों का अध्ययन उपयोगी हो सकता है। इसके अलावा योगासन भी इसके उपचार में उपयोगी सिद्ध हुए हैं।

वर्षों तक अति तनाव या रक्तचाप के बारे में वैज्ञानिकों में विवाद चलता रहा। कुछ का मत था कि उच्च रक्तचाप अपने आप में एक रोग है। रक्तचाप वाले लोग अन्य लोगों से भिन्न होते थे। क्या इसके लिए कोई जीन उत्तरदायी हो सकता था, लेकिन कुछ भी हो, रक्तचाप वाला रोगी अपने आप में एक पृथक् वर्ग समझा जाता था। कुछ लोगों को रक्तचाप होता था और कुछ को बहुत कम।

लेकिन विचारों का यह संघर्ष कोई शैक्षिक प्रश्न नहीं था। देखना यह था कि रक्तचाप रोगियों को किस प्रकार छांटकर उनका इलाज किया जाये।

ऐसी कोई विभाजन रेखा नहीं है, जो "सामान्य" को "रक्तचाप" से अलग करती है। लेकिन इस बात पर यह आम सहमति है कि डाक्टरी तौर पर उच्च रक्तचाप का अर्थ है बिना किसी स्पष्ट कारण के औसत से अधिक रक्तचाप।

यह भी स्पष्ट दिखाई देता है कि उच्च रक्तचाप कई कारणों से होता है, इसलिए ठीक होने योग्य किसी कारण की खोज निरर्थक सिद्ध होगी। जिन लोगों का रक्तचाप ज्यादा होता है, वे अकारण ही अति तनाव से पीड़ित होते हैं। इसलिए उनका इलाज कुछ औषधियों से धमनीय दबाव नीचे लाकर करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हर व्यक्ति का रक्तचाप हर समय घटता बढ़ता रहता है जिससे शरीर में ही परिवर्तनों की जरूरतें पूरी होती हैं। जब वह पढ़ने बैठता है तो हृदय की धड़कन धीमी तथा नियमित होती है। जब वह भागता-दौड़ता या शारीरिक श्रम करता है तो धड़कन की रफ्तार बढ़ जाती है। वास्तव में रक्तचाप हमारी हर धड़कन के साथ बदलता है। जब हृदय खून को बाहर पम्प करता है तब इसे ले जाने वाली धमनियों में दबाव बढ़ जाता है, यह दबाव हृदय के थमने के साथ-साथ घट जाता है। संकुचन की अधिकतम सीमा पर अधिकतम दबाव को प्रकुंचन दाब कहते हैं, और संकुचन के बीच जब हृदय थमता है, तो उसे अनुशिथिलन दाब या न्यूनतम दाब कहते हैं। इसी को रक्तचाप लेते समय मापते हैं।

रक्तचाप के कारण सबसे सामान्य रोग लकवा तथा दिल का दौरा है। कुछ मामलों में स्वयं हृदय या गुर्दा नष्ट हो सकता है। कभी-कभी हल्का रक्तचाप कुछ ऐसी जटिलताएं पैदा कर देता है जिससे मृत्यु हो भी सकती है यदि किसी युवा व्यक्ति में उक्च रक्तचाप होता है।

रक्तचाप के कुछ विशिष्ट कारणों की पहचान हुई है। मसलन, गर्भ-निरोध गोलियों (पिल) से कुछ महिलाओं का रक्तचाप बहुत बढ़ जाता है और कुछ का थोड़ा सा। पिल निश्चित रूप से रक्तचाप को बिगाड़ती है और ऐसी औरत का रक्तचाप का इलाज किया जाना व्यर्थ है, जो पिल खाती हो। कभी-कभी पिल बन्द करने से रक्तचाप उचित स्तर पर आ जाता है।

यद्यपि उच्च रक्तचाप से बीमारी पकड़ने का खतरा रहता है, इसका यह अर्थ लगाना जरूरी नहीं है कि औषधियों के प्रयोग से रक्तचाप की जटिलताओं में कमी आ जाएगी। यह ऐसी सम्भावना है जिसकी परीक्षा की जानी चाहिए और इसे सिद्ध किया जाए।

रक्तचाप के इलाज से लकवा, दिल का दौरा तथा अर्बद् रक्तचाप की सम्भावनाएं तो कम हो जाती हैं, लेकिन इसके मुकाबले में कारोनरी हृद्रोग में कमी नहीं देखी गई है। वास्तव में कुछ रिपोर्टों से मालूम हुआ है कि रक्तचाप के इलाज के बाद मायोकडियल इन्फार्कशन बढ़ गया है। कुछ ऐसी औषधियों पर परीक्षण चल रहे हैं जिनसे लकवा तथा इन्फार्कशन पर काबू पाया जा सके।

हल्के रक्तचाप के उपचार के अनेक लाभ हो सकते हैं। जैसा हम देख चुके हैं, धमनीय दावा जरा सा ही चढ़ने से लकवा और दिल का दौरा बढ़ने का खतरा पैदा हो जाता है। ये ही दो रोग ऐसे हैं जिनसे संसार में सबसे अधिक लोग मरते हैं या आदमी काम करने योग्य नहीं रहता। यदि रक्तचाप की कमी से इन खतरों को दूर किया जा सके तो यह प्रथम श्रेणी की चिकित्सा प्रगति होगी।

रक्तचाप के खतरों के प्रति आम जनता तथा डाक्टरों को भी सावधान करने की जरूरत है। उन्हें मालूम होना चाहिए कि इसके शीघ्र तथा निरन्तर इलाज से क्या लाभ हो सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद प्रचार व वेद मन्दिर हेतु दान सूचि

११) दान देने वाले महानुभाव

११६. सर्वश्री मुरलीधर वर्मा वैद्य, हेर्रई, ११७. बन्शलाल, इटावा, ११८. नर-बहादुर कार्की, बिजनवारी. ११६. केशवलाल जी, सिरोही, १२०. श्री रामेश्वर जी, लाडनूं, १२१. श्री अशोक कुमार, रांची, १२२. कर्णदत्त शर्मा, वल्लभगढ़, १२३. संगा लक्ष्मण, शोलापुर, १२४. रामेश्वर दयाल, हापुड़, १२५. रामदेव आर्य, इलाहाबाद, १२६. रामब्लेश्वर, रामगढ़ कैंट, १२७. जसाराम जी आर्य, नेगी रुम्हणी, १२८. महावीर सिंह चौहान, मैनपुरी, १२६. बनवारी लाल, दतिया, १३०. राम वचन प्रसाद, मन्नेद्रगद, १३१. प्यारेलाल, जयपुर, १३२. महावीर साहब, गामिया, १३३. जगन्नाथ, दिल्ली, १३४. अजय पुरुषार्थी, महेन्द्रगढ़, १३६. श्रीमती नानकी देवी, दोराहा, १३७. जगन नारायण राय, गाजीपुर, १३८. सुखदेव प्रसाद वर्मा. पाटन, १३६. जय नारायण दीक्षित, बैंतूल, १४०. अयोध्या प्रसाद मौर्य, आसनसोल, १४१. मुन्शीलाल आर्य, कसवा १४२. देवराज शर्मा, खतौली, १४३. राजेन्द्र प्रसाद शास्त्री, रमना, १४४. भूमानन्द, पूना, १४५. राम सगुण साह, मनपुर चक, १४६. मिश्रीलाल अध्यापक, साठेगऊ, १४७. कामेश्वर मिश्र, दरभंगा, १४८. वेद कुमार वेदालंकार, तुलजापुर, १४६. वैद्य मानसिंह, समुधार, १५०. अजय कुमार जुनेजा, मुजफ्फर नगर, १५१. विधि नारायण तिवारी, अकलतरा, १५२. एक्जीक्यूटिव इन्जीनियर, रायबरेली, १५३. देवशरण साहू, नगर उमरी, १५४. डा० जयपाल शर्मा, नं० १२८६१८४, १५५. बुद्धसेन वेदराम, सोरों, १५६. रामचन्द्र शर्मा, १५७. चरणसिंह, मिर्जापुर, १५८. डा० एस० पी० आर्य, रायपुर, १५६. विजय नारायण शर्मा, पटना १६०. हरिश्चन्द्र गुप्त, पीलीभीत, १६१. हन्सराज, कोटा, १६२. एम० एल० गोयल, नई दिल्ली, १६३. राम मनोहर, जबलपुर, १६४. शिव चन्द्र मिश्र, सहर्पा, १६५. केजूराम वर्मा, खैरखूट, १६६. रीझमल, बून्दी, १६७. पी० एन० मंजरी, बहेड़ी, १६८. N. B. Khosla, Bombay, १६६. वेलजीभाई दासजता, १७०. डा० एस० एन० गुप्त, मुरादाबाद, १७१. रामपाल सिंह आर्य, केरू, १७२. सर्वदमन लाल शर्मा, बदायूं, १७३. हरि नारायण चौबे, रोहतास,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७४. संकटा प्रसाद, प्रतापगढ़, १७५. खुशहाल सिंह चौहान, इज्जत नगर, १७६. जुगल दत्त आर्य, १७७. प्यारेलाल जयपुर, १७८. यशपाल आर्य, झज्जर, १७९. रामनाथ गुप्त, नैनावटी, १८०. शिवदास जी, १८१. धर्माबाबू, बासवेडिया, १८२. सूरज प्रसाद शर्मा, रिकाँगपिओ, १८३. काली किशोर तिवारी, कानपुर, १८४. सीसीलाल, मघुपुर, १८५. वा० दी० बामुलकर, लोणार, १८६. बी० के० वेबरा, सैयद् जमालपुर, १८७. हन्सराज आर्य, बीकानेर, १८८. अनिल कुमार, हैदराबाद, १८९. रामकृष्ण वानप्रस्थी, कोटा, १९०. मैसर्ज लक्ष्मीराम, सहारनपुर, १९१. वेद कुमार वेदालंकार, उस्मानाबाद, १९२. आशादत्त शर्मा आर्य, पडरी लालपुर, १९३. जर्नादन सिंह, जगिराह, १९४. बिहारी लाल अध्यापक, रामबास, १९५. गौरी शंकर बाहेनी, माधोपुर, १९६ श्री प्रेमसिंह सोमवन्शी, मथुरा, १९७. हुक्मचन्द जैन, रायपुर, १९८. एम० एम० बोलवानी, रायपुर, १९९. राम-लाल डबराय, दिल्ली, २००. कमलेश चन्द्र गुप्त, वहवलखेड़ा, २०१. सोमपाल, बरेली।

१०) दान देने वाले महानुभाव

सर्वश्री—१. विन्देश्वर बेठा, कोटा, २. जानकी प्रसाद दुबे, गंज वाखौदा, ३. एम० सबई, नई दिल्ली, ४. आर० बी० यादव, कुंडा, ५. D. C. Bahal, Rohtak, ६. रमेश कुमार शुक्ल, रींवा, ७. जीतसिंह, मुजफ्फर नगर, ८. होरीसिंह अध्यापक, सहारनपुर, ९. प्रमोद कुमार, अमरोहा, १०. श्रीमती जानकी देवी आर्य, सीवान, ११. गरीबदास, बरखेरी, १२. अमूल्य कुमार, कोरापुर, १३. विजय रथवानी, राजकोट, १४. श्रीनिवास, गाजियाबाद, १५. सामलानर सैया, रामारेड्डी, १६. डा० एम० पी० सिंह, मिर्जापुर, १७. जियालाल, राणा, १८. बासुदेव सिंह, जौनपुर, १९. दयानन्द सिंह, मुगना, २०. बिन्दुबैठा, काँटा पिरोधा, २१. शीतल प्रसाद सिंह, हरजीपट्टी, २२. हरिपाल, सोनीपत, २३. वृतराग डिलपाल, टिहरी गढ़वाल, २४. माँगीलाल मौर्य, मुरेना, २५. दर्यावर सिह, मूनक, २६. शिवराम वहल, २७. एस० पी० वासुदेव, लुधियाना, २८. जगदीश चौधरी, मुजफ्फर पुर, २९. कर्मवीर गुप्त, हरदोई, ३०. एच० सी० तिवारी, खण्डवा, ३१. डा० युवराज, रजौली, ३२. प्रेम कृष्ण गौतम, झंगड़ानाहन, ३३. सोनवणे सूर्यभान, बनोटी, ३४. बाबूराम सूद, मनी बाजार, ३५. अशोक कुमार, देहरादून, ३६. शिव चरण दास शर्मा, खकेड़ा, ३७. एस० पी० शर्मा, गया, ३८. नारायण भाई मिस्त्री, ३९. रामाधार गुप्त, मेरठ, ४०. यशेन्द्र पाल सिंह आर्य, आगरा, ४१. विजय सिंह, इटावा, ४२. नर बहादुर कार्की, विजनवारी, ४३. शोभा कोटाह, खड़बन्ध, ४४. महावीर प्रसाद, जौनपुर, ४५. कपिल देव जी, मुन्दौली चमाली, ४६. मदन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाल मंगवार, शाहजहाँपुर, ४७. के० राम स्वामी आर्य, नयाजलवन्या, ४८. बाबा साहेब शि:पुरकर, अर्जुनी, ४९. गौरी शंकर मिश्र, बम्बई, ५०. विद्याधरी देवी बुबे, गोरखपुर, ५१. राम निहारे सिंह, इस्मालपुर, ५२. जाडव जी, पोरबन्दर, ५३. श्री रविशंकर सिंह. हरदोई, ५४. जगन्नाथ पाहवार, उज्जैन, ५५. प्रेम नारायण गुप्त, बैतूल, ५६. गोपाल नारायण भटनागर, हरगाँव ५७. भिखारी लाल, बनरझंपुर, ५८. श्री काशीराम अग्रवाल, जालन्धर छावनी, ५९. लालमना पाण्डे, कलकत्ता, ६०. जी० धर्मबाबू. प० बंगाल, ६१. उदयचन्द सिंह, आजमगढ़, ६२. शिव भूषण सिंह, गौतम चितरपुर, ६३. रामचन्द आर्य पुरोहित, बदायूं, ६४. जुगल किशोर आर्य, भैरमपुर उतरौला, ६५. डी० एस० रावत, नैनीताल, ६६. दामोदर आर्य, बम्बई, ६७. लोकनाथ मेहता, दिल्ली, ६८. डी० पी० व्यास, तलैया, ६९. केदारनाथ अग्रवाल, गोरखपुर, ७०. अनूपलाल शर्मा, दिल्ली, ७१. कबारी राम, जालोर, ७२. देशलाल खण्डेलवाल, बैतूल, ७३. व्यंकटराव, विशाखापत्तनम. ७४. रामकिशन, वाराणसी, ७५. सुरेन्द्रपाल सिंह, ज्योरपारवाला, ७६. भृगुनाथ त्रिपाठी, देवरिया, ७७. नरेन्द्र नाथ, सीतापुर, ७८. रामजी लाल, बैतूल, ७९. के० एस० आर्य, बैतूल।

सभी का हार्दिक धन्यवाद। —प्रबन्धक

---

२० हजार परिवारों में परमात्मा की अमर वाणी

वेद भाष्य

पहुँचाना क्या साधारण काम है ?

क्या यह कार्य इस बात का प्रमाण नहीं है
कि आपका सहयोग मिलने पर हम धरती को
वेदमय बना सकते हैं।

काम चाहिए तो दान दीजिए !

प्रबन्धक :

दयानन्द-संस्थान

वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

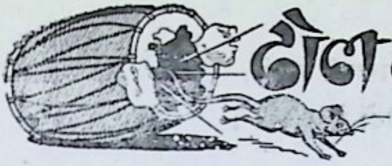

ढोल की पोल

आज चतुर्दिक चर्चा ग्रामोत्थान की है, खेत-खलिहान की है। जैसी पुकार वैसा व्यवहार—इसी से चल पाता है साँसारिक कारोबार। हमने भी अपना मन बनाया कि चलो जमाने की हवा में बह लें। अपन सुहाती छोड़ जग सुहाती कह लें। अतएव शहर से उठाकर झोला डण्डा किया ग्राम को प्रस्थान। दो साल जी नहीं तीन साल बाद गाँव आए थे। यों तो हम पैदायशी ही हैं देहाती। किन्तु पापी पेट की खातिर तोड़कर ग्राम से नाता शहर में आ जोड़ा है। फिर भी अपने ग्राम में अनेकों को पहचानते हैं। ग्राम में पहुंचे तो देखा सभा हो रही है। अच्छा खासा मजमा लगा है। पहले तिरंगा ऐसी सभाओं में फहराता था, अब दोरंगा नजर आता है। हमने दीदे फाड़-फाड़ कर निहारा –कोई दे जाए दिखाई अपना पूर्व-परिचित और प्यारा। देखा तो सभी पुराने चेहरे हैं, किन्तु रूप-रंग नया-नया है। हम मंच के समीप पहुंचे तो उन्हीं महानुभावों को आसीन पाया - जो पहले चौधराहट किया करते थे वही आज भी दनदना रहे थे। हाँ कुछ और भी परिचित थे हमारे जो दरियों पर बैठे हुए थे बेचारे मन मारे। कल तक जो बीस सूत्री के प्रचारक थे, पाँच सूत्री में उन्हें देख दयानन्द के कार्यक्रम की छाया दिखाई देती थी तो एक 'नवोदित राजकुमार' लगता था, उन्हें देश के एक महान् दिवंगत क्रान्ति पुरोधा का 'अवतार'। जो त्वमेव माता च पिता त्वमेव का मंत्र जाप करते थे वे आज सम्पूर्ण क्रान्ति के पैरो हो गए थे। फिर उनके भाषण सुने तो ऐसा लगा कि मानो वे बता रहे हैं कि :—

मौसम के मुताबिक हम होते हैं दीवाने।
मार्च में बुलबुल हैं तो जुलाई में परवाने॥

यह सब नाटक-नौटंकी तो हमें उसकी आ गयी याद. जो उसी ग्राम का था जाया—किन्तु जिसने एकला चलो रे का पथ था अपनाया। और वह आपातकाल की मार से बीमार होकर प्रभु को हो गया था प्यारा। उसके बेटे को भी देखा निरा फटेहाल, हाल था उसका बेहाल। और सहसा ही मेरे पास ही बैठे एक सज्जन धीमे से गुनगुनाए : —

उनकी तुरवत पर नहीं,
है एक भी दिया,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिन के ख़ूं से जले थे,
चिरागे वतन,
जगमगा रहे हैं, मकबरे उनके,
जो बेचते थे शहीदों के कफन।

तभी मंच पर से एक सज्जन ने हमारा ही नाम पुकारा। हम चौंक उठे – सोचने लगे कि यह सत्य है या स्वप्न। जब पुनः हमारा नाम पुकारा गया तो हमने खड़े किए कान, दृष्टि मंच की ओर डाली—तो वहां एक सज्जन को खड़ा पाया। वह थे परिचित हमारे, दो साल पूर्व चुनाव के मौके पर हमारी कड़वी सच्चाई उन्हें नहीं थी भाई तो उन्होंने धमकीपूर्ण मुद्रा में यह बात थी फर्माइये, प्यारे लाल—याद रखना यह सब छूट कुछ दिनों के लिए की गयी है प्रदान—जब समाप्त हो जाएगा यह चुनाव का घमासान—फिर नहीं बख्शे जाओगे श्रीमान्।

खैर अब नाम तो पुकार ही दिया गया था। हम मन मारे मंच पर थे पधारे। बहुत ही जोर लगाया तो मुख से 'भाइयो और बहनो' यही निकल पाया। फिर बुद्धि पर देकर जोर हमने भी किया ग्रामोत्थान का शोर। किन्तु न तो किसी ने बजाई ताली न ही जिन्दाबाद की आवाज निकाली। जब ग्राम वासियों का यह बेरुखी का आलम देखा तो हम क्या करते—सब को नमस्कार कर धम से मंच पर ढेर हो गए।

ज्यों-त्यों कर सभा हो गई समाप्त। तभी एक देहाती आया और हम से बतियाया "भैया तुमने तो दरअसल दो वर्ष में ही चमत्कार है करके दिखाया"। हम जब समझ न पाए तो उन सज्जन ने कहा "भैया हमारे ग्राम के पण्डित जी आप लोगन के बारे में ही एक कहानी सुना गए हैं"। उन्होंने बताया कि "एक ग्राम में था एक जमींदार। वह जब किसी के घर मौत होने पर जाता तो नए-नए कपड़े पहनता—मुख में पान चबाता—इतराता और मुस्कराता। किसी मातम वाले के घर में ऐसी वेशभूषा में जाना, उसका मखौल ही तो है उड़ाना। पर वह तो था जमींदार—इसलिए कौन पूछ सकता था यह भी कि 'क्या माजरा है मेरी सरकार'। जब जमींदार साहब इस संसार से जाने लगे तो उन्होंने अपने बेटे को पास बुलाया और कहा 'मेरे लाल—मैंने जीवन भर ऐसा किया है कारनामा कि लोग मुझे बुरा बुरा कहते हैं और कहते रहेंगे। किन्तु मेरे बेटे तू सब कुछ करना चमत्कार कि लोग मुझे भी अच्छा कहने लगे। क्या मैं विश्वास करूं कि तू मेरी आत्मा की शांति के लिए ऐसा करेगा।

बेटा तो आखिर बाप का ही था उसने पिता जी के चरणों में हाथ लगाया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और फरमाया ''आप निश्चिन्त रहें—आपका फरजन्द ऐसा करिश्मा करके दिखाएगा कि जमाना आपको अच्छा बताएगा—करिएगा मुझ पर विश्वास—पूरा करूंगा अपना वचन गाएगा इतिहास।

जमीदार का बेटा भी तो जमींदार ही था। अतएव उसने एक नया करतब दिखाया। जब किसी के यहाँ मातम पुरशी के लिए जाता तो कपड़ों में इत्र सुगंध लगाता—मुख को पान से रचाता। सजधज कर बाप के समान ही मूंछों को ऐंठता और सहलाता। हाँ इतना मामला उसने आगे बढ़ाया कि वह घोड़ी पर चढ़ता और मरने वाले के घर की ओर बढ़ता। वहां पहुंचता तो कहता 'मुबारक हो तुम्हें तेरहवीं समारोह'।

लोग आतंक के मारे तो चुप रहते—किन्तु इतना अवश्य कहते 'इससे तो इसका बाप ही अच्छा था'। और वह मन ही मन हर्षाता और पिता के फोटो को बताता—क्यों पिता जी, कर दी न आपकी कामना पूरी—अब रही तो नहीं अधूरी।

किन्तु जीते-जीते यह भी जाने की उम्र पा गया। उसने भी एक दिन इस अमर संसार से जाने से पहले अपने कुलदीपक, प्राण प्यारे, नेत्रों के तारे को बुलाता और कहा—'सुनो हमारे सपूत' दुनिया हमारे नाम पर रोती है हमें बुरा-बुरा कहकर अपना समय खोती है, किन्तु तुम ऐसा करना कारनामा कि लोग कहें कि इसका बाप ही इससे अच्छा था। बेटा तो आखिर उसी बाप का था जिसने अपने दिवंगत पिता की अन्तिम इच्छा पूरी कर दिखाई थी। वह बोला पिता जी महाराज—आप चिन्ता छोड़िए ऐसा ही कर दिखाऊंगा कि दुनिया आपको भी सराहेगी।

और फिर एक दिन जब वह कर गया प्रस्थान तो पूत-सपूत ने ली अपने मन में ठान। वह किसी का निधन होने पर उसके घर जाता तो पान, इत्र इत्यादि से ही स्वयं को न सजाता धजाता, घोड़े पर भी अपने बाप के समान बैठकर इतराता और चलते हुए साथ में बैंड-बाजा भी बजवाता।

बेचारे जनता के लोग कहते कि इससे तो इसका बाप ही अच्छा था।

उस ग्रामीण द्वारा सुनाई गयी 'अपने समाज पर घराते आए' यह कहानी हम घर लौटते हुए भी दोहराते आए। बुद्धि पर दिया जोर तो यह समझ में आया किसी ने ठीक ही कहा था :—

बूढ़ा वंश कबीर का, उपजे पूत कमाल।

—दिग्दर्शनानन्द

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार की
औषधियां प्रयोग करें

गुरुकुल कासारि

खांसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग किसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है। सेवन विधि दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाट।

आंखों के अनेक रोगों के लिए

भीमसेनी सुरमा

चयवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन
शरीर को बलिष्ठ और कान्तिमय बनाता।

**शारीरिक क्षीणता एवं फेफड़ों के लिए प्रसिद्ध
आयुर्वेद रसायन**

पो. गुरुकुल कांगड़ीं फार्मेसी (सहारनपुर)

शाखा कार्यालय—६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६ फोन नं०—२६१४३८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आधुनिक युवा सन्दर्भों में एक विश्लेषण : ---इन्जीनियर ओम प्रकाश

प्रेम या मोह ?

मानव केवल इन्द्रियों का संगठन मात्र नहीं है। उसमें इन्द्रियों के साथ ही आत्मा है, मन और बुद्धि भी है। इन सभी के कार्य भी अलग-अलग है और आवश्यकताएं भी। सामाजिक प्राणी होने के कारण वह समाज के सहयोग से इन्हें पूरा करने में प्रयत्नशील रहता है। ये आवश्यकताएं क्रमशः शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक है, किन्तु हम यहां आत्मिक आवश्यकता की ही विवेचना करेंगे।

मानव जीवन का वास्तविक लक्ष्य पूर्णता में ही है। और ईश्वर ही वह पूर्णता है—सम्पूर्णता है जो शाश्वत आनन्द स्वरूप है। कोई भले ही स्वयं को नास्तिक होने का दावा करें, ईश्वर के अस्तित्व को नकारते हुए, भौतिक उपलब्धियों की पराकाष्ठा तक पहुंच जाये, किन्तु एक अप्रत्यक्ष अपूर्णता उसे हमेशा कचौटती रहेगी। व्यस्त सांसारिक जीवन में भी आत्मा किसी ऐसी अनुभूति की खोज करती रहती है जो उसे परम आनन्द से जोड़ सके। आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले मार्ग का नाम ही प्रेम है। आत्मा बड़ा सूक्ष्म अस्तित्व है, ईश्वर उससे भी कहीं अधिक सूक्ष्म और व्यापक है, अतः उन्हें जोड़ सकने वाला मार्ग भी अत्यंत सूक्ष्म और व्यापक होना चाहिये। विचार बड़े सूक्ष्म होते हैं—विचारों से सूक्ष्म भाव हैं—और भाव से भी सूक्ष्म अनुभूति। बस सूक्ष्मतम और व्यापकतम अनुभूति ही आत्मा को पूर्णता तक, संतुष्टि तक पहुंचा सकती है—यही अनुभूति प्रेम है। केवल प्रेम के क्षणों में ही मानव सबसे अधिक सुख संतुष्टि और शान्ति पाता है। यह प्रेम उसे न केवल व्यक्तिगत आनन्द देगा अपितु **"सर्वेभवन्तुसुखिनः" और "वसुधैव कुटुम्बकम्"** को भी साकार बनायेगा।

वैदिक ऋषियों से लेकर आज तक सभी महामानवों ने किसी न किसी माध्यम से सामाजिक जीवन में प्रेम के उदय के यत्न किये हैं। आज हम प्रेम के इस पवित्र मार्ग से भटक गये हैं, दुष्परिणाम हमारे सामने है। इतना ही नहीं, हमारी सारी परंपराएं सामाजिक मान्यताएं, नैतिक मान्यताएं—समूची समाज रचना ही प्रेम विरोधी स्वार्थ प्रधान है। प्रेम में एक से अनेक की ओर चलना होता है किसी अंतस्थल में प्रेम का उदय हुआ कि उसे नष्ट करने की स्थितियां पहले से ही उपलब्ध मिलेंगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सब पुरानी पीढ़ी का सृजन है जो अंसतुष्टि, अशांति और अतृप्ति का जीवन जी रही है। सौभाग्य से युवा पीढ़ी में इस सृजन को नकार देने की चेतना, कहीं-कहीं दृष्टिगोचर होती है। किन्तु यह एक शुभलक्षण तभी हो सकता है जब वह प्रेम पर आधारित व्यवस्था की कोई रूपरेखा दे। दुर्भाग्य से न तो युवाचेतना अपनी इस शाश्वत आत्म-प्यास को समझ पाई और न ही वास्तविक प्रेम के उदय का कोई उपाय खोज पायी। आज का शिक्षित और तथाकथित प्रगतिशील युवा वर्ग बड़ी वजनदार भाषा में प्रेम और मुक्त प्रेम (Free love) की तरफदारी कर रहा है। किन्तु यहां मुझे यह लिखने में कतई संकोच नहीं कि उसने प्रेम की दिशा में एक भी कदम नहीं उठाया। वस्तुतः वह किसी अन्य दिशा में भटक रहा है। जिसे प्रेम नहीं वासना कह सकते हैं।

वर्तमान का प्रेम—प्रेम या ····· ?

"मैं उससे प्रेम करता हूं, अव यह कैसे सहन कर सकता हूं कि वह किसी और की हो जाए" भाई साहव मैं उसके लिए जान भी दे सकता हूं" "मैं उसके लिए सारी दुनिया ठुकरा सकती हूं, आप समझते क्यों नहीं, भाई साहव मैं उससे प्यार करती हूं।" "समाज प्यार का सबसे बड़ा दुश्मन है— हम एक दूसरे के बगैर एक दिन भी नहीं रह सकते"—"आप ही हमारी सहायता कीजिए"—ये सब किसी फिलम या उपन्यास के डायलाग नहीं, मेरे कुछ प्रेमी मित्रों के मुंह से अक्सर निकलने वाले वाक्य हैं। प्रेम-प्यार-मोहव्वत लगता है सारा वातावरण ही प्रेममय हो उठा है। चाहे आज के साहित्य की कोई भी विधा हो अथवा कला या संगीत, चाहे घर में रेडियो, टेलिविजन के पास बैठियेगा, या सिनेमा जाइए, पार्क में चले जाइए या स्कूल कालेजों के बरामदों में, कोई भी जगह प्रेमियों और प्रेम से अछूती नहीं। किसी न किसी रूप में सर्वत्र प्रेम का बोलवाला है।

जिस प्रेम के लिए हम प्रतिदिन "**समानाहृदयानि वः तथा समानं मनः सहचित्तमेषाम्**" को हृदयंगम करने का यत्न करते हैं—जिस त्याग के लिये हम हर आहुति के बाद इदन्नमम का उदघोष करते हैं देखिए, हमारे नवयुवक-युवतियों ने कितनी आसानी से उसे अनुभव करने का भ्रम पाल लिया।

आज दुनियां में एक मिनट में लगभग बीस आत्महत्याएं होती हैं। पैंसठ प्रतिशत आत्महत्याएं किसी न किसी रूप में कथित प्रेम की असफलता के कारण ही होती हैं। दुनिया की लगभग एक तिहाई आवादी मानसिक रोगों से त्रस्त है। युवा वर्ग को होने वाले, लगभग बहत्तर प्रतिशित मानसिक रोगों का कारण ही यह प्रेम है।

कैसा प्रेम है यह, माँ—से उसके कलेजे के टुकड़े, बाप से बुढ़ापे की लाठी, बहन से राखी बांधने वाली कलाई, भाई से भाई और इतना ही नहीं कई देवियों से उनकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माँग का सिंदूर छीन लेने वाला भी क्या प्रेम हो सकता है? नहीं—नहीं तो फिर क्या है यह, जिसके इर्द गिर्द हमारी युवा चेतना भीषण अंतर्द्वन्द, मानसिक तनाव, निराशा, पलायन, उच्छृंखलता और हिंसा का जीवन जी रही है। आधुनिक युवा मनः स्थिति के संदर्भ में यह आज का सबसे जरूरी प्रश्न है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। दुर्भाग्य से हमारी बुजुर्ग पीढ़ी इसके बुनियादी कारण पर गंभीरता और सहानुभूति से विचार करने के बजाय, सिर्फ अपशब्दों और गालियों का इस्तेमाल कर लेना ही पर्याप्त समझती है किन्तु यह इस कथित प्रेम की आग में घी होता है।

वस्तुतः यह तथाकथित प्रेम, प्रेम नहीं मोह है। जिसका आधार वासना है। आज की चालू भाषा में, प्रेम की सारी संज्ञाएं और परिभाषाएं इसी के लिए इस्तेमाल की जाती हैं। स्थूल रूप से तो प्रेम और मोह या वासना में कोई अन्तर ही समझ में नहीं आता। यहाँ तक कि जब इस मोह के विरोध में कुछ भी कहा जाए तो हमारे प्रगतिशील भाई हमें दकियानूसी करार देते हैं। क्योंकि वे मोह को ही प्रेम समझे बैठे हैं।

प्रेम और मोह—विभाजक रेखाएं

उच्च मानवीय आदर्शों की पृष्ठभूमि या अंतरतम से उदित होने वाली आत्मीय अनुभूति का नाम प्रेम है जिसका रूप समर्पण में है।

सांसारिक व्यक्तियों से आकर्षण के कारण बाहर से उत्पन्न हुई एक मानसिक आसक्ति का नाम मोह है और शुद्ध ऐन्द्रिक अनुभूति की इच्छा वासना है।

परिभाषाओं से स्पष्ट है कि प्रेम और मोह एक दूसरे से बिल्कुल उल्टे हैं। युवा पाठक स्वयं निर्णय करें कि वे जिस लगाव को प्रेम समझे बैठे हैं, क्या वह वास्तव में प्रेम है।

प्रेम का उदय विशिष्ट मानवीय आदर्श सज्जनता, उदारता, सच्चरित्रता आदि में पारस्परिक समानता के कारण होता है किन्तु मोह की उत्पत्ति किसी के शारीरिक सौन्दर्य, सम्पन्नता, मादक चेष्टा या व्यवहार कुशलता आदि के कारण होती है।

प्रेम का आविर्भाव स्वतः ही एक भावात्मक एकता स्थापित कर देता है पर मोह में एक अमूर्त सा विलगाव है जिसे दूर करने के लिए प्रेमी अपने प्रिय को हर संभव प्रयत्न द्वारा प्राप्त करना चाहता है चाहे उसको स्वयं या प्रिय को कितनी ही हानि उठानी पड़े।

प्रेम की घनिष्टता में भौतिक सामीप्य अनिवार्य नहीं किन्तु मोह की घनिष्टता में तो प्रेम के विद्रोह की कल्पना भी कष्टदायी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेम में विश्वास भीतर से आता है और मोह में विश्वास उत्पन्न करने के प्रयत्न बाहर से किये जाते हैं।

चूंकि प्रेम, पूर्ण आंतरिक: वैचारिक व भावनात्मक परिचय के साथ ही संभव है अत: उसके उदय में लम्बी अवधि लग सकती है किन्तु मोह में तो—''तुमने देखा एक नजर और दिल तुम्हारा हो लिया''—अर्थात् क्षणमात्र का सामीप्य है।

जीवन के किसी क्षेत्र में प्रेम का आविर्भाव आत्मिक विकास की ओर अग्रसर करेगा, किन्तु मोह एक विचित्र सा उन्माद पैदा करता है जो उसे आत्मिक ह्रास की ओर ले जायेगा।

प्रेम स्वत: एक साधना की उपलब्धि है किन्तु मोह एक आवेश है जिसका उद्देश्य प्रिय की उपलब्धि है।

जिससे हम प्रेम करते हैं यदि कोई अन्य भी उसी से प्रेम करे तो भावनात्मक आपत्ति नहीं होनी चाहिए पर मोह में यह कतई असह्य है। 'तुम्हारा चाहने वाला खुदा की दुनियाँ में मेरे सिवा भी कोई और हो खुदा न करे।'

प्रेम अनन्य है किसी से भी हो सकता है किन्तु मोह सामान्यता विपरीत यौन से ही होता है।

प्रेम के लिये तो 'जिन्दा रहेगा प्यार मेरा, मैं नहीं तो क्या' की बात लागू हो सकती है किन्तु मोह में प्रिय के विछोह में कुछ समय बाद—

अपरिचितों जैसी स्थिति हो जाती है, या परस्पर तीव्र घृणा भी हो सकती हैं, अथवा कभी-कभी वासना का घृणिततम रूप भी देखने को मिल सकता है।

प्रेम इन्द्रिय जनित विकारों से रहित है जबकि मोह अंततोगत्वा-भले ही अवचेतन में सही काम (Sex) केन्द्रित हो जाता है।

प्रेम में लाभ, का कोई स्थान नहीं, किन्तु मोह में वस्तुओं के आदान प्रदान उपहारबाजी का विशिष्ट महत्व है।

प्रेम की नींव दृढ़ आत्म-विश्वास पर आधारित है जबकि मोह में परस्पर अविश्वास और आशंकाओं का भय सदैव बना रहता है। जरा भी अविश्वास पनपा कि ''बड़े बेवफा हैं वो'' के रोने शुरू।

प्रेम का गुण ही देना है समर्पण है उसमें प्रतिदान का कोई प्रश्न नहीं, किन्तु मोह के आवेश में दिया तो कुछ भी जा सकता है, पर प्रतिदान की अपेक्षा सदैव जुड़ी रहेगी, यदि प्रिय बदले में कभी कुछ भी भौतिक या भावनात्मक देने में असमर्थ है तो, मोह स्थायी नहीं रह सकता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कितना अंतर है, इस तथाकथित प्रेम और वास्तविक प्रेम में। और हमारी युवा पीढ़ी प्रेम के अमृत के नाम पर मोह का विष पिए जा रही है। किन्तु प्रश्न यह है कि हमारी युवा पीढ़ी प्रेम क्यों नहीं कर पाती। मोह ही क्यों उत्पन्न हो जाता है। इसका सही उत्तर मोह की उत्पति का विश्लेषण करने से ही मिलेगा।

युवा पीढ़ी :- प्रेम वासना और रजनीश —

मन बड़ा चंचल है, इसकी आवश्यकता नवीनता में है। यह हमेशा अभिनव की मांग करता है। मन का नया आकर्षण समानुपाती होता है। यह इन्द्रियों के बगैर स्वयं तो कुछ भी नहीं, क्योंकि यह जो भी प्राप्त करता या मांगता है इन्द्रियों के माध्यम से ही। इसलिये यह सामान्यत: बुद्धि के द्वारा आत्मा के नियन्त्रण के बजाय इन्द्रियों के ही नियंत्रण को चला जाता है। प्रत्येक इन्द्रियों का अपना पृथक भोजन है जिसे विषय कहते हैं। नैसर्गिक रूप से प्रत्येक इन्द्रिय अपने अपने विषय के लिये प्रयत्नशील होती है। एक स्थित में अपने विषय से वह तृप्त भी हो सकती है।

किन्तु मन जो पूर्व में सांसारिक हो चुका है। उसे सन्तुष्ट नहीं होने देता और सम्बन्धित विषय के नये की मांग करता है। जब किसी ज्ञानेन्द्रिय के सम्पर्क में कुछ नया : आकर्षण सापेक्ष : आया जैसे आँखों ने कोई खूबसूरत चीज या व्यक्ति देखी, मन उससे जा जुड़ेगा अर्थात आंख के माध्यम से सौन्दर्य सुख का भोग करने लगेगा। अब चूंकि मन तो समान रूप से सभी इन्द्रियों का गुलाम है केवल आँख का या अन्य ज्ञानेन्द्रियों का ही नहीं, बस वह उस सौन्दर्य को सभी इन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों में भी, बांटने का उपक्रम शुरू करेगा। जैसे किसी ने सुन्दर पुष्प देखा, मन ने उस नए को स्वीकार किया, साथ ही, नाक को भी उसे बांटना चाहा, अर्थात् उसकी गन्ध सूंघने की इच्छा भी प्रबल हुई। कर्मेन्द्रियां का काम भी शुरू, हाथ उसे तोड़ने का प्रयास शुरू कर देगा, पैर भी उसी ओर बढ़ेंगे। कुल मिलकर क्षणिक आकर्षण एक आसक्ति बन जाता है। यही आसक्ति मोह है। यहीं से प्रिय को सर्वांगीण रूप से प्राप्त करने का उन्माद शुरु होता है - फिर चाहे लग जाए हथकड़ियां – यारो मैंने तो हां कर ली- के अलाप शुरू।

स्पष्ट है कि मोह एक मानसिक विकार है। जो मन की इन्द्रियों के नियंत्रण में चले जाने के कारण होता है। यही मन यदि आत्मा के नियंत्रण में चला जाय तो स्वयं ही इन्द्रियों का शासक बन जायेगा और मोह की उत्पत्ति की संभावनायें ही न रहेंगी। किन्तु आज के सुविधा प्रधान और भोग वादी वातावरण में मन का इन्द्रियों की तरफ झुकना स्वाभाविक ही है। दूसरे हमारी कपोल कल्पित नैतिकता जिसका उद्देश्य केवल अवदमन (Supression) रहा है और है प्रतिक्रियात्मक भावनाओं (Reactionary sentiments) की उत्पत्ति में सहायक हैं। इस नैतिकता ने एक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचित्र सा भय एवं संकोच का वातावरण निर्मित कर रखा है जिसके कारण दबी हुई भावनाएं भी उभर कर मोह को तीव्रता प्रदान करती हैं। आज की मुक्त प्रेम (Free love) की बात एक अवदमित प्रतिक्रिया ही है। निस्संदेह प्रेम की मुक्तता की कोशिश बड़ी सराहनीय है। प्रेम चाहे पति पत्नी करे या अविवाहित युवक युवती, उन्हें पूरी सामाजिक मुक्तता मिलनी चाहिए। किन्तु प्रेम मुक्तता के नाम पर मोह और इन्द्रिय लिप्सा का वातावरण बनाना आत्मघात के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। मुक्त प्रेम के कितने पक्षधर ऐसे हैं जो किसी भी सुन्दर युवती से मित्रता में बिलकुल उसी मन—स्थिति में जीते हैं जिसमें एक कुरूप युवक से मित्रता में- ईमोनदारी से देखा जा जाए तो कठिनाई से ही एकाध व्यक्ति ऐसा मिलेगा। ऐसे व्यक्ति में ही प्रेम के उदय की संभावना और उसके लिये वातावरण मिलना चाहिये।

प्रेम बनाम कामुकता - रजनीश दर्शन :-

युवा पीढ़ी में जो भावनात्मक अवदमन की प्रतिक्रिया आज दीख रही है उसे दार्शनिक प्रमाणिकता, प्रोत्साहन, संरक्षता और भाषा देने की चतुराई चतुर कुशल मन: पारखी श्री रजनीश जी कर रहे हैं। प्रेम पर भी उन्होने बहुत कुछ लिखा बोला है यहां उनके प्रेम पर बहुत ही संक्षेप में लिखना अनुपयुक्त नहीं होगा।

आज की विवाह संस्था पर तीखे प्रहार करते हुये उन्होंने बड़े जोरदार शब्दों में प्रेम को प्राथमिकता देते हुये महत्वपूर्ण बताया है। अपनी पुस्तक प्रेम और विवाह में कहा है -प्रेम परमात्मा की व्यवस्था है। विवाह आदमी की व्यवस्था। स्थूल रूप में यह बड़ी भली बात है क्योंकि आज जबकि नारी और पुरूष के कार्य क्षेत्रों में भारी समानता हो गई हैं आदर्शवादिता की पृष्ठभूमि में पूर्ण वैचारिक और भावनात्मक समानता होने पर प्रेम को विवाह में बदल देना कोई बुरी बात नहीं है। महर्षि दयानंद ने भी लिखा है लड़का लड़की के अधीन विवाह होना उत्तम है व परस्पर प्रसन्नता से विवाह होना ब्राह्म कहलाता है। ब्राह्म विवाह सर्वोत्कृष्ट है। विवाह की यह स्वाधीनता वास्तविक प्रेम के लिये ही है मोह के लिये नही।

लेकिन रजनीश जी के प्रेम में बड़ी अवैज्ञानिकता और अंतर्द्वन्द है, एक ओर वे प्रेम प्रारम्भ है परमात्मा अन्तिम आदि बातें कहकर उसे ईश्वर का मार्ग बताते हैं दूसरी ओर नारी पूरी प्रेम है कहकर नारी के प्रति यौन भावना पैदा करते हैं। क्यों कि वे प्रेम की अवस्था में हुये शारीरिक सम्बन्धों को आध्यात्मिक कृत्य और योगी की समाधि तक निरूपित करते हैं। वे प्रेम को मोह ही नहीं, (Sex) का ही पर्याय-वाची बना देते हैं। वस्तुत: उनका मुक्त प्रेम-मुक्त यौन (Free Sex) विनाशकारी योजना से जुड़ा है। इसकी पुष्टि उनकी दूसरी पुस्तक संभोग से समाधि की ओर दूसरा और भी मजेदार ढ़ग से होती है। पाठक स्वयं सोचें कि उनका प्रेम, परमेश्वर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य विश्वबंधु जी की सम्मति

"सरस्वती श्रुति महती महीयताम्"

"यह मत कहो कि जग में क्या कर सकता है अकेला" इसका यदि निर्देशन देखना हो तो दयानन्द संस्थान के अध्यक्ष श्री भारतेन्द्र नाथ जी हैं। जिन्होंने वेदों और वैदिक साहित्य के प्रकाशन का कार्य करके सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रकाशन के आगे बड़ी लाइन खींचकर सिद्ध कर दिया कि अकेला क्या कर सकता है—

उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि दयानन्द संस्थान के साहित्य को मोल लेकर अपने पुस्तकालयों की श्रीवृद्धि करें।

मैंने आज संस्थान में आकर जो प्रकाशन व वेद मन्दिर के दर्शन किये हृदय अत्यन्त प्रभावित हुआ। कर्मयोगी भारतेन्द्र नाथ को दिन-रात वेदों के प्रचार प्रसार कार्य में रत देखकर अपार प्रसन्नता हुई। **"कार्यं वा साधयेयं देहं पातयेयम्"** यह भारतेन्द्र जी के जीवन का मूलमंत्र है।

मैं इस परिवार के कार्य-कलापों के प्रति श्रद्धावान हूं। भविष्य में और भी अधिक विश्व को वेदों का सन्देश पत्र-पत्रिकाओं और साहित्य-सृष्टि के माध्यम से दे सकें यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है। और यही मेरी हार्दिक भावना है। —**विश्व बन्धु शास्त्री**

का मार्ग है अथवा इन्द्रियजनित सुख का। कहां आत्मा की प्यास और कहां यौन लिप्सा। काम एक इन्द्रिय जनित आवेश है और प्रेम एक आत्मिक अनुभूति है। मानसिक आवेश का सूक्ष्मतम अनुभूति से तालमेल बिठाना अवैज्ञानिक है इसकी व्यवहारिकता भी घृणास्पद है। इस यौन मुक्तता के परिणामत: इंगलैन्ड में १६ वर्ष से कम आयु की १० किशोरियाँ प्रतिदिन गर्भपात कराती हैं जिनमें से ६-७ की आयु लगभग ११ वर्ष होती है। (टाइम्स आफ इंडिया जून ७३)। ऐसी ही दशा अन्य पश्चिमी देशों में है।

स्पष्ट है हमारी युवा पीढ़ी प्रेम की मुक्तता के नाम पर मोह के जाल में फंसती चली जाये यह हमें किसी भी मूल्य पर स्वीकार्य नहीं। इस स्थिति में सत्य के ग्रहण करने और असत्य के त्याग में सदैव तत्पर रहने वाले आर्यसमाज का सबसे अधिक दायित्व है। एक ओर, जहाँ हमें संध्याशाखाओं आदि को रोचक बना कर युवा पीढ़ी को आकृष्ट करना है इससे आत्मिक विकास के लिये दूसरी ओर, आज की मोह-वादी सामाजिक संरचना, अवदमनकारी आचार संहिता, पुरानी पीढ़ी की अवैज्ञानिकता के विरोध में एक तीव्र नकारात्मक चेतना पैदा करना भी अनिवार्य है। मोह के अन्धेरे को नष्ट कर प्रेम का आलोक फैलाना हमें जिसके द्वारा संसार के उपकार का उद्देश्य पूरा किया जा सके।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रुपये का गीत

उजला बाजार रुपये का, काला बाजार रुपये का।
धरती से अम्बर तक देखा, सब व्यापार रुपये का।।
मजनू का प्यार भले कुछ हो, लैला का प्यार रुपये का।
बड़े-बड़े ज्ञानी-ध्यानी कह गये, यश-विस्तार रुपये का।।

एक के नोट को चौराहे पर सरपट चलते देखा है।
दो-दस-पांच के नोट को दुकानों में उछलते देखा है।।
बीस-पचास का नोट अभी मस्ती में मचलते देखा है।
जनता-राज में सौ के नोट का दर्प दहलते देखा है।।

बीच सड़क पर रोते देखा, नोट हजार रुपये का—
बड़े-२ ज्ञानी-ध्यानी कह गये, यश-विस्तार रुपये का।

सवा रुपया, न्यायालय के मुंशी का 'हकपानी है।
इससे कम में वहां नमस्ते करना भी नादानी है।।
'पेशकार को पांच रुपये दो' अर्जी पेश कराने की।
हर दफ्तर में 'बाबू की तस्वीर' की यही कहानी है।।

'सदाचार' में 'नादानी' कर गये, प्रचार रुपये का—
बड़े-२ ज्ञानी-ध्यानी कह गये, यश-विस्तार रुपये का।

कैसी भी कालिख हो रुपया पलभर में धो सकता है।
कैसे भी बंजर में कैसे भी बीज को बो सकता है।।
रुपये की गोलाई में, दुनिया का गोला खो सकता है।
ईश्वर से जो काम न हो वह रुपये से हो सकता है।।

अन्धे से अन्धे को हो जाता है दीदार रुपये का—
बड़े-२ ज्ञानी-ध्यानी कह गये, यश-विस्तार रुपये का।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रुपया हो तो हूरों को लंगूर यहां पा जाते हैं।
रुपया हो तो कौवे को भी अंगूर यहां पा जाते हैं।।
रुपया हो तो मुर्दे भी सिन्दूर यहां पा जाते हैं।
रुपया हो तो चाहे जो भरपूर यहां पा जाते हैं।।

सब सुख जिसके जन्में हैं, है ऐसा अवतार रुपये का—
बड़े-२ ज्ञानी-ध्यानी कह गये, यश-विस्तार रुपये का।

जिसके शब्दों में अर्थों के अर्थ हजार मिला करते हैं।
पद-२ अंलकार-अंकित, अगणित शृंगार मिला करते हैं।।
जिसके वर्ण-सुवर्णों के विस्तृत-विस्तार मिला करते हैं।
कविता और कामिनी दोनों के रूप अपार मिला करते हैं।।

उस निर्भय-कवि को भी पाया है ताबेदार रुपये का---
बड़े-२ ज्ञानी-ध्यानी कह गये, यश-विस्तार रुपये का।

— निर्भय हाथरसी

स्वस्थ और सुन्दर आंखों के लिए

भीमसेनी काजल

आंखों को नीरोग और सुन्दर बनाता है।

मुरारी ब्रदर्स

जी०-७, माडल टाऊन, दिल्ली-११०००७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

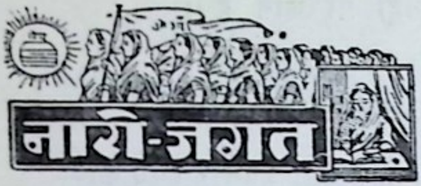

पकवान बनाइए

यहाँ कुछ फलाहारी व्यंजन बनाने की सुगम विधियां बताई जा रही हैं। उपवास के दिन इन्हें आप बनाइए और अपने प्रियजनों को परोसिए।

आज आप फलाहार पर हैं और आपके प्रियजन भी ! फिर तो फलाहारी व्यंजन बनाएंगी ही। लीजिए प्रस्तुत करती हूं—कुछ फलाहारी व्यंजनों को बनाने की सुगम विधियाँ ! आप इन्हें बनाइये न,परोसिए न !

इनको चख कर ही खाने वाले आप-की सुघड़ता और सुरुचिता की प्रशंसा करने लगेंगे।

श्रीखण्ड

सामग्री—: गाढ़ा मीठा दही—१ लीटर, पिसी चीनी २०० ग्राम किशमिश ५० ग्राम, हवाइयां (कतरे) पिस्ता, बादाम, चिरौंजी आदि मेवा ५० ग्राम, घी आधा चम्मच, और चांदी का वरक।

विधि :-दही को स्वच्छ कपड़े से छान लीजिए। फिर कपड़े में ही बांध कर पानी निचुड़ जाने के लिए टांग दीजिए। इसे हाथ से भली-भांति मसल डालिए। इसमें चीनी मिलाइए।

अब इसे कद्दूकस में कस लीजिए हाँ, यदि ज्यादा गाढ़ा हो, तो थोड़ा-सा दूध डाल सकती हैं। फिर इसे थाली में घी चुपड़ने के पश्चात् मेवा मिला कर जमा दीजिए।

और इसके मनचाहे आकार वाले टुकड़े काटिए। हाँ, इसके पहले चांदी का वरक लगाना मत भूलिए।

फूल मखाने की खीर

सामग्री :—फूले हुए मखाने १०० ग्राम, भैंस का दूध डेढ़ लीटर, (पिसी चीनी २०० ग्राम, अंदाज से मेवे (चिरौं-जी, बादाम, किशमिश) छोटी इलायची ४ और इच्छानुसार घी।

विधि:—पहले इच्छानुसार कम अधिक घी में मखाने तल लीजिए। फिर इसका मोटा-मोटा चूरा बना डालिए।

दूध पकाइए। जब यह खूब गाढ़ा हो जाए, तो मखाने डालकर चलाती रहिए। फिर चीनी इलायची और मेवे डालिए। बस, फूल-मखाने की खीर तैयार है !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पके केले की पकौड़ियां

सामग्री:—पके केले ४, सिघाड़े या कूटू का आटा १०० ग्राम, पिसी चीनी ५० ग्राम, छोटी इलायची २, तथा घी इच्छानुसार।

विधि :—केले छीलिए। कतरे काटिए। सिघाड़े का आटा, केले के कतरे और पिसी चीनी तीनों को भली-भांति फेंट लीजिए। इसमें पिसी इलायची भी छोड़िए।

अब हल्की आंच पर कढ़ाई चढ़ाकर घी डाल कर छोटी-छोटी पकौड़ियां चुन लीजिए। लाल-लाल सेंकिए और गरमा-गरम खाइए-खिलाइए।

बदायूं वाले पेड़े

सामग्री :—खोया २५० ग्राम, पिसी चीनी २०० ग्राम, पिसी इलायची अंदाज से, गुलाब जल और किशमिश २५ ग्राम।

विधि !—आप खोया कद्दूकदस में कस लीजिए। फिर भूनिए। जब यह बादामी रंग का हो जाए, तब उतार लीजिए। ठण्डा होने दीजिए। फिर इसमें बारीक पिसी इलायची (छोटी) और गुलाबजल भी डालिए। इसमें करीब १५० ग्राम चीनी मिलाइए। फिर खूब चलाइए। अब मनचाहे आकार के पेड़े बनाइए और बाकी बची चीनी में लपेट-लपेट कर रखती जाइए और ऊपर से हर पेड़े में एक-एक किशमिश लगाइए।

मलाई पान

सामग्री ·—भैंस का दूध २ लिटर, कूटू का आटा १२५ ग्राम, चीनी १ किलो, इच्छानुसार घी, केसर और छोटी इलायची।

विधि :—कढ़ाई में दूध डालिए और खूब गाढ़ा होने दीजिए। जब दूध आधा लिटर से कुछ अधिक बचे, तो इसमें कूटू का आटा डालकर भली-भाँति फेंटिए। आप जितना ही अधिक इसे फेंटेंगी उतना ही अच्छा मलाई-पान तैयार होगा।

फिर इस मिश्रण को हल्की आँच पर कढ़ाई में घी डाल कर मालपुए सरीखा तल लीजिए। हाँ केसर मिली चाशनी पहले से तैयार रहनी चाहिए। इसमें पिसी हुई इलायची भी मिलाइए। अब तले हुए मलाई पान को चाशनी में डुबो-कर पहले से दबा दीजिए, ताकि यह चाशनी पी ले।

केले का रायता

सामग्री :—पके केले ५, दही ५०० ग्राम, अंदाज से चीनी और छोटी इला-यची।

विधि : – केले छील लीजिए। पतले-पतले काट डालिए। ध्यान रखिए चिनिया केले रायते के लिए अच्छे नहीं होते। अतएव चित्तीदार बड़े केले ही लीजिए।

दही को भली-भाँति फेंट लीजिए उसमें चीनी और छोटी इलायची मिला-इए। फिर इसमें केले के कतले डालिए।

किशमिश का हलुआ

सामग्री :—किशमिश १५० ग्राम, चीनी ३०० ग्राम, घी ७५ ग्राम, अंदाज से कतरा हुआ मेवा।

विधि :—किशमिश साफ कीजिए। धोइए। पीस लीजिए। फिर खोआ भूनिए। दोनों को मिलाइए। फिर चीनी और पानी डालकर बराबर चलाती रहिए। जरा देर में यह पक जाएगा। अब इसमें कतरे हुए मेवे भी मिला दीजिए। लीजिए, हलुआ तैयार है!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहानी

—कुमारी ऋचा

वीर बालक

गम्भीर मुद्रा में बैठी अपनी वृद्धा माता को पुकारा 'माँ ! माँ!' माता चौंक सी पड़ी और बोली क्या है बेटे। बेटे ने कहा प्यारी माँ यह तो बताओ कि जब मेरे पिता जी ने छात्रपति शिवाजी महाराज के आजादी पर युद्ध में लड़ते प्राण दे दिए थे तो शिवाजी हमारी सुधि क्यों नहीं लेते। माँ चार दिन हो गए। भरपेट रोटी भी नहीं मिली-बड़ी भूख लगी है ! आपको भी तो · ···

अपने पुत्र के मुख से यह शब्द सुनते ही बूढ़ी माँ ने कहा 'बेटे छत्रपति हमारी सहायता अवश्य ही करेंगे। हमारी उन्हीं ने सहायता नहीं की तो दोष हमारा ही है। क्योंकि हम उनके पास गए भी तो नहीं।

बेटा बोला। "किन्तु मां क्या प्रजा की हालत का पता लगाना उनका काम नहीं।

"है तो बेटा।" कहते-कहते वृद्धा अचेत हो गई। बेटे ने तत्काल मां के मुख पर छींटे देकर उसे होश में लाने का प्रयास किया। उसी समय एक और क्रांति वहां आयी और उसने युवक से कहा" कहो माली कैसे हो ?"

युवक का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा और वह बोला "क्या तुम्हारी आंखें नहीं। देखा नहीं कि मैं अपनी मां को होश में लाने की चेष्टा कर रहा हूं सुभाग।

'देख तो सभी रहा हूं, किन्तु तुम किसी की सुनते भी हो क्या। यदि सुनते तो यह स्थिति क्यों होती।, सुभाग राय ने मालो जी को उत्तर दिया।

मालो जी ने क्रोध की मुद्रा में कहा "मैंने तुम से एक बार कह कि अभी व्यर्थ की बातें न करो। मेरी मां को स्वस्थ हो जाने दो। उन्हें स्वस्थ करने के लिए मैं चाहे जो कुछ कर सकता हूं।"

सुभाग माला जी के मुख से यह सुनते ही बोला "सचमुच" किन्तु क्या तुम जानते हो अपने दु:ख का असली कारण। वही शिवाजी ही है तुम्हारी इस दुरवस्था के लिए जिम्मेदार। उसी का एकछत्र राज्य स्थापित करने के लिए तुम्हारे पिता जी ने रणभूमि में प्राण दिए थे। यदि वह जीवित होते तो तुम्हारी यह अवस्था न होती। पर अभी समय है। यदि तुम मेरी बात मान लो तो मालामाल हो जाओगे।

माला जी ने पूछा "यह कैसे होगा" ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और सुभाग ने कहा "लो यह कटार और इससे अपने वास्तविक शत्रु को ठिकाने लगा दो"। करोगे तुम ऐसा ?

न जाने कैसी परेशानी थी कि माला जी के मुख से हां निकल गया। माला जी ओर सुखाग ने कटार बढ़ाई, जिसे उसने अपने पास सम्भाल कर रख लिया।

० ० ०

दूसरे दिन मालाजी चोरी-छिपे शिवाजी के राजमहल में घुसने में सफल हो गया। रात्रि का समय था। शिवाजी गहरी निद्रा में मग्न थे। मालाजी ने अभी शिवाजी की ओर अपनी कटार तानी ही थी कि पीछे से उसका हाथ पकड़ लिया एक व्यक्ति ने और वह जोर से बोला "हत्यारा कहीं का। क्या तुझे पता नहीं कि मैं यहां हूं"।

मालाजी का हाथ अभी उस व्यक्ति ने पकड़ा ही हुआ था कि तुरन्त वहां एक और आवाज आई "किसे हत्यारा कह रहे हो तानाजी"। यह आवाज शिवाजी की ही थी।

तानाजी बोले "महाराज ! यह बालक आपकी हत्या करना चाहता था। अभी यह प्रहार करने को ही था कि मैंने इसका हाथ पकड़ लिया।

तभी शिवाजी बोले "क्या नाम है तुम्हारा" ?

मालाजी ने निर्भीकतापूर्वक कहा "मेरा नाम मालाजी है"। और तानाजी का कहना झूठ नहीं। मैं आपकी हत्या करना चाहता था।

शिवाजी के प्रश्न करने पर मालाजी ने कहा "मुझे इसका परिणाम भी पता था। किन्तु मैंने यह निश्चय चार दिन से भूखी अपनी माता की अवस्था को निहार कर ही किया था। और उसकी इस हालत के लिए आप ही जिम्मेदार हैं। क्योंकि मेरे पिता ने भी अन्य मराठा वीरों के तुल्य आपके राज्य को बढ़ाते हुए युद्ध में भाग लेते हुए अपने प्राण त्यागे थे किन्तु आपने हमारी कोई सुधि नहीं ली।

तानाजी क्रोध में आकर कुछ कहने को ही थे कि शिवाजी बोले उठे यह बालक ठीक कहता है। न जाने हमसे यह भूल क्योंकर हुई कि हमने अपने प्रिय के परिवार की भी खबर न ली। उन्होंने यह भी कहा कि बालक तुम निर्दोष हो दोषी वास्तव में मैं हूं। क्योंकि मैं शासक होकर भी उनको भूल गया कि जो मेरे शासन के निर्माता है।

जो सच्चा है

जो बच्चा है, पर सच्चा है
अपनी बात का न कच्चा है
जो कहता है वह करता है
और के जो दुख हरता है
वही बड़ो से भी है आगे
उसके मन में धर्म है जागे
ऐसा बालक जो गुणवान
उस पर होता सबको मान
आओ हम में भी करलें प्रण
पा जाएंगे यश का धन। —विनय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्रावणी तक प्रत्येक परिवार में

वेद भाष्य पहुंचाने
का
संकल्प धारण करें

केवल जन-ज्ञान के सदस्यों को

१२५) में वेद भाष्य व २६) का
साहित्य कवर मुफ्त

५ या अधिक सैट मंगाने पर केवल १०१) में
[साहित्य नहीं मिलेगा]
कवर का धन पृथक्। रेलवे स्टेशन लिखें।

घर-घर में वेद पहुंचा कर
वेद-प्रचार सप्ताह मनाएं

प्रध्यक्ष :

दयानन्द-संस्थान

वेद मन्दिर, शहीद लेखराम नगर, दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आज के नेताओं का समग्र क्रांति का नारा अधूरा—एकांगी है—

फिर समग्र क्रांति क्या है ?

आर्य विद्वान् पं० बुद्धदेव विद्यालंकार
द्वारा निर्दिष्ट
समग्र क्रांति का मार्गदर्शन

काया—कल्प

में पढ़िए। काया-कल्प राष्ट्र को नया मार्गदर्शन देगा—

बांटिए : पढ़िए : मंगाइए
मूल्य २) : १५०) सैकड़ा

तुम सा नहीं देखा

सचमुच तुम सा नहीं देखा

दयानन्द जैसा और कौन था ?
उस सा दिव्य—महान् और योगी—

साधु टी. एल. वास्वानी

की महान् अमर गाथा

TORCH BEARER

का हिन्दी अनुवाद

ज्योतिर्मय

महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धा हो तो इसे कम से कम १०० व्यक्तियों तक पहुँचाइए

मूल्य १)५० : १००) सैंकड़ा

दयानन्द संस्थान वेद मन्दिर, दिल्ली-११००३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुन्दर फरनीचर का प्रगतिशील नाम

डिलाईट

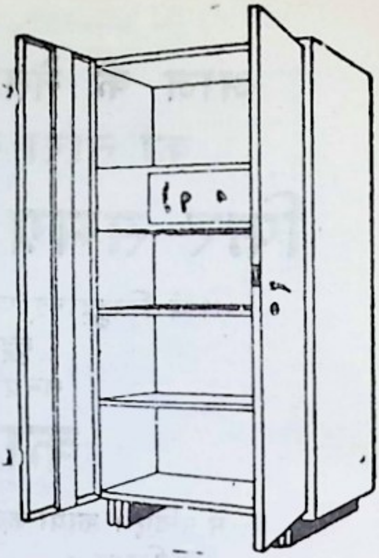

वर्षा उपवन व औरकार्यकुशलता के कारण आज डिलाईटपक्की अलमारियां और फर्नीचर सारे भारत में प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह देखने में सुन्दर, मजबूत टिकाऊ और पक्के रंगों में उपलब्ध हैं। मकान हो या घर, विवाह हो या कोई शुभ अवसर, यह सबकी शोभा बढ़ाता है।
आप भी आज डिलाईट फरनीचर खरीद कर अपने घर, आफिस व दुकान की शोभा बढ़ावें और आनन्द पावें।

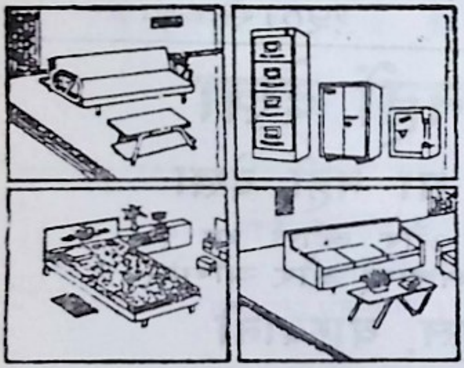

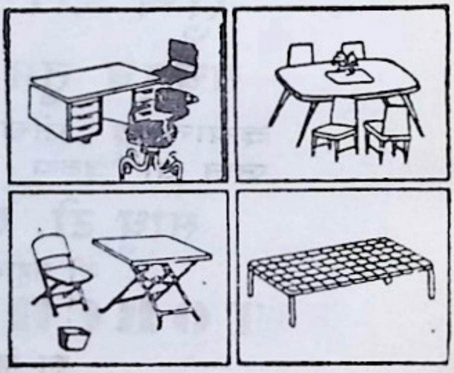

डिलाईट सेफ वर्क्स

कुतुब रोड, दिल्ली-६. फोन 511380

विक्रेता

१. काटेंज स्टोर, २० विनय नगर मार्कीट, नई दिल्ली।
२. काश्मीर क्राकरी हाऊस, लक्कड़ बाजार, लुधियाना।
३. मित्तल ब्रादर्स, सिरकी बाजार, भटिण्डा। ४. निहालचन्द गोपालदास, अबोहर।
५. महेन्द्रा ब्रादर्स, कोर्ट रोड, मोगा।
६. जेम सेल्स कार्पोरेशन, सेक्टर ७-सी दु० नं० ३०, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़।
७. हरयाणा आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज, बाजार हिसारिया, सिरसा।
८. लीला इलैक्ट्रिक कं०, ७० कोतवाली रोड, श्री गंगानगर (राज०)।
९. राणा इण्डस्ट्रीज, लाडपुरा बाजार, कोटा (राज०)।
१०. आदर्श इलक्ट्रिक एण्ड जनरल सप्लायर्ज, नैकोली, नीमच (म० प्र०)।
११. ओवरसीज ट्रेड एजेन्सीज, केसरगंज, अजमेर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

लिंग पुराण में क्या है ?

लेखक :

स्व० श्रीयुत पं० भीमसेन विद्यालङ्कार

सम्पादक

स्व० श्री स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ

दयानन्द उपदेशक विद्यालय,

गुरुदत्त भवन, लाहौर

प्रथमावृत्ति] संवत् १९९९

द्वितीयावृत्ति] संवत् २०३५ मूल्य १)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकाशक :–
पण्डिता राकेशरानी
अध्यक्ष दयानन्द संस्थान
वेद मन्दिर दिल्ली-३६
दूरभाष : ८०१२२१

दिल्ली कार्यालय :
दयानन्द संस्थान वेद मंदिर
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५
दूरभाष : ५६६६३६

लेखक :
स्व० पं० भीमसेन विद्यालंकार

मूल्य : एक रु० : १)

प्रथम संस्करण :
द्वितीय संस्करण : संवत् २०३५

मुद्रक :
बिराट् प्रिंटिंग एजेन्सी
पहाड़ी धीरज, देहली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लेखक के दो शब्द

लिङ्गपुराण की समालोचना को पाठकों के सामने उपस्थित करते हुए—इस समालोचना के प्रेरक भाव के विषय में एक-दो शब्दों का कहना अप्रासङ्गिक नहीं है।

भारतवर्ष में कई सदियों से—पुराण भी वेदों की भांति स्वतः सिद्ध माने जाने लगे थे। विद्वान् लोग इनकी समालोचना करना उचित नहीं समझते थे, परिणामतः यह भी वेदों की भांति स्वतः सिद्ध तथा धर्मग्रन्थ माने जाने लगे।

ऋषि दयानन्द ने इस प्रथा में परिवर्तन किया। ऋषि दयानन्द ने पुराणों को तर्क की कसौटी पर परखा और जनता में इस लहर को प्रचलित किया कि पुराण भी लौकिक संस्कृत साहित्य की भांति मनुष्यकृत हैं, और समालोचना के विषय हो सकते हैं।

ऋषि दयानन्द ने दिग्दर्शन कराने के लिए सत्यार्थप्रकाश में पुराण साहित्य की आलोचना की। अब दिन-दिन यह लहर स्वयं प्रबल हो रही है। अभी तक आर्य विद्वान् तथा उपदेशक केवल मात्र ऋषि दयानन्द कृत पुराण-समालोचना के आधार पर ही पुराणों की छानबीन करते थे। अब सनातनधर्मी पौराणिक पण्डित भी पुराणों की समालोचना करने लगे हैं।

संस्कृत विद्या प्रचार के साथ-साथ आर्यसमाज में भी संस्कृतमूल ग्रन्थों के अनुशीलन करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह पुराणालोचन ग्रन्थमाला इस प्रवृत्ति की प्रदर्शक है। यह समालोचना "वादे वादे जायते तत्वबोधः" "वाद से यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है" की भावना से प्रेरित होकर लिखी गई है।

मैं चाहता हूं कि इस समालोचना को पढ़ कर लिङ्ग पुराण को धर्म ग्रन्थ—या ऐतिहासिक ग्रन्थ मानने वाले सज्जन भी लिङ्ग पुराण का स्वयं अनुशीलन करें और सचाई को जान कर उसका ग्रहण करें।

यह समालोचना आर्यसमाज में संस्कृत साहित्य के अनुशीलन की प्रवृत्ति को बढ़ाने के लिये की गई है। यदि किन्हीं श्रीमानों के हृदयों में इस समालोचना को पढ़ कर, मूल संस्कृत ग्रन्थों के पढ़ने की आकांक्षा पैदा हुई, तो मैं अपने यत्न को सफल समझूंगा।

लाहौर
२ मार्च १९८६ —भीमसेन विद्यालङ्कार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी ओर से

आज सत्य-असत्य के निर्णय करने की प्रवृत्ति समाप्त होती जा रही है। क्या मानना चाहिए, क्या छोड़ना चाहिए, यह चिन्तन भी हमने त्याग दिया है।

हमारे प्राचीन शास्त्रों में जहाँ सत्य, अध्यात्म व लौकिक ज्ञान मार्ग का विशद् आदर्श वैज्ञानिक वर्णन मिलता है, वहाँ विदेशी आक्रान्ताओं व विचारों के प्रभाव से कतिपय ग्रंथ ऐसे भी रचे गए, जिन्हें पढ़कर मन-मस्तिष्क भ्रमित हो जाता है।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही एक ग्रन्थ का विवेचन विद्वान् लेखक ने प्रस्तुत किया है। इसे पढ़कर बहुत से अज्ञान के पृष्ठ स्वयं अपनी कहानी कह सकेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

हमारा उद्देश्य अमृत की धारा को अमृत के रूप में ही प्रस्तुत करना है। किसी के भी मानस को ठेस पहुंचाने का हमारा तनिक भी उद्देश्य नहीं है।

पुस्तक के प्रणेता स्वयं पं० भीमसेन विद्यालंकार भी स्वयं एक आदर्श रत्न थे। वे सत्य के पुजारी और अनुकरणकर्ता ही नहीं अपितु उसके लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने को भी सदा तत्पर रहे। ऐसे व्यक्ति द्वारा नीर-क्षीर विवेक होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

हमारी आस्था है कि 'वेद' को धर्म ग्रंथ मानने वाले सभी राम-कृष्ण के अनुयायी "ओ३म्" पताका के नीचे संगठित हो जाएं और जो आसुरी शक्तियाँ बढ़ रही हैं उनका सामना करें, इसके लिए आत्म शोधन आवश्यक है। शोधन और आलोड़न की दृष्टि से पुस्तक आपको अर्पित है—आप सारे पूर्वाग्रह त्याग इसे पढ़ें, आपको नयी ज्योति के दर्शन होंगे—यह हमारा विश्वास है।

अध्यक्ष	आशीर्वाद के साथ
दयानन्द संस्थान वेद मन्दिर	राकेश रानी पंडित
लेखराम नगर दिल्ली-३६	२१-६-७८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिंग पुराण की आलोचना

(संपादकीय वक्तव्य)

विष्णुपुराण के मत से अष्टादश महापुराणों में लिंग पुराण ग्यारहवां है, शिवपुराण, श्रीमद्भागवत, नारदपुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, वराह पुराण, मत्स्य पुराण, पद्मपुराण तथा स्वयं लिंगपुराण का भी ऐसा ही मत है। देवी भागवत की दृष्टि से यह पंद्रहवाँ हैं, कूर्म्मपुराण की दृष्टि से यह दसवां है, किन्तु मार्कण्डेय की दृष्टि से यह यज्ञ पुराण ही नहीं। बहु सम्मति से इसका महापुराण होना तो सिद्ध हो जाता है, किन्तु मार्कण्डेय पुराण का अनादर तथा अप्रामाण्य होता है, यदि उसको प्रामाणिक मानें, तो अन्यों को अप्रमाण मानना होगा। पुराण भक्तों को इस आपत्ति के वारण करने का कोई उपाय सोचना चाहिए।

वर्त्तमान लिंग पुराण असली नहीं।

मत्स्य में लिखा है—

"यत्राग्निर्लिगमध्यस्थः प्राह देवो महेश्वरः।
धर्म्मार्थकाममोक्षार्थमाग्नेयमधिकृत्य च॥
कल्पान्तं लिंगमित्युक्तं पुराणं ब्रह्मणा स्वयम्।
तदेकादशसाहस्रं फल्गुन्यां यः प्रयच्छति॥

जिस ग्रन्थ में देव महेश्वर ने अग्निर्लिंगमध्यस्थ होकर अग्नि कल्पान्त में धर्म्म, अर्थ, कर्म्म और मोक्षार्थ कथा प्रकाश की थी, एकादश सहस्रयुक्त वह पुराण ही ब्रह्मा द्वारा लिंग नाम से वर्णित हुआ है।" (अष्टादश पुराण दर्पण २७ पृष्ठ) नारद पुराण में भी यह अग्निकल्प, सम्बन्धी कहा गया है—

यच्च लिंगाभिधं तिष्ठन् वह्निलिंगे हरोभ्यधात्।
मह्यं धर्म्मादि सिद्धयन्त अग्निकल्पकथाश्रयम्॥

यह श्लोक भी अ० पु० द० २७९ पुराण से लिया गया है।

किन्तु वर्त्तमान लिंगपुराण में 'ईशानकल्प' सम्बन्धी कहा है।" अष्टादश-पुराण दर्पण" कार श्रीयुत पण्डित ज्वालाप्रसाद मिश्र जी भी ऐसा मानते हैं।

पृष्ठ २८१-२८२ पर वे लिखते हैं—

"प्रचलित लिंगपुराण में ही लिखा है—

ईशान कल्पवृत्तान्तमधिकृत्य महात्मना।
ब्रह्मणा कल्पितं पूर्वंपुराणं लैङ्गमुत्तमम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईशान कल्प बृत्तान्त प्रसंग में पूर्व काल में महात्मा ब्रह्मा द्वारा जो पुराण कथित हुआ था ।।

इससे स्पष्ट सिद्ध है, कि मत्स्य पुराण तथा नारद पुराण को जो लिंगपुराण ज्ञात था, वह प्रचलित लिंग पुराण से अवश्य भिन्न था । श्रीयुत अष्टादशपुराण दर्पण के कर्त्ता श्रीयुत पं० ज्वाला प्रसाद जी को यह बात खटकी है । वे अ० पु० द० पृष्ठ २८२ पर लिखते हैं—

"पूर्व में ही कह चुके हैं, मात्स्य और नारदीयमत से अग्निकल्प प्रसंग में लिंग पुराण और ईशान कल्प प्रसंग में अग्निपुराण वर्णित हुआ है । मत्स्य पु० ५३ अ० ऐसे स्थल में ईशान कल्पाश्रयी लिंग एक है वा नहीं, अधिक सम्भव है बौद्ध-प्रभाव खर्व और ब्राह्मण्यप्रभाव के अभ्युदय के साथ जब पुराणों का पुनः संस्कार होता था, उस समय आग्नेय पुराणोक्त ईशान कल्पकी कथा आकर लिंग पुराणों में प्रविष्ट हुई है और अग्निकल्प का प्रसंग संभवतः अग्निपुराणका विषयीभूत समझकर लिंग में अग्निकल्प की कथा का स्पष्ट उल्लेख नहीं किया ।"

पण्डित जी ने केवल लिंग पुराण का ही खण्डन नहीं किया अपितु साथ ही अग्निपुराण को भी नकली बता दिया है । इतना ही नहीं, पण्डित जी और भी स्पष्ट लिखते हैं—

"तथापि परवर्त्ती काल में शैवलोगों के अभ्युदय में बीच-बीच में शिव की प्रशंसा और विष्णु की कथा भी निवेषित हुई है । आदि पुराण समूह किसी किसी विशेष सम्प्रदाय की सामग्री होने पर भी उस में संप्रदाय वा देवता विशेष की निन्दा की बात नहीं समझी जा सकती । संप्रदाय की द्वैपाद्वैषी में पुराणों में भी ऐसी विद्वेषसूचक श्लोकावली बहुत पीछे प्रविष्ट हुई थी । ऐसे स्थल में सामान्य प्रक्षिप्त श्लोक समूह छोड़ने पर इस लिंग पुराण को एक अति प्राचीन पुराण कहा जा सकता है ।" पृ० २८२

पण्डित जी ने यहाँ एक चतुरता करने का प्रयत्न किया है । गिष्णु की निन्दा न लिखकर 'विष्णु की कथा' शब्द लिखे हैं, ताकि लोग समझें, कि बिष्णु की कथा— उत्कर्ष द्योतक कथा इस पुराण में है, किन्तु इन की पूर्वापर वाक्य रचना ने इनकी चतुराई का भण्डाफोड़ कर दिया है । क्या ही अच्छा होता, यदि पण्डित जी 'प्रक्षिप्त श्लोकावली' यहां लिख देते । अस्तु । इतना भी बहुत है, जो पुराणों में प्रक्षेप को स्वीकार किया है । क्यों कि जब 'प्रक्षेप' को निकालने लगेंगे, तो १८ पुारणों के स्थानों में केवल एक और वह भी छोटा सा पुराण शेष बच रहेगा । श्री पण्डित जी ने इसी पर सन्तोष नहीं किया, इसके आगे वह लिखते हैं—

"अरुणाचलमाहात्म्य गौरीकल्याण, पंचाक्षर माहात्म्य, रामसहस्र, रुद्र माहात्म्य और सरस्वती इत्यादि कई छोटी-छोटी पोथी लिङ्ग पुराण के अन्तर्गत हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके अतिरिक्त वासिष्ठ लैंग नामक एक उप पुराण पाया जाता है। हलायुध का ब्राह्मण सर्वस्व में बृहल्लिग पुराण वचन उद्धृत हुआ है, किन्तु अब यह पुराण नहीं देखा जाता।" पृ० २८२

इन सारे उद्धरणों को देने का प्रयोजन केवल इतना मात्र दिखाना है, कि जिस किसी भी प्रकार से पुराणों के मण्डन के लिये तत्पर हुए पण्डित जी को भी स्वीकार करना पड़ा है कि पुराणों में गड़बड़ है, पुराण के कई श्लोक पुराणों में से निकल गये हैं, और कई और डाल दिये गये हैं। जब ऐसी अवस्था है तो इन में प्रतिपादित धर्म असली पुराण संहिता के हैं, क्यों न इन सब को त्याग कर केवल वेद को धर्म ग्रन्थ मानें, जिसमें एक अक्षर का भी भेद नहीं आया।

प्रकृत आलोचना कल्याण (बम्बई) की छपी पुस्तक पर से की गई है, उसके अन्त के—

'इदं पुस्तकं कल्याण नगर्यां श्रीकृष्णदासात्मजेन गंगाविष्णुना स्वकीये "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" (स्टीम) यन्त्रालयेऽङ्कयित्वा प्रकाशितम्। सम्वत् १९८१ शक १८४६

विशेष कारणों से यह आलोचना संक्षिप्त बनी है। बहुत से विषय तो इसमें नहीं आये।

जिस भावना—आर्य जाति में सुसंस्कार उत्पन्न करने की सम्भावना—से यह आलोचना लिखी गई है, उसी से सज्जन पाठक इसे स्वीकार करें।

विद्वदनुचर
वेदानन्द तीर्थ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विषय सूची

	पृ० संख्या
लेखक के दो शब्द	१—२
सम्पादकीय वक्तव्य	क. ख. ग. घ.
पुराण शब्द की विवेचना	१—६ तक
पौराणिक सम्प्रदाय में लिंग पुराण का स्थान	१०—११
लिंगपुराण का ऐतिहासिक महत्व	११—१२
लिंगपुराण की आलंकारिक व्याख्या	१२—४४
लिंगपुराण का संस्कृत साहित्य पर प्रभाव ...	४५—४८
लिंगपुराण की रचना में दोष	४८—५६
विचारणीय तथा मननीय स्थल	६०—६८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

लिंग पुराण में क्या है ?

संस्कृत साहित्य में पुराण शब्द का इतिहास विशेष महत्व रखता है। पुराण शब्द का इतिहास जाने विना, किसी भी पुराण की समालोचना करना कठिन है। पुराण शब्द का प्रयोग वेदों, ब्राह्मणों तथा काव्यों में भिन्न-भिन्न अर्थों में पाया जाता है। वेद संहिताओं में पुराण शब्द का 'अष्टादश पुराण ग्रन्थ' अर्थ सम्भव ही नहीं हो सकता है। क्योंकि सब विद्वान् इस बात में सहमत हैं कि वैदिक साहित्य व संस्कृत साहित्य में वेद संहिताएं, रचना काल या आविर्भाव काल की दृष्टि से सबसे पुरानी है। संस्कृत साहित्य के किसी भी ग्रन्थ में—ब्राह्मणों या पुराणों में यह नहीं लिखा कि वेदों का आविर्भाव अब हुआ है। वेद संहिताओं के आविर्भाव के समकाल में किसी भी प्रकार के पुराण ग्रन्थ के अस्तित्व को आज तक, जहां तक हमारा ज्ञान है, किसी भी विद्वान् ने स्वीकार नहीं किया। इसलिए यदि कोई सम्प्रदायी पौराणिक भाई वेद के किसी मन्त्र से पौराणिक गाथाओं का निर्देश लेकर पुराणों के प्राचीनत्व को सिद्ध करना चाहे, तो उनके समक्ष उपरिलिखित स्थापना करनी चाहिए।

कई जैनी भाई वेद में 'ऋषभ' शब्द का प्रयोग देख कर, जैन सम्प्रदाय की प्राचीनता के साथ-साथ जैन पुराणों के प्राचीनत्व को भी सिद्ध करने का यत्न करते हैं। उनके प्रयत्न का उत्तर भी पूर्वोक्त युक्ति व तर्क से दिया जाना चाहिए। भाव यह है कि वेद संहिताओं में आए पुराण शब्द का किसी भी प्रचलित पुराण ग्रन्थ से सम्बन्ध नहीं है।☼

वेदों के बाद ब्राह्मणों, उपनिषदों, मनु धर्मशास्त्र तथा रामायण और महाभारत में आए हुए पुराण शब्द के अर्थ पर विचार करने की आवश्यकता है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में निर्दिष्ट या पठित पुराग शब्द का अर्थ क्या है इसके सम्बन्ध में अपनी राय न देकर, हम सायणाचार्य के शब्दों में ही इसका अर्थ पाठकों के सामने रखेंगे।

☼ अष्टादश पुराण दर्शन में "ऋचा: सामानि छंदांसि पुराणं यजुषा सह"। अथर्व. ११।७।२४।

तमितिहासं च पुराणश्च गाथाश्च नाराशंसीरिति ।। अथर्व का. १५।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐतेरेय ब्राह्मण की व्याख्या करते हुए, उपक्रम में सायणाचार्य लिखते हैं—

"देवासुराः संयत्ता आसन्नित्यादय इतिहासाः, इदं वा अग्रे नैव किञ्चिदासीदित्यादिकं जगतः प्रागवस्थामुपक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम् ।"

इसका अर्थ इस प्रकार है—

'देवासुरा संयत्ता आसन्निति' आदि मनुष्य की मनोवैज्ञानिक वृत्तियों का वर्णन करने वाले वाक्य इतिहास कहे जाते हैं। क्योंकि मनोवैज्ञानिक सचाईयाँ मनुष्य के जीवन में इतिहास की अन्य घटनाओं की तरह बार बार दोहराई जाती हैं। 'इदं वा अग्ने—' आदि सृष्टि प्रक्रिया तथा सृष्टि रचना का वर्णन करने वाले वाक्य पुराण कहे जाते हैं।"

सायणाचार्य भी यही मानते हैं कि वेदों और ब्राह्मणों में जहां-जहां पुराण शब्द आता है उसका अर्थ सृष्टि ज्ञान वर्णन करने वाले वाक्यों से है, किसी ग्रन्थ-विशेष से नहीं।

उपनिषदों में—बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य में ही पुराण शब्द का प्रयोग विशेष रूप से मिलता है। परन्तु इन उपनिषदों के ब्राह्मणों के साथ विशेष रूप से सम्बद्ध होने से पूर्व सा अर्थ समझना चाहिए। अन्य उपनिषदों—में कठ आदि में—पुराण शब्द का प्रयोग—जीवात्मा के लिए भी किया गया है। उनमें भी ग्रन्थ विशेष को लक्ष्य करके पुराण शब्द का प्रयोग नहीं किया गया।

उपलभ्यमान मनुस्मृति में भी पुराण शब्द आजकल के प्रचलित अर्थों में प्रयुक्त नहीं किया गया। मानव धर्म शास्त्र का निर्माण ब्राह्मणों से पूर्व या उनके समय में ही हुआ था। इसके बाद जब हम वाल्मीकि रामायण का अध्ययन करते हैं तो वहां पुराण शब्द के सम्बन्ध में हमें इस प्रकार का परिचय प्राप्त होता है—

उपलभ्यमान वाल्मीकि रामायण में लौकिक पुराणों में प्रचलित कथाओं का वर्णन तो मिलता है परन्तु सारे रामायण ग्रंथ में ग्रंथ वाचक पुराण शब्द का पाठ कहीं नहीं है। जिस समय हनुमान् सुग्रीव का राजदूत बन कर, रामचन्द्रजी के

इन मन्त्रों में आए हुए पुराण शब्द द्वारा पुराणों की प्राचीनता सिद्ध करने का यत्न किया गया है। पुराण शब्द की यौगिक व्युत्पत्ति 'पुरा च नवश्च' से की जाती है। इसका अभिप्राय यह है कि जो सदा एक सा रहे। प्रथम मन्त्र में "पुराणं यजुषा" शब्द का अर्थ नित्य एकरस यजुर्वेद से है।

दूसरे मन्त्र भाग में भी एक वचन व जातिवाची पुराण शब्द का भाव किसी ग्रन्थ विशेष से नहीं लिया जा सकता। यह एक विशेष प्रकार के ज्ञान का निदर्शक है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पास आता है, उस समय हनुमान् की विद्वत्ता का वर्णन करते हुए वेदों और व्याकरणादि शास्त्रों के नामकीर्तन के साथ हमें पुराण शब्द का पाठ नहीं मिलता। वाल्मीकि रामायण का माहात्म्य दिखाते हुए, आम काव्य शब्द से ही उसकी प्रशंसा की है, पुराण ग्रन्थों में उसकी परिगणना नहीं की गई। शिवपुराण आदि की कथाएँ वाल्मीकि रामायण में मिलती हैं। पुराणान्तर्गत कथाओं और रामायणान्तर्गत कथाओं के संविधान की तुलना करने से पता लगता है कि रामायण के काव्य लेखक ने इन कथाओं को लौकिक इतिहास के ढंग पर वर्णन किया है। पुराणों में कथाओं के नायक को ईश्वरीय अवतार का रूप दिया गया है। राम का चरित्र वर्णन गुणशाली पुरुष की भांति किया गया है, अवतारी पुरुष समझ कर उसका वर्णन नहीं किया गया। इसलिये वाल्मीकि रामायण द्वारा, प्रचलित पुराणों के महत्व को सिद्ध करना ठीक नहीं।

रामायण के बाद, महाभारत का इतिहास या महाकाव्य हमारे सामने उपस्थित होता है। महाभारत के तीन रूप हैं। प्रथम रूप का नाम 'जय' है। इसके लेखक व्यास थे। यही जय नामक ग्रन्थ भारत युद्ध का वर्णन करता है। दूसरा रूप "भारत" नाम से प्रचलित होकर प्रसिद्ध है। इसके संग्रह कर्ता या बनाने वाले व्यास के शिष्य वैशम्पायन थे। तीसरे रूप का नाम "महाभारत" है। इसके रचयिता सौति थे। जय और भारत में पौराणिक गाथाओं की सत्ता स्वीकार करने के लिये कोई पुष्ट प्रमाण नहीं है। 'जय' श्लोक बद्ध ग्रन्थ था।

एतावत्पर्वशतं पूर्वं व्यासेनोक्तं महात्मना।
यथावत्सूतपुत्रेण लोमहर्षणिना ततः
उक्तानि नैमिषारण्ये पर्वाण्यष्टादशैव तु॥

(आ-अ-२-२४)

व्यास ने सौ पर्व के ग्रन्थ का निर्माण किया। उसके बाद नैमिषारण्य में सूत पुत्र लोमहर्षणि ने १८ पर्वों का निर्माण किया।

इस श्लोक से सिद्ध होता है कि वर्तमान समय के १८ पर्व सौति ने बनाये हैं, भारतीय संस्कृति-साहित्य के विद्वान् इस बात पर सहमत हैं। संस्कृत साहित्य के प्रचलित रीति रिवाज इसके समर्थक हैं कि सौति की महाभारत से ही वर्तमान समय के १८ पुराणों का विकास हुआ है। व्यास और भारत के कर्ता (जनमेजय के समकालीन) वैशम्पायन के समय पौराणिक धर्म की उत्पत्ति हुई थी। अतः वह उस धर्म के ग्रन्थ की रचना नहीं कर सकते।

परन्तु जैन धर्म तथा बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद जब वेद निन्दक लोगों ने रही सही भारतीय धार्मिक प्रथाओं को नष्ट करने का यत्न किया, उस समय के विद्वान् ब्राह्मणों ने लोगों की प्रवृत्तियों को देखकर जैनियों तथा बौद्धों के अनुकरण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में पुराणों और अवतारों की कल्पना की। जैन तथा बौद्ध लोगों ने जिन नये साधनों द्वारा वैदिक धर्म की निन्दा करके, अपने विचारों को फैलाने का उपक्रम बांधा था, ब्राह्मणों ने भी वही ढंग स्वीकार किया। भाव यह है कि जैन तथा बौद्ध धर्म के बाद पौराणिक धर्म की सृष्टि हुई। तभी पुराणों की रचना, या उनका 'महाभारत में संनिवेश हुआ। प्रसिद्ध विद्वान् श्री नरसिंह चिन्तामणि वैद्य ने भी अपनी 'महाभारत मीमांसा' पुस्तक में यही निर्णय किया है। वर्तमान युग के अद्वितीय समन्वयवादी आचार्य दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश में पौराणिक धर्म तथा पुराणों की रचना के सम्बन्ध में ऐसे ही विचार प्रकट किए हैं। ऋषि दयानन्द व्यास व वैशम्पायन को -राणों का कर्ता नहीं मानते। व्यास भगवान् ने जिन वेदान्त सूत्रों की रचना की है उनमें भी पुराणों का नाम-निर्देश कहीं दिखाई नहीं देता। गीता के दार्शनिक विचारों वाले श्लोकों में भी (जो कि महाभारत समुद्र में उज्ज्वल रत्नों की भांति चमक रहे हैं) पुराणों का नाम निर्देश कहीं भी दिखाई नहीं देता। श्री कृष्ण भगवान् कहते हैं कि 'मैं वेदों में साम वेद हूं, पाण्डवों में धनंजय हूं।' परन्तु यह कहीं नहीं कहा कि मैं भागवत हूं या शिवपुराण। सारे विवेचन का निचोड़ यह है कि भारत युद्ध के समय इस देश में पुराण नाम से कोई धर्मग्रन्थ प्रचलित नहीं थे।

भारतीय युद्ध के वाद, संस्कृत साहित्य में शुक्रनीति और चाणक्य कृत कौटिल्य-अर्थ शास्त्र तथा कामन्दकीय नीति शास्त्र भारतीय विचारों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

कौटिल्य अर्थशास्त्र में पुराण नाम से व्यवहृत ग्रन्थ को इतिहास शब्द के अन्तर्गत समझा जाता था। "पुराणमितिवृत्तमाख्यायिकोदाहरणं धर्मशास्त्रमर्थशास्त्रं चेतीतिहासः" कौटिल्य अर्थशास्त्र पृ० १० वृद्ध संयोग प्रकरण में :—

"पुराण इतिवृत्त धर्मशास्त्र अर्थशास्त्र आख्यायिका उदाहरण यह सब विचार इतिहास शब्द के अन्तर्गत हैं।"

शुक्रनीति के प्रथम अध्याय में यह श्लोक विचारणीय है—

अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः।
धर्मशास्त्रं पुराणानि त्रयीदं सर्वमुच्यते ॥१५५
इतिहासाः पुराणानि स्मृतयो नास्तिकं मतम्।

श्लोक २९ शु० अध्याय चतुर्थ, तृतीय प्रकरण।

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं यस्मिन्पुराणं तद् विकीर्तितम् ॥

शु० अ० ४। वृ० प्रकरण श्लो० ५३।

शुक्र नीति में आए पुराण शब्द का अर्थ श्लोक ५३ से हो जाता है। सृष्टि प्रलय वंशावलियां मन्वन्तर आदि का जिस में वर्णन हो वह पुराण है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमर कोष प्रथम काण्ड शब्दादि वर्ग में "पुराणं पंचलक्षणम्" शब्द से पता लगता है कि इस समय पुराण शब्द ग्रन्थवाचक अर्थ में प्रयुक्त होने लग गया था। परन्तु आश्चर्य इस बात पर होता है कि अमरकोष में वर्तमान समय में प्रचलित १८ पुराणों में से किसी एक पुराण का नाम भी नहीं लिखा गया। यह आश्चर्य तब और भी अधिक बढ़ जाता है जब हम इसी कोष के प्रथम काण्ड के प्रारम्भ में ही पुराणों में वर्णित देवी देवताओं के नाम देखते हैं। इन देवी-देवताओं में पौराणिक देवी-देवताओं के अलावा 'जिन' और 'बुद्ध' का नाम भी लिखा गया है। मालूम यह होता है कि अमरकोष का निर्माण उस समय हुआ था जब भारत के ब्राह्मण धीरे-धीरे जैनों और बौद्धों के अनुकरण में देवी-देवताओं की कल्पनाएं कर रहे थे। अमरकोष के लेखक अमरसिंह विक्रमादित्य के नवरत्नों में से थे। गुप्त वंश के इस विक्रमादित्य ने उज्जैनों में प्राचीन वैदिक धर्म को प्रचलित करने के लिए, संस्कृत साहित्य को जीवित जागृत बनाने का यत्न किया था। हमारी सम्पति में वर्तमान समय में उपलभ्यमान पुराणों का निर्माण इसी गुप्त वंश से प्रारम्भ होता है।

निश्चित सदी की निश्चित तिथि निर्दिष्ट नहीं की जा सकती। परन्तु यह कहने में हमें जरा भी संकोच नहीं कि गुप्त वंश के शासन काल के बाद ही भारत वर्ष में पौराणिक साहित्य का जन्म हुआ था। सौति ने महाभारत के १८ पर्वों का निर्माण करके, पीछे आने वाले लेखकों के लिये उदाहरण पेश कर दिया था। महाभारत की भांति पुराणों में भी संसार भर की सब चीजें मिल जाती हैं। इसी समय से जैन आदि मत मतान्तरों के मुकाबले में इन ग्रन्थों को धार्मिक ग्रन्थ का स्थान प्राप्त हुआ।

इसी समय जैन तथा बौद्ध साहित्य के प्रचार के कारण वेद विद्या के लुप्त होने पर, वेद भाषा को भूल जाने पर, प्राचीन वैदिक धर्म के विद्वानों को पुराणों के निर्माण करने की आवश्यकता हुई। इसी समय से वेदों के स्थान पर पुराणों को धर्मग्रन्थ का रूप दिया जाने लगा। यदि पुराणों को धर्म-ग्रन्थ न मानकर साहित्य के मिश्रित विषयों का विवेचक ग्रन्थ माना जाय तो हमें कोई आपत्ति नहीं।

ऋषि दयानन्द ने भी पुराणों का जो खंडन किया है उसका भाव यही है कि भारतवासी या विचारशील सज्जन पुराण को श्रुतिस्थानीय या श्रुतिसमकक्ष धर्मग्रन्थ न मानें। हमारे इस विवेचन का उद्देश्य यही है कि लिङ्ग पुराण सम्बन्धी अन्तरंग तथा बाह्य प्रमाणों से जनता के सामने यह बात रखें कि लिङ्गपुराण धर्म ग्रन्थ है या नहीं। इस सामान्य विवेचना द्वारा हमने सामान्यतया सब पुराणों के विषय में विचार किया है। अब हम लिङ्ग पुराण के विषय में विशेष विचार करेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पौराणिक सम्प्रदायों में लिंग पुराण का स्थान

भागवत आदि सम्प्रदाय, भागवत पुराण को धर्म ग्रन्थ मान कर अपना कार्य्य निवाह करते हैं। लिंग पुराण को अपना धर्मग्रन्थ मानने वाला कोई सम्प्रदाय नहीं दिखाई देता। लिंग पुराण का मुख्य आराध्यदेव शिव है। इन शिव महाराज की अर्चना तथा वन्दना के लिये शिव पुराण के समग्रभाग अर्पित हैं। पौराणिक सम्प्रदायों की दृष्टि से हम कह सकते हैं कि पौराणिक सम्प्रदायों में लिङ्ग पुराण का विशेष स्थान नहीं है। यदि आज भारत वर्ष से या संस्कृतवाङ्मय से लिङ्ग पुराण ग्रन्थ मिट जाय तो इससे किसी सम्प्रदाय की क्षति नहीं होगी। लिङ्ग तथा शिव लिङ्ग की पूजा करने वाले अपनी भक्ति भावनाओं को शिव पुराण की कथाओं तथा स्तुतियों से तृप्त कर लेंगे।

१८ पुराणों को पौराणिक धर्म के पण्डितों ने सात्विक राजस तथा तामस तीन विभागों में विभक्त किया हुआ है। इस विचारक्रम में लिङ्ग पुराण तथा शिव पुराण को अन्य कुछेक पुराणों के साथ तामस पुराणों की श्रेणी में परिगणित किया गया है।

लिंग पुराण का ऐतिहासिक महत्व

यदि पौराणिक सम्प्रदाय की दृष्टि से लिंग पुराण का कोई महत्व नहीं, तो सम्भावना की जा सकती है कि शायद ऐतिहासिक दृष्टि से इसका कोई विशेष उपयोग हो, विशेष कर, इस पुराण से भारत के इतिहास पर विशेष प्रकाश डलता है। इस सम्बन्ध में हमने जहाँ तक इस पुराण का अनुशीलन किया है, हमें इसमें भारतीय इतिहास के सम्बन्ध में कोई नयी बात या नयी महत्वपूर्ण घटना का (जिसका दूसरे पुराणों में वर्णन न हो) क्रमबद्ध वर्णन नहीं मिलता। यह मत केवल हमारा ही नहीं है। पुराणों के आधार पर, भारतीय इतिहास का निर्णय करने का यत्न करने वाले श्रीयुत पारजीटर महोदय भी हमारी स्थापना का समर्थन करते हैं। पारजीटर महोदय Dynasties of the Kali age की भूमिका में लिखते हैं :—

Accounts of the dynasties that reigned in India during the Kali age are found in Matsya, Vayu. Brahmanda. Vishnu, Bhagvata Garuda and Bhavishya Puranas.

अर्थात् भारत में राज करने वाले राजवंशों का विवरण मत्स्य, वायु, ब्रह्माण्ड, विष्णु, भागवत, गरुड़, और भविष्य पुराण में उपलब्ध होता है।

इस स्थापना से यह स्पष्ट है कि ऐतिहासिक दृष्टि से इन्हीं पुराणों की उपयोगिता है अन्य लिङ्गपुराण तथा शिवपुराण आदि की नहीं। अब शेपात्—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिङ्गपुराण की आलङ्कारिक व्याख्या के सम्बन्ध में ही कुछ विचार करना चाहिए। इसी प्रकार से हम लिङ्ग पुराण की समालोचना कर सकेंगे।

लिङ्गपुराण की आलङ्कारिक व्याख्या

वर्तमान समय में जिस लिङ्ग की मन्दिरों में पूजा होती है, यह लिङ्ग दृश्यमान मूर्ति है। इसकी पूजा तथा इसका निर्माण कई प्रकार से किया जाता है। लिङ्गपुराण में इसका विशेष वर्णन उत्तरार्ध में मिलता है। अथवा शिवार्चन-चन्द्रिका, तथा तत्व प्रकाशिका जैसे ग्रन्थों में इसकी पूजा आदि का विशेष विवरण मिलता है। वर्तमान समय में एकलिङ्ग जी के मन्दिरों अथवा नैपाल जैसे पहाड़ी देशों में लिङ्ग पूजा या पशुपति पूजा के विशेष प्रचार के साथ-साथ पूजनीय धातु या मृत्तिका से बने लिङ्ग मिलते हैं। लिङ्ग पुराण तथा अन्य ग्रन्थों के अध्ययन से हम इस निश्चय पर पहुंचे हैं कि लिङ्ग शब्द किसी भाव-विशेष को द्योतित करता है। लिङ्ग पूजा का भाव पत्थर निर्मित लिङ्ग पूजा से नहीं था। प्रारम्भ में लिङ्ग शब्द का प्रयोग, उसका चिन्तन तथा ध्यान दृश्यमान पत्थर निर्मित लिङ्ग से भिन्न पदार्थ के लिए होता था। लिङ्ग शब्द का क्या भाव था इसके सम्बन्ध में हम स्वयं न लिख कर लिङ्ग पुराण के प्रमाण ही पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं :—

ऋषयः ऊचुः —

कथं लिङ्गमभूल्लिङ्गे समभ्यर्च्यः स शङ्करः।
किं लिङ्गकस्तथा लिङ्गी सूत ! वक्तुमिहार्हसि ॥

रोमहर्षण उवाच :—

एवं देवाश्च ऋषयः प्रणिपत्य पितामहम्।
अपृच्छन् भगवल्लिंङ्गं कथमासीदिति स्वयम् ॥
लिङ्गे महेश्वरो रुद्रः समभ्यर्च्यः कथं त्विति।
किं लिङ्गकस्तथा लिङ्गी सोप्याह च पितामहः ॥

पितामह उवाचः—

प्रधानं लिङ्गमाख्यातं लिङ्गी च परमेश्वरः ॥

लिंग पुराण पूर्व भाग १७ अ० के ५ श्लोक

ऋषयः—शङ्कर की लिङ्ग पूजा का क्या भाव है? कौन लिङ्ग है, कौन लिङ्गी है? हे सूत ! इसका वर्णन करो।

रोमहर्षणः—एक वार देवों ने प्रजापति से यही प्रश्न पूछा था।

पितामह ने उत्तर दिया था :—प्रधान प्रकृति लिङ्ग नाम से कही जाती परमात्मा लिङ्गी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिङ्गपुराण के टीकाकार भी व्याख्या करने से पूर्व भूमिका में इसी भाव को प्रकट करते हैं—

प्रधानं हि शिवादेवी प्रकृतिः सा निगद्यते।
पूर्षु देहेषु या शेते पुरुषः पञ्चविंशकाः॥
जीवो गजाननो ज्ञेयो गणेशस्तु स्मृतो यतः॥☼

आगे टीकाकार लिखते हैं कि "अस्मिंस्तु शिव एव परमात्मेति बहुशः उक्तं श्रोतृणां स्फुटं भविष्यति' इस लिङ्ग पुराण में शिव शब्द का प्रयोग परमात्मा के लिये किया गया है यह बात विद्वान् पाठकों को स्पष्ट दिखाई देगी।

लिङ्गपुराण का प्रारम्भ नारद की यात्रा से किया गया है। वर्णन किया गया है कि नारद संगमेश्वर शुक्रेश्वर आदि स्थानों में शङ्कर तथा उसके लिङ्गो की पूजा करके नैमिषारण्य में पहुंचे। वहां देवसभा लगी थी। इतने में रोमहर्षण नाम का सूत उस सभा में पहुंचा। देवों तथा ऋषियों ने रोमहर्षण से लिङ्गपुराण की कथा करने की प्रार्थना को। सूत नारद ब्रह्मादि को नमस्कार कर के लिङ्गों-त्पत्ति का वर्णन श्लोकों से करते हैं। यदि हम इन श्लोकों पर विशेष विचार करें तो पता लग जायगा कि सूत या होमहर्षण जिस लिङ्ग का माहात्म्य दिखा रहे हैं वह लिङ्ग आज कल मन्दिरों में उपलब्ध लिङ्ग से बिलकुल भिन्न है। इन श्लोकों के पढ़ने से पता लगता है कि जिस प्रकार आजकल भी साधारण लोग कहते हैं कि प्राकृतिक जगत् की घटनाएं किसी वड़ी शक्ति का (लिङ्ग) सूचक हैं। उसी प्रकार यहां यह कहा गया है नारद ने संगमेश्वर तथा शुक्रेश्वर आदि के दर्शन किये, यह क्षेत्र भी लिङ्ग है।

क्योंकि इन क्षेत्रों के प्राकृतिक सौन्दर्य को देखकर, परमात्मा की स्मृति हृदय में जागृत हुए बिना नहीं रहती। सूत उवाच :

नमस्कृत्य महादेवं ब्रह्माणं च जनार्दनम्।
मुनीश्वरं तथा व्यासं वक्तुं लिङ्गं स्मराम्यहम्॥१८॥
शब्दब्रह्मतनुं साक्षाच्छब्दब्रह्मप्रकाशकम्।
वर्णावयवमव्यक्तलक्षणं बहुधा स्थितम्॥१९॥
अकारोकारमकारं स्थूलं सूक्ष्मं परात्परम्।
ओङ्काररूपमृग्वक्त्रं सामजिह्वासमन्वितम्॥२०॥
यजुर्वेदमहाग्रीवमथर्वहृदयं विभुम्।
प्रधानपुरुषातीतं प्रलयोत्पत्तिवर्जितम्॥२१॥

☼ प्रधान, प्रकृति, शिवा यह सब समानार्थक हैं। प्रत्येक देह में रहने वाला पच्चीसवां तत्व आत्मा 'पुरुष' कहलाता है। इसी को जीवात्मा, गणेश और गजानन नाम से कहते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तमसा कालरुद्राख्यं रजसा कनकाण्डजम् ।
सत्त्वेन सर्वगं विष्णु निर्गुणत्वे महेश्वरम् ।।२२।।
प्रधानावयवं व्याप्य सप्तधाधिष्ठितं क्रमात् ।
पुनः षोडशधा चैव षड्विंशकमजोद्भवम् ।।२३।।
सर्गप्रतिष्ठासंहारलीलार्थं लिङ्गरूपिणम् ।
प्रणम्य च यथान्यायं वक्ष्ये लिङ्गोद्भवं शुभम् ।।२४।।

लिंग पुराण—पूर्व भाग—अध्याय प्रथम

ईशानकल्पवृत्तान्तमधिकृत्य महात्मना ।
ब्रह्मणा कल्पितं पूर्वं पुराणं लैङ्गमुत्तमम् ।।
ग्रन्थकोटिप्रमाणं तु शतकोटिप्रविस्तरे ।
चतुर्लक्षेणसंक्षिप्ते व्यासैः सर्वान्तरेषु वं ।।
व्यस्तेष्टा दशधा चैव ब्रह्मादौ द्वापरादिषु ।
लिङ्गमेकादशधा प्रोक्तं मया व्यासाच्छ्रुतं च तत् ।।
अस्यैकादशसाहस्रे ग्रन्थमानमिह द्विजाः ।
तस्मात्संक्षेपतो वक्ष्ये न श्रुतं विस्तरेण यत् ।।
चतुर्लक्षेणसंक्षिप्ते कृष्णद्वैपायनेन तु ।
अथैकादशसाहस्रैः कथितो लिङ्गसम्भवः ।।

लिंग पुराण अध्याय २

सूत कहता है :

महादेव, ब्रह्मा, जनार्दन और मुनीश्वर व्यास को नमस्कार करके मैं लिंग का वर्णन करता हूं। यह लिंग ही शब्द ब्रह्म का प्रकाशक है। यही अनेक वर्ण के रूप में अव्यक्त रूप से प्रकट होता है। यह लिंग वेदमय है, ओंकारमय है। प्रकृति से परे प्रलय का कारण है। संसार की सृष्टि तथा प्रलय के लिये ही लिंग रूप धारण करता है।

व्यास ने विस्तृत लक्ष श्लोकों वाले लिंग पुराण की रचना की थी, मैं संक्षिप्त लिंग पुराण की कथा करता हूं।"

प्रथमाध्याय के इन श्लोकों का भाव यह है कि यजुर्वेद आदि के मूल कारण, सृष्टि प्रलय तथा स्थिति के लिये प्रकृति रूप में नाना चित्र रूपों को धारण करने वाले को नमस्कार करके, लिंग पुराण का वर्णन किया गया है। 'षड्विंशकजोद्-भवम्' की व्याख्या करते हुए लिंग पुराण के टीकाकार निम्न लिखित श्लोक से बताते हैं कि उनका ध्येय प्रतिपाद्य विषय कौन है ?

इह षड्विंशको ध्येयो ध्याता वै पञ्चविंशकः ।
चतुर्विंशकमव्यक्तं महदाद्यास्तु सप्त च ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महांस्तथा त्वहंकारं तन्मात्रं पंचकं पुनः।
कर्मेन्द्रियाणि पंचैव तथा बुद्धीन्द्रियाणि च।
मनश्च पञ्च भूतानि शिवः षड्विंशकस्ततः॥

इस लिंग पुराण में २६ तत्वों से युक्त पुरुष प्रतिपाद्य विषय का ध्येय है। ७ महदादि तत्त्व ५ अहंकार तन्मात्रा ५ कर्मेन्द्रियाँ, ५ ज्ञानेन्द्रियां, मन, बुद्धि, आत्मा तथा परमात्मा स्वयं ही इस पुराण में विचारणीय लक्ष्य है।

लिंग पुराण का ध्येय देव परमात्मा है। इसी प्रकार ऊपर के उद्धरण में द्वितीय अध्याय के श्लोकों में 'ईशान कल्प वृत्तान्तम्' श्लोक में बताया है कि ब्रह्मा ने लिंग पुराण का निर्माण ईशान कल्प की सृष्टि का वर्णन करने के लिए किया है। इस श्लोक के अनुसार लिंग पुराण का प्रतिपाद्य विषय ईश्वर तथा कल्प सृष्टि का वर्णन करना है। वर्तमान प्रचलित लिंगपूजा का कहीं निर्देश नहीं। इस का विषय उद्देश्य में कहीं परिगणन नहीं किया गया।

इन श्लोकों से यह भी पता लगता है कि वर्तमान समय में उपलभ्यमान लिंग पुराण असली लिंग पुराण नहीं। मूल पुराण ब्रह्मा ने बनाया था, उसका संक्षेप व्यास ने किया। वर्तमान पुराण का निर्माण सूत रोमहर्षण ने किया।

इसी वर्तमान लिंगपुराण का विषय वर्णन करते हुए ब्रह्मोत्पत्ति तथा व्यासावतार के बाद लिंगोत्पत्ति तथा लिंगाराधन लिंगस्नान का वर्णन किया गया है। इस विषय-क्रम से पता लगता है कि लिंगोद्भव लिंगस्नान तथा लिंगाराधन आदि की प्रथाएं ब्रह्मा तथा व्यासावतार के बाद प्रचलित हुई हैं। यदि यह बातें लिंग पुराण की आवश्यक नित्य सनातन अंग थीं तो इनका वर्णन सबसे पूर्व, ब्रह्मोत्पत्ति व्यासावतार से पूर्व होना चाहिए।

विवेचन का भाव यह है कि लिंगपुराण का उपक्रम पत्थरमयी लिंग पूजा से नहीं किया गया है। इसका उद्देश्य तथा प्रारम्भ परमात्मा के सृष्टि-उत्पत्ति स्थिति सम्बन्धी स्वरूप के वर्णन से किया गया है। वर्तमान प्रचलित लिंग पूजा का वर्णन सूत या रोमहर्षण नाम के सूत द्वारा किया गया है। ब्रह्मा तथा व्यास के नाम से प्रचलित लिंग पुराणों की विषय चर्चा में इसका निर्देश नहीं पाया जाता।

सं०—लिंगोत्पत्ति तथा लिंग का स्वरूप क्या है इसका स्पष्ट वर्णन, विष्णु और ब्रह्मा की पारस्परिक लड़ाई के बाद किया गया है। विष्णु और ब्रह्मा आपस में इस बात पर लड़ रहे थे कि दोनों में कौन बड़ा है। इतने में दोनों के सामने एक तत्व प्रकट हुआ। वही लिंग कहा गया है। दोनों में शर्त लगी कि जो इस लिंग का पता लाएगा कि यह कौन है और कहां तक फैला हुआ है, वही बड़ा होगा। विष्णु लिंग का पता लगाने के लिए पाताल की तरफ गया। ब्रह्मा ऊपर की ओर। दोनों को कुछ पता नहीं लगा। दोनों थक गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दोनों की तपस्या तथा स्तुति से प्रसन्न होकर लिंग ने दर्शन दिए। इस प्रकरण में लिंग का जो वर्णन किया गया है उस पर विशेष विचार करना चाहिए। इस विवरण से भी यही पता लगता है कि लिंग का अभिप्राय पत्थर के लिंग से नहीं, अपितु परमात्मा से है—

आवयोश्चाभवद्युद्धं सुघोरं रोमहर्षणम्।
प्रलयार्णवमध्ये तु रजसा बद्धवैरयोः॥
एतस्मिन्नन्तरे लिंगमभवच्चावयोः पुरः।
विवादशमनार्थं हि प्रबोधार्थं च परस्परम्॥
ज्वालामालासहस्राढ्यं कालानलशतोपमम्।
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तमादिमध्यान्तवर्जितम्॥
अनौपम्यमनिर्देश्यमव्यक्तं विश्वसम्भवम्॥
तस्य ज्वाला सहस्रेण मोहितो भगवान् हरिः॥

लिं. पूर्व भाग. १७ अध्याय ३५ श्लोक

विष्णु और ब्रह्मा के सामने आदि मध्य से हीन, चमकता हुआ लिंग प्रकट हुआ। इस अध्याय के पौर्वापर्य प्रसंग के अध्ययन से पता लगता है कि यह प्रकृति की विशेषावस्था का नाम है। परन्तु इतना स्पष्ट है कि वर्तमान समय में लिंग नाम से पूजनीय पदार्थ का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। जब दोनों थक गए तब उन्होंने क्या देखा :

पृष्ठतः पार्श्वतश्चैव चाग्रतः परमेश्वरम्।
प्रणिपत्य मया सार्धं सस्मार किमिदं त्विति॥
तदा समभवत्तत्र नादो वै शब्दलक्षणः।
ओमोमिति सुरश्रेष्ठः सुव्यक्तः ऽलुतलक्षणः॥
लिंगस्य दक्षिणे भागे तदा पश्यत्सनातनम्।
आद्यवर्णमकारं तु उकारं चोत्तरे ततः॥

लिं. पु. पूर्व. अ. १७,।५० श्लोक।

भावार्थ :—तब विचारने पर पता लगा कि "यह ओम् रूप परमात्मा है।"

दोनों ने थक कर, अपने आप को उस महाप्रभु सर्वदेव भव के सामने समर्पित कर दिया। वहां उन्होंने लिंग के दाईं बाईं तरफ वर्णमाला को देखा।

प्रणम्य भगवान् विष्णुः पुनश्चापश्यदूर्ध्वतः।
ओंकारप्रभवं मन्त्रकलापञ्चकसंयुतम्॥
शुद्धस्फटिकसंकाशं शुभाष्टत्रिंशदक्षरम्।
मेधाकारमभूद्रूपः सर्वधर्मार्थसाधकम्॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गायत्रीप्रभवं मंत्रं हरितं वश्यकारकम् ।
चतुर्विंशति वर्णाढ्यं चतुष्फलमनुत्तमम् ।।
यजुर्वेदसमायुक्तं पञ्चत्रिंशच्छुभाक्षरम् ।
कलाष्टकसमायुक्तं सुश्वेतं शाक्तिकं तथा ।।

० ० ०

सामोद्भवं जगत्पाद्यं वृद्धिसंहारकारणम् ।।
अथ दृष्ट्वा कलावर्णमृग्यजुःसामरूपिणम् ।
ईशानमीशमुकुटं पुरुषाख्यं पुरातनम् ।।

लिं. पु. पूर्व भाग १७ अध्याय ८९ श्लोक.

विष्णु ने प्रणाम करके जब ऊपर देखा तो उन्हें शुद्ध स्फटिक जैसा चमकता हुआ, सब धर्मों से युक्त, सब मन्त्रों का आदि २४ वर्णों वाले चार कलाओं से अलंकृत परमात्मा के दर्शन हुए ।

इन श्लोकों में लिंग का जो स्वरूप वर्णन किया गया है वह परमात्मापरक है।

श्री महादेव ब्रह्मा और विष्णु का विवाद इस प्रकार शान्त करते हैं—

श्रीमहादेव उवाच—

प्रलयस्थितिसर्गाणां कर्त्ता त्वं धरणीपते ।
वत्स वत्स हरे विष्णो ! पालयैतच्चराचरम् ।।
त्रिधा भिन्नो ह्यहं विष्णो ब्रह्माविष्णुभवाख्यया
सर्गरक्षालयगुणैर्निष्कलः परमेश्वरः ।।
सम्मोहं त्यज भो विष्णो ! पालयैनं पितामहम् ।
पद्मे भविष्यति सुतः कल्पे तव पितामह !

महादेव ने कहा—हे प्रिय विष्णो ! इस संसार की स्थिति का कारण तुम हो । मैं ही ब्रह्मा विष्णु आदि रूपों में प्रकट होता हूं । इसके बाद से लोगों में लिंग-पूजा प्रचलित हुई ।

तदा द्रक्ष्यसि माँ चैवं सोपि द्रक्ष्यसि पद्मजः ।
एवमुक्त्वा स भगवांस्तत्रैवांतरधीयत ।।
तदा प्रभृति लोकेषु लिङ्गार्च्चा सुप्रतिष्ठिता ।
लिङ्गवेदी महादेवी लिङ्गं साक्षात्महेश्वरः ।।
लयन्मल्लिङ्गमित्युक्तं तत्रैव निखिलं सुराः ।
यस्तु लैङ्गं पठेन्नित्यमाख्यानं लिङ्गसंनिधौ ।।
स याति शिवतां विप्रो नात्र कार्या विचारणा ।।

श्री लिंग पुराण पूर्व भाग । २१ अध्या० ।।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इन श्लोकों की व्याख्या करते हुए टीकाकार लिखते हैं कि इसके बाद लिंग में परमात्मा के दर्शन होने से लिंगपूजा का प्रारम्भ हुआ। लिंगवेदी बनाई जाने लगी। इत्यादि।

परन्तु प्रश्न यह पैदा होता है कि इस सारे वर्णन में यह कहां लिखा है कि विष्णु और ब्रह्मा के सामने जो लिंग प्रकट हुआ उसके दाएं बाएं ओंकार तथा वर्णमाला थी—उसकी स्मृति में दृश्यमान लिंग बनाए जाते हैं या बनाये जाने चाहियें। इस व्याख्यान के उपसंहार वाक्य से तो यह पता लगता है कि परमात्मा परम लिंग हैं क्योंकि उसमें बड़ी से बड़ी शक्तियां लय हो जाती हैं। महादेवी और लिंग वेदी प्रकृति रूप वेदी के अन्दर ही शिव या परमेश्वर प्रकट हुए। इसी वेदी के दाएं बाएं परमात्मा के ज्ञानरूप अक्षरमाला प्रकट हुई है। इस प्रकार इस विवेचन से भी पाठकों के हृदय में यह बात हो जायगी कि लिंग पूजा का अभिप्राय पुराणों के अनुसार भी प्रस्तर पूजा से नहीं था। इस प्रकरण पर काफी विचार हो चुका है। अब हम निम्न लिखित उदाहरण के साथ लिंग पुराण की आलंकारिक व्याख्या को समाप्त करते हैं—

देवादयः पिशाचान्ना पशवः परिकीर्तिताः।
तेषां पतित्वात्सर्वेशो भवः पशुपतिः स्मृतः॥

लिंगपुराण पूर्व भाग ७ अ० ५४ श्लो. ६

देव लोगों से लेकर पिशाच जाति तक सारी मनुष्य सृष्टि पशु कहलाती है इनका पालक पति होने से परमात्मा पशुपति कहलाता है।

इस श्लोक में बताया गया है कि शिव या महादेव को पशुपति क्यों कहते हैं। क्योंकि परमात्मा प्राणिमात्र का पति है इसलिये उसे पशुपति कहते हैं। पशुपति के नाम से पुराणवादियों में जो विविध कल्पनाएं प्रचलित हैं वह भी लिंग पुराण के इस श्लोक के अनुसार निराधार हैं।

लिंग पुराण की आलंकारिक व्याख्या तथा आलंकारिक भाव को प्रकट करने वाले अनेक श्लोक तथा संवाद लिंग पुराण में स्थान-स्थान पर पाए जाते हैं। हमने उपलक्षण मात्र कुछएक का यहां निर्देश किया है। आशा है विचारशील पाठक इन पर अधिक विचार करेंगे।

इस प्रकरण को समाप्त करने से पूर्व, प्रचलित लिंग-पूजा के सम्बन्ध में एक शब्द यहां लिखना अप्रासंगिक नहीं है।

लिंग पुराण २४ अध्याय पूर्व भाग में ऋषि पूछते हैं—

कथं पूज्यो महादेवो लिङ्गमूर्तिर्महेश्वरः।
वक्तुमर्हसि चास्माकं रोमहर्षण साम्प्रतम्॥११॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूत उवाच—
देव्या पृष्टो महादेवः कैलाशे तां भगात्मजाम् ।
अङ्कस्थामाह देवेशो लिंगार्चनविधिं क्रमात् ।।२।।
तदा पार्श्वे स्थितो नन्दी शालङ्कायनात्मजः ।
श्रुत्वाखिलं पुरा प्राह ब्रह्मपुत्राय सुव्रताः ।।३।।
सनत्कुमाराय शुभं लिङ्गार्चनविधिं परम् ।
तस्माद् व्यासो महातेजः श्रुतवाञ्छ्रुतिसंमितम् ।।
स्नानयोगोपचारा च यथा शैल दिनो मुखात् ।
श्रुतवान् तत्प्रवक्ष्यामि स्नानाद्यं चार्चनाविधिम् ।।

ऋषि :—हे रोमहर्षण ! हमें यह बताओ कि लिंग मूर्ति महादेव की पूजा किस प्रकार करनी चाहिए ?

सूत ने कहा :—एक वार महादेव ने गोदी में बैठी शिवा पार्वती को लिंग-पूजा की विधि का उपदेश किया । उससे सनत्कुमार ने सुनी । सनत्कुमार से व्यास ने और व्यास से मैंने सुनी । वही आप लोगों को सुनाता हूं ।

ऋषियों के पूछने पर, सूत लिंग की पूजाविधि वर्णन करने का इतिहास सुना कर परम्परा से सुनी हुई विधि का वर्णन करता है ।

इस वर्णन में ईश्वर या महादेव की पूजा के साधन बताते हुए पांच महायज्ञों का वर्णन किया है, इन पाँच महायज्ञों में लिङ्ग पूजा का कहीं वर्णन नहीं । इसी प्रकार लिङ्ग का जो वर्णन किया है वह इस प्रकार है :—

वक्ष्यामि श्रृणु संक्षेपालिङ्गार्चनविधिक्रमम् ।
वक्तुं वर्षशतेनापि न शक्यं विस्तरेण यत् ।। २७ अ० २
एवं स्नात्वा यथान्यायं पूजा स्थानं प्रविश्य च ।
प्राणायामत्रयं कृत्वा ध्यायादेवं त्रियम्बकम् ।। २७ अ० २
पञ्चवक्रं दशभुजं शुद्धस्फटिकसन्निभम् ।
सर्वाभरणसंयुक्तं चित्रांवरविभूषितम् ।।
तस्य रूपं समाश्रित्य दहनप्लावनादिभिः ।
शैवीं तनुं समास्थाय पूजयेत्परमेश्वरम् ।।
देहशुद्धिं च कृत्वैव मूलमन्त्रं न्यसेत्क्रमात् ।
सर्वत्र प्रणवेनैव ब्रह्माणि च यथाक्रमम् ।। अ २७। श्लो० ५

स्नान के बाद पूजा स्थान में जाय तीन प्राणायाम करके परमात्मा महादेव का ध्यान करे । आरती सेचनादि क्रियाओं द्वारा शैवीतनु की भावना से स्वशरीर-शुद्धि कर के मूल मन्त्र का जप करके सर्वत्र व्यापक रूप से परमात्मा का चिन्तन करे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिङ्ग स्वरूप वर्णन के स्पष्ट प्रकरण में लिङ्गपिण्डी का कहीं वर्णन नहीं किया गया। लिङ्गस्नान तथा पूजा-मन्त्रों का वार-वार वर्णन करते हैं परन्तु लिंग का कहीं वर्णन नहीं करते। २६ वें अध्याय के प्रारम्भ में दृश्यमान लिङ्ग की व्याख्या किए विना ही शैलादि इस प्रकार कथा छोड़ते हैं :—

आभ्यन्तरं प्रवक्ष्यामि लिङ्गार्चनमिहाद्य ते।
आग्नेयं सौरभरितं विम्बं भाव्यं ततो परि ॥१॥
गुणत्रयं च हृदये तथा चात्मत्रयं क्रमात्।
तस्योपरि महादेवं निष्कलं सकलाकृतिम् ॥२॥
कान्तार्धरूपदेहं पूजयेद्ध्यानविद्यया।
ततो वहुविधं प्रोक्तं चिन्त्यं तत्रास्ति चेद्यतः।
चित्रकस्य ततश्चित्रा अन्यथा नोपपद्यते ॥३॥
तस्माद्ध्येयं तथा ध्यानं यजमानः प्रयोजनम्।
स्मरेत्तन्नान्यथा जातु बुध्यते पुरुषस्य ह ॥४॥

लिङ्ग पूजा आभ्यन्तर तथा वाह्य रूप से दो प्रकार की होती है।

अमृत आग्नेय गुण त्रय रूप पर आत्मा का हृदय में चिंतन करे। इसी हृदय पटल पर निष्कल महादेव की पूजा करे।

उपासक को चाहिये कि उस परमात्मा महादेव की चिन्ता अथवा चिन्तन करे।

आत्मा मन को साधन मानकर, प्रकृति रूप कान्ता के साथ विराजमान शिव व महादेव की पूजा ध्यान मन्त्र द्वारा करने का आदेश है। केवल इतना ही नहीं, आभ्यन्तर लिंग की पूजा करनेवालों की पूजा करने का आदेश मनुष्य मात्र को दिया है। "आभ्यन्तरार्चकाः पूज्या नमस्कारादिभिस्तथा" द्वारा ऐसे आभ्यन्तर लिङ्ग के पुजारियों की पूजा का आदेश किया। यह आभ्यन्तर लिङ्ग के पुजारी आकार तथा शकल में कैसे ही क्यों न हों। २८ अ. १३० श्लोक ॥

आश्चर्य है कि जिस लिंगपूजा—पिण्डिकापूजा का आज पौराणिक भाई माहात्म्य समझते हैं उसका वर्णन लिङ्गपुराण में २८ अध्यायों तक कहीं नहीं किया। वार-वार लिङ्ग का अर्थ तथा लिंगार्चन विधि का प्रकार पूछते हैं परन्तु उत्तर देते हुए कहीं भी लिंग पिण्डी का जिकर नहीं करते।

अन्त में श्वेत लिङ्गमूर्ति तथा महादेव की पूजा करता है। मृत्यु उस पर अधिकार करने आता है तब मृत्यु श्वेत की लिंग-पूजा की मखौल करता है। यह पहला मौका है जहाँ प्रस्तरमयी लिंग पूजा का जिकर किया हो और साथ ही इसकी मखौल भी की हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यम कहता है: —

लिङ्गेऽस्मिन्संस्थित: श्वेत तव रुद्रो महेश्वर: ।
निश्चेष्टोऽसौ महादेव: कथं पूज्यो महेश्वर: ॥

यम कहता है:—

हे श्वेत ! इस लिंग में रुद्र महेश्वर अवस्थित है । उसकी पूजा कैसे करनी चाहिए ?"

'तू इस निश्चेष्ट पत्थर रूप रुद्र की पूजा क्यों करता है ?' श्वेत इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं देता । पौराणिक सूत भी कोई जवाब नहीं देता । महादेव के शाप से, मृत्यु को मरवा देता है । इस प्रकरण के बाद ३१ वें अध्याय में, पिंडिका रूप वाले लिंग का पितामह इन श्लोकों में वर्णन करते हैं :—

एष चक्री च वज्री च श्रीवत्स कृतलक्षण:,
योगी कृतयुगे चैव त्रेतायां क्रतुरुच्यते ।
द्वापरे चैव कालाग्नि: धर्मकेतु: कलौ स्मृत: ।
रुद्रस्य मूर्तयस्त्वेता येभिर्ध्यायन्ति पंडिता: ॥७॥
चतुरस्त्रं वहिश्चान्नाष्टास्त्रं पिंडिकाश्रये ।
वृत्रं सुदर्शनं योग्यमेवं लिंगं प्रपूजयेत् ॥
तमो ह्यग्नीरजो ब्रह्मा सत्वं विष्णु: प्रकाशकम् ।
मूर्तिरेका स्थिता चास्य मूर्तय: परिकीर्तिता: ॥
यत्र तिष्ठति तद्ब्रह्म योगेन तु समन्वितम् ।
तस्माद्धि देवदेवेशमीशानं प्रभुमव्ययम् ॥
आराधयन्ति विप्रेन्द्रा: जितक्रोधा जितेन्द्रिया: ।
लिंगं कृत्वा यथा न्यायं सर्वलक्षणसंयुतम् ॥
अंगुष्ठमात्रं सुशुभं सुवृत्तं सर्वसम्मतम् ।
समनामं तथाष्टास्त्रं षोडशास्त्रमथापि वा ॥
सुवृत्तं मंडलं दिव्यं सर्वकामफलप्रदम् ।
वेदिकादिगुणा: तस्य समा वा सर्वसंमता ॥२६॥

चक्र धारण करने वाले वज्र का स्वामी श्रीवत्स चिह्न से अलंकृत कृतयुग में योगी, त्रेता में क्रतु, द्वापर में कालाग्नि, कलियुग में धर्मकेतु कहाता है । पण्डित लोग इन निम्नलिखित सद्मूर्तियों द्वारा शिव का ध्यान करते हैं । पिण्डी की वनी हुई चौकोन अठकोन अथवा गोलाकार सुदर्शन मूर्ति वाला लिंग अग्नि तम रूप है, ब्रह्मा रज रूप है, विष्णु सत्त्व स्वरूप है । असली मूर्ति एक ही है । इसी एक मूर्ति की देव लोग तथा पण्डित लोग पूजा करते हैं । सब लक्षणों से संयुक्त दर्शनीय अंगूठे के समान लिंग की पूजा करे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भिन्न-भिन्न युगों में ईश्वर या महादेव के चक्री आदि रूपों का वर्णन करके पता नहीं लगता यह लिंग गोलमटोल रूप किस युग का चिह्न माना है। कलियुग में धर्म केतु रूप माना है। पिण्डिका वाले लिंग का वर्णन यहां अप्रासंगिक मालूम होता है। पाठकों के सामने इन विवरणों से यह बात स्पष्ट हो गई होगी कि लिंग पुराण के प्रसंगापतित प्रकरण से कोई सम्बन्ध नहीं। आलंकारिक प्रणाली से प्रकृत पुरुष तथा जीवात्मा का लिंग पुराण में वर्णन किया गया है। इस अवस्था में लिंग पुराण को धर्मग्रन्थ समझना ठीक नहीं है। मनुष्य जीवन की दृष्टि से भी स्त्री पुरुष के पारस्परिक सम्बन्ध का वर्णन इस में किया गया है। उपरिलिखित उद्धरणों के साथ-साथ लिंग पुराण का निम्न लिखित श्लोक हमें सदा अपने सामने रखना चाहिये—

नन्दीः—वक्ष्यामि वो हितं पुण्यं भक्तानां मुनि पुंगवाः

स्त्रीलिंगमखिलं देवी, प्रकृतिर्मम देहजा।
पुल्लिगपुरुषो विप्रा मम देहसमुद्भवः।
उभाभ्यामेव वै सृष्टिर्मम विप्रा न संशयः॥

नन्दी—मुनिगण ! मैं आप लोगों के हित की बात कहता हूं। मेरे देह से पैदा होने वाली स्त्री लिंग को धारण करने वाली जितनी प्रकृत सृष्टि है वह सब देवी व शिवा कहलाती है। मेरे देह से उत्पन्न जितने भी पुल्लिग (पुरुष योनि) को धारण करने वाले हैं वह सब पुरुष कहलाते हैं। यह संसार सृष्टि इन स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग के प्रतिनिधि रूप शिवा तथा शिव से ही होती है।

संसार में हम देखते हैं कि सारी सृष्टि स्त्रीलिंग और पुल्लिग के भेद से विभक्त की जाती है। नन्दी कहते हैं कि यह सव कुछ परमात्मा का विस्तार है। स्त्री लिंग और पुल्लिग के अन्तर्गत हैं। यह दोनों परम लिंग के हिस्से हैं। इनसे सृष्टि पैदा होती हैं। इस प्रकार लिंग पुराण का मुख्य विषय तथा भाव पाठकों के सामने स्पष्ट हो गया है। हमें लिंग पुराण का अध्ययन इसी दृष्टि से करना चाहिये। लिंग पिण्डिकादि के वर्णन अप्रासंगिक मालूम होते हैं।

लिंग पुराण में वैदिक (आर्यसमाज सम्मत) सिद्धान्तों का समर्थन

ऋषि दयानन्द ने मुक्ति के समय तथा मुक्ति से निश्चित समय के बाद जीवात्मा के कर्मक्षेत्र में आने की जो वात लिखी है उसका समर्थन इन श्लोकों से होता है—

परान्ते वै विकाराणि विकारे यान्ति विश्वतः ॥५०॥
विकारस्य शिवस्याज्ञा वशेनैव तु संहृतिः।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संहृते तु विकारे च, प्रधाने चात्मनि स्थिते ।।५१।।
साधर्म्येणावतिष्ठैते प्रधानपुरुषावुभौ ।
गुणानां चैव वैषम्ये विप्राः सृष्टिरिति स्मृता ।।५२।।
साम्ये लयो गुणानां तु तयोः हेतु र्महेश्वरः ।
लीलया देवदेवेन सर्गास्त्वीदृग्विधाः कृताः ।।५३।।

लिंग पुराण पूर्व भाग अध्याय ४ ।।

(१) "काल या समय की परान्तावस्था का अनुभव वही आत्मा करते हैं जो कि प्राकृतिक विकारों को नष्ट करके, गुणों को प्रकृति में लीन कराकर, आत्म स्थित होकर, प्रकृति को भोग्य बुद्धि से न अपना कर, साधारण या समानता की दृष्टि से अपनाते हैं । इस परान्तकाल की अवधि के बाद परमात्मा की प्रेरणा तथा इच्छा से वह आत्मा फिर विषम गुणों के साथ सृष्टि में आते हैं । परमात्मा इस प्रकार के अनेक सर्ग सृजता है ।

(२) सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य किस अवस्था में उत्पन्न हुए ? आचार्य दयानन्द लिखते हैं कि युवावस्था में पैदा हुए, लिंग पुराण का श्लोक इस प्रकार है :—

स्रष्टुं च भगवान्चक्रे मतिं मतिमतां वर ।
मुख्यं च तैर्यग्योन्यं च दैविकं मानुषं तथा ।।
विभुश्चानुगृहं तत्र कौमारकमदीनधीः ।
पुरस्तादसृजद्देवः सनंदं सनकं तथा ।।

शिवलिंग ३८ अ० पूर्वभाग ।११।

टीकाकार "कौमारकं" शब्द का अर्थ "कुमारसर्गम्" लिखते हैं । सत्यार्थ-प्रकाश में भी यही लिखा है कि सृष्टि के प्रारम्भ में जो मनुष्यसृष्टि थी वह युवा-वस्था वाले पुरुषों की थी क्योंकि अति बाल और अति वृद्ध उस समय निर्वाह ही नहीं कर सकते थे ।

(३) वर्णव्यवस्था :—

मर्यादायाः प्रतिष्ठार्थं ज्ञात्वा तदखिलं विभुः ।
ससर्ज क्षत्रियांस्त्रातुं क्षतात्केवलसंभवः ।।
वर्णाश्रम प्रतिष्ठाञ्च चकार स्वेन तेजसा ।
वृत्तेन वृत्तिना वृत्तं विश्वात्मा निर्ममे स्वयम् ।।
यज्ञप्रवर्तनं चैव त्रेतायामभवत् क्रमात् ।
पशुयज्ञं न सेवन्ते केचित्तत्रापि सुव्रताः ।।

अध्याय ५६ लिं० पु० ।४६—५०—५१।

ब्रह्मा ने समाज की मर्यादा को स्थिर रखने के लिये, समाज को आपत्तियों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

से बचाने के लिये क्षत्रियों को उत्पन्न किया, और साथ ही वर्णाश्रम प्रतिष्ठा भी की। वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रेरक भाव या विभाजक निर्णायक तत्व वृत्ति और वृत्त को स्वीकार किया गया है। वृत्ति का अर्थ है जीविकोपार्जन के लिये स्वीकार किया गया धंधा। वृत्त का मतलव आचार या सदाचार से है। ब्रह्मा ने वृत्त और वृत्ति को आधार मान कर ही वर्णाश्रम व्यवस्था की संस्थापना की। लिंग पुराण के अध्ययन से यह भी पता लगता है कि वर्णव्यवस्था का प्रारम्भ त्रेतायुग से हुआ। इस से पूर्व, कृतयुग में लोग स्वयं नियमित आचार स्वभाव के होने से मर्यादा में रहते थे। उस समय सब मनुष्य मनुष्यत्व के भाव से प्रकृति के उदार दान के कारण आपस में लड़ते नहीं थे। जव आपस में ईर्ष्या द्वेष के भाव पैदा हुए, तभी क्षत्रिय का निर्माण किया गया। वर्णाश्रम व्यवस्था विकास के इस सिद्धान्त को मानने का मतलब यह है कि वर्णव्यवस्था ईश्वर कृत विभाग नहीं है। मनुष्य तथा समाज में वृत्त तथा वृत्ति के अनुसार इसका निर्माण किया जाता है। बेदों के पुरुष सूक्त से भी यही मालूम होता है कि यह वर्ण विभाग आवश्यकता पड़ने पर समाज की व्यवस्था के लिये कल्पित किया जाता है। जो पौराणिक भाई या अनुदार विचारक यह मानते हैं कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि भेद गौ अश्व आदि की भांति ईश्वर कृत हैं, उनसे हमारा एक प्रश्न है। लिंग पुराण के इस प्रकरण में तथा अन्यत्र जहां सृष्टि रचना का विवरण किया गया है वहां पशु सृष्टि का, गौ अश्व बडवा आदि की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए यह क्यों नहीं लिखा कि फिर ईश्वर ने ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी बनाए? पुराणों में तो पशु सृष्टि के वर्णन के बाद मनुष्य सृष्टि का वर्णन मिलता है। इस विचार से यदि पुराणों का अध्ययन करें तो पुराणों के सृष्टि वर्णन वाले सब प्रकरण आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वर्णव्यवस्था-सिद्धान्त के समर्थक हैं।

(४) आर्य शब्द का प्रयोग—आर्य समाज की सम्मति में मनुष्य समाज को अनार्य और आर्य दो विभागों में बांटना चाहिए। इसी सिद्धान्त के अनुसार आर्य-समाज, भारतीयों तथा विशेषतः हिन्दुओं को इस बात की प्रेरणा करता है कि वह अपने आपको तथा भले मनुष्यों को आर्य कहा करें। इस सम्बन्ध में भी लिंग पुराण आर्यसमाज के मन्तव्यों का समर्थक है।

(१) सारे लिङ्ग पुराण में "हिन्दु" शब्द का कहीं भी पाठ नहीं है।

(२) इसके विपरीत निम्नलिखित दो स्थानों पर आए "आर्य" शब्द की तरफ हम पाठकों का ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं।

ब्रह्मा ने दस मानस पुत्रों को पैदा किया। ईश्वर या शिव ने उनको पञ्चा-क्षर मन्त्र का मुञ्जपर्वत पर उपदेश दिया। उनका निर्देश करते हुए शिव जी पार्वती को कहते हैं—

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्यासं षडङ्गं दिग्वन्धं विनियोगमशेषतः ।
प्रोक्तवानहमार्याणां लोकानां हितकाम्यया ।।
अध्याय ८५ । श्लो० २४।। लिं० पूर्वभाग,

ज्येष्ठः सर्वेश्वरः सौम्यो महा विष्णु तनुः स्वयम् ।
आर्यः सेनापतिः साक्षाद्गहनो मखमर्दनः ।।
अ, ८२ । ९३ श्लो० लि० पूर्व ।।

प्रथम उद्धरण में ब्रह्मा ने सृष्टि का विस्तार करने के लिए जिन दस पुत्रों को पैदा किया उन दस पुत्रों को "आर्याणां" शब्द से स्मरण किया गया है । पौराणिक कथा विन्यास के अनुसार इन १० पुत्रों से ही मनुष्य सृष्टि का प्रारम्भ हुआ है । इस दशा में मनुष्यों को आर्य क्यों न कहा जाय ? मुञ्ज पर्वत पर तपस्या करने वाले दस पुत्रों को आर्य कहा गया है । ऐतिहासिकों की दृष्टि में मुञ्ज पर्वत का अभिप्राय क्या है इसके विषय में हम कुछ न कह कर, पौराणिक प्रचलित विचार सरणि के अनुसार इसको भारतवर्ष में ही मानते हैं । इस दशा में भारतवर्ष में रहने वालों को अपने पूर्वजों के अनुसार अपने लिए आर्य शब्द का प्रयोग करने में संकोच न करना चाहिए ।

दूसरे उद्धरण में शिव पार्वती के पुत्र शैलाद गणेश को आर्य कहा गया है । हिन्दू धर्म का कोई सम्प्रदाय होगा जो गणेश की पूजा न करता हो । इस इष्ट देव के पुत्र विघ्नों को हटाने वाले के लिए लिङ्ग पुराण में आर्य शब्द का प्रयोग किया गया है—इस लिए गणेश के पुजारियों को अपने लिए आर्य शब्द का प्रयोग करने में संकोच नहीं करना चाहिए । जो अपने आपको आर्य कहता है उसके सामने यह भाव होता है कि वह सब मनुष्यों को बराबर समझेगा । (आर्यः यः स्वमिव परमपि पश्यति । कौटिल्य अर्थ शास्त्र.) इस शब्द के कीर्तन से उच्च विचार तथा ज्वलन्त इतिहास, मानसिक चक्षुओं के सामने चित्रित हो जाते हैं ।

(५) सांख्यवादी निरीश्वरवादी नहीं है :—ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज सांख्यवादियों को या सांख्य दर्शन को निरीश्वरवादी नहीं मानते ।

भवानीशोऽनादिमाँस्त्वं वै सर्वलोकानां त्वं ब्रह्मकर्तादिसर्गः सांख्याः प्रकृतेः परमं त्वां विदित्वा क्षीण ध्यानास्त्वाममृत्युं विशन्ति ।।
लि० २१ अध्याय ८५ श्लोक

हे शिव ! सांख्यवादी भी आपके प्रकृति से परे तथा सूक्ष्म स्वरूप को जान कर अमृत्यु लोक अर्थात अमृत लोक में प्रवेश करते हैं ।

(६) मूर्तिपूजा का स्वार्थ पूर्ण उद्देश्य :—ऋषि दयानन्द ने अनेक वार यह भाव प्रकट किए हैं कि मूर्तिपूजा का प्रचांर पुजारी लोग पेटपूजा के लिए करते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिंग पुराण ७७ अध्याय पूर्व भाग २६ श्लोक इस विषय में प्रमाण हैं—

वृत्यर्थं वा प्रकुर्वीत नरः कर्म शिवालये।
यः स याति न संदेहः स्वर्गलोकं सबान्धवः ॥

जीविका सिद्ध करने के उद्देश्य से भी मनुष्य शिवालय तथा मन्दिर में लिंग पूजा का कार्य करे। यही प्रवृत्ति धीरे-धीरे मूर्ति पूजा को स्वार्थियों का गढ़ बना देती है। ईश्वर पूजा जैसे पवित्र कार्य को मनुष्य की सांसारिक वासनाओं को पूर्ण करने वाले आडम्बरों से कलुषित नहीं करना चाहिए।

मूर्ख और अविद्वान् ही मूर्तिपूजा करते हैं।

लिङ्गं तु द्विविधं प्राहुः वाह्यमाभ्यन्तरं द्विजाः।
वाह्यं स्थूलं मुनिश्रेष्ठाः सूक्ष्ममाभ्यन्तरं द्विजाः ॥१६॥
कर्मयज्ञ रताः स्थूला स्थूल लिङ्गार्चने रताः।
असतां भावनार्थाय नान्यथा स्थूल विग्रहः ॥२०॥
आध्यात्मिकं च यल्लिङ्गं प्रत्यक्षं यस्वनो भवेत्।
असौ मूढ़ो वहिः सर्वं कल्पयित्वैव नान्यथा ॥२१॥
ज्ञानिनां सूक्ष्ममममलं भवेत्प्रत्यक्षमव्ययम्।
यथा स्थूलमयुक्तानां मृत्काष्ठाद्यैः प्रकल्पितम् ॥२२॥

७५ अध्याय। १६—२२ श्लो०।

वाह्य और आभ्यन्तर भेद से लिंग दो प्रकार का है। वाह्य लिंग स्थूल रूप होता है। आभ्यन्तर लिंग सूक्ष्म रूप होता है। कर्म तथा लिंग पूजा में लगे हुए लोग स्थूल लिंग के उपासक हैं। आध्यात्मिक लिंग आभ्यन्तर लिंग है।

ज्ञानी लोग सूक्ष्म आभ्यन्तर लिंग की उपासना करते हैं जिनका मन कहीं किसी वात पर (युक्त) लग नहीं सकता—ऐसे लोग मट्टी लकड़ी आदि के बने हुए लिंग की पूजा करते हैं।

वाल्यात्तु लोष्ठेन शिवं च कृत्वा मृदापि वापांसुभिरादिदेवम्। गृहं च तादृग्विध भस्महां भोः संपूज्य रुद्रत्वमवाप्नुवन्ति ॥ २७ अ० ५ श्लो०

यदि कोई खेल कूद में मिट्टी की पूजा करे तो वह भी रुद्रत्व की गति को पाता है।

वाह्य आभ्यान्तर अथवा स्थूल भेद से लिंग दो प्रकार का है। ज्ञानी लोग सूक्ष्म अव्यय की पूजा करते हैं। अयुक्त अज्ञानी लोग रेत और मिट्टी के बने हुए शिव की पूजा करते है। केवल यही नहीं। यह भी लिखा है कि खेल कद में,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिट्टी या रेत के बने शिव की पूजा से भी रुद्रलोक मिल जाता है। आयसमाज का कथन यह है कि अज्ञान तथा अविद्या का नाश करना चाहिये। इस लिए अविद्या तथा अज्ञान को स्थिर रूप देने वाली मूर्ति पूजा का भी अन्त करना चाहिए। मिट्टी के बने लिंगों द्वारा उन्हें मुक्ति दिलाने की अपेक्षा विद्या का प्रचार करके उन्हें अयुक्त तथा अज्ञानी लोगों द्वारा चलाई गई मूर्ति पूजा को छोड़ देना चाहिए। आर्य समाज की इस सचाई का समर्थन शिक्षित देश कर रहे हैं। जिन-जिन देशों में विद्या का प्रचार हो रहा है वहां तो मूर्ति पूजा की प्रथा स्वयं ही नष्ट हो रही है। क्योंकि विद्यावाला आदमी स्थूल लिंग की पूजा द्वारा अपने आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकता।

मृतक श्राद्ध पौर जीवित श्राद्ध :—आर्यसमाज जीवित श्राद्ध अथवा जीवित पुरुषों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का समर्थक है। मृतक श्राद्ध का सिद्धान्त अवैदिक है। वर्तमान समय में उपलभ्यमान लिंग पुराण के पूर्व भाग में मृतक श्राद्ध व जीवच्छ्राद्ध किसी का भी नाम नहीं आता। लिंग पुराण के उत्तर भाग में इस विषय में लिखित श्लोक उपलब्ध होते हैं।

देवदेव जगन्नाथ नमस्ते भुवनेश्वर।
जीवच्छ्राद्धं महादेव प्रसादेन विनिर्मितम्॥

लिं० ३। २७। ७ श्लोक।

विशेष एव कथितं अशेषः श्राद्धचोदितः।
मृते कुर्वन्ति कुर्याद्वा जीवन्मुक्तो यतः स्वयम्।
नित्य नैमित्तिकादीनि कुर्यात् वा संत्यजेन्नु वा।
वांधवेपि मृते तस्य शौचाशौचं न विद्यते॥

लि० उत्तर। ४५ अ० ८४। ८५ श्लोक।

इस प्रकरण को समाप्त कर ऋषि कहते हैं :—

ऋषय ऊचुः—

जीवच्छ्राद्ध विधिः, प्रोक्तस्त्वया सूत महामते।
मूर्खाणामपि मोक्षार्थमस्माकं रोमहर्षण॥

४६ अ० १ उ० लिं० अ०

इन दोनों उद्धरणों में स्पष्टतया न तो मृतक श्राद्ध का मण्डन है और नाहीं खण्डन। हां यह स्पष्ट है कि दोनों उद्धरणों में जीवच्छ्राद्ध पर विशेष बल दिया गया है।

(८) लिंग पुराण में वेद का महत्त्वः—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद शब्देभ्य एवादौ निर्ममे स महेश्वरः ।
ऋषीणां नामधेयानि याश्च वेदेषु वृत्तयः ॥

७ उ० लिं० ५८ श्लोक

लिंग पुराण में अनेक स्थलों पर वेदों का माहात्म्य तथा ईश्वरीय ज्ञान होना स्वीकार किया गया है। इस श्लोक में यह बताया गया है कि वेदों से ही लेकर ऋषियों के नाम रखे गये हैं। इसलिए उन नामों से इतिहास का ढूंढ़ना ठीक नहीं है।

इन संक्षिप्त विवरणों के अतिरिक्त सृष्टि उत्पत्ति का विवरण वही पाया जाता है जो कि उपनिषदों तथा वेदों में है। आलंकारिक अर्थवाद के ढंग से हुए वर्णन को कहानी का रूप दे दिया है। सब वर्णों अ. क. ख. आदि की उत्पत्ति भी परमात्मा से ही मानी गई है।

अनेक स्थलों पर, वैदिक शब्दों की व्याख्या भी आर्यसमाज के मन्तव्य के अनुकूल ही उपलब्ध होती है। गायत्री मन्त्र तथा "त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्" की व्याख्या आर्यसमाज के मत के अनुकूल की गई है। इस प्रकरण को समाप्त कर हम लिंग पुराण में प्रचलित पौराणिक सनातन धर्म के विरुद्ध जो बातें लिखी हुई हैं उनका विवरण पाठकों के सामने रखेंगे।

वर्तमान समय में प्रचलित पौराणिक सनातन धर्म के सिद्धान्त निश्चित नहीं हैं। सनातन धर्मान्तर्गत सम्प्रदाय अपनी-अपनी अलग रट लगाते हैं। अतः प्रस्तुत विषय के सम्बन्ध में विशेष रूप से विचार करना मुश्किल है। फिर भी प्रचलित पौराणिक धर्म की कुछएक बातों का वर्णन यहां किया जाता है। प्रचलित पौराणिक मत का अधिकांश में खण्डन लिङ्गपुराण की आलङ्कारिक व्याख्या तथा लिंगपुराण के विचारणीय परस्पर विरोध सम्बन्धी विषय के आलोचन से स्वयं ही हो जाता है।

(क) शंकरः पुरुषाः सर्वे स्त्रियाः सर्वा महेश्वरी ॥१८॥
पुल्लिङ्ग शब्द वाच्या ये ते च रुद्रा प्रकीर्तिताः।
स्त्रीलिङ्ग शब्द वाच्या या सर्वा गौर्या विभूतयः॥

लिंग पुराण उत्तरार्ध ११। श्लो० १८। ११

जितने पुरुष हैं वह सब ही शङ्कर हैं। जितनी स्त्रियां हैं वह सब शिवा या पार्वती कहलाती हैं। स्त्रीलिंग शब्द से कहे जानी वाली सब सृष्टि "गौरी" पार्वती की विभूति है।

लिंग पु. अ. ६३ में १० श्लोक से लेकर २० श्लोक तक शैलज रत्नज दधिमय क्षीरमय दारुज आदि अनेक प्रकार के लिंगों की पूजा का विधान है, परन्तु वर्तमान समय में सिवाय मृण्मय या प्रस्तरमय लिंग की पूजा के और किसी प्रकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के लिंग की पूजा का प्रचार नहीं दिखाई देता। ऐसा मालूम होता है कि देश की गरीबी या लोगों की धन लोलुपता या अर्कमण्यता से डरने की प्रवृत्ति ने भी शिव-लिङ्ग को इस दशा तक पहुंचाया है। इस प्रकार के परिवर्तनशील पौराणिक मत से क्या लाभ ! इष्ट देव को भी भक्तों की कमजोरी के कारण हीन अवस्था को प्राप्त होना पड़ा।

(ख) वर्तमान समय में, भस्म शब्द का अर्थ केवल राख या धूनी रमाना समझा जाता है परन्तु लिङ्ग पुराण में भस्म का अर्थ वीर्य किया है।

अग्निकार्यं च यः करिष्यति त्रिया पुषम्।
भस्मना मम वीर्येण मुच्यते सर्व किल्विषैः ।।
भक्षणात्सर्वपापानामत्येति परिकीर्तितम्।
तस्माद्भस्म महाभागा मद्वीर्यमिति चोच्यते।
स्ववीर्यं वपुषा चैव धारयामीति वै स्थितिः ।।

३४ अ० लिंग पु० पूर्वभाग। ६-८ श्लोक

जो आदमी मेरे वीर्य रूप भस्म से जीवन निर्वाह करता है वह सब पापों से निवृत्त हो जाता है। क्योंकि वीर्य सब पापों को दग्ध करता है जला देता है इस लिये इसे भस्म कहते हैं। मैं अपने शरीर को वीर्य द्वारा ही धारण करता हूं।

(ग) दैत्यों के त्रिपुर का वर्णन किया गया है।

वेदाध्ययन शालाभिः विविधाभिः समन्ततः।
अधृष्टं मनसाप्य चैर्भस्मस्यैव च मायया ।।

७१ अ०।३१ श्लो०

दैत्यों के त्रिपुर में भी वेद पाठशालाएं थीं। यह दैत्य कम से कम देवातिरिक्त आर्यातिरिक्त पुरुष थे—जब इनको वेद पढ़ने का अधिकार था तो आजकल आर्य जाति के अङ्गभूत शूद्रों या स्त्रियों को वेद पढ़ने का अधिकार न देना अयुक्त है। इस श्लोक का भाव यह है कि वेद की पाठशालाओं के कारण त्रिपुर पर कोई आक्रमण नहीं कर सका। इसी प्रकार आज जिन्हें सनातनी भाई उच्च अधिकार नहीं देते उन्हें भी चाहिए कि अपने-अपने मुहल्लों में वेद पाठाशालायें खुलवाएं। फिर किसी की क्या शक्ति कि उन पर उनके धार्मिक अधिकारों पर हाथ उठा सकें।

(घ) आजकल पौराणिक लोग शंकर और शिव या पार्वती शब्द का प्रयोग केवल मात्र पत्थर के शंकर या उनके पास बैठी पार्वती से करते हैं। परन्तु इस प्रकरण के प्रथम श्लोकों में साफ स्पष्ट लिखा है कि पुरुष मात्र शिव हैं और स्त्रीमात्र शिवा हैं। इस दृष्टि से मनुष्य मात्र या प्राणिमात्र की पूजा करनी सनातन धर्म है। यदि इस दृष्टि से पौराणिक भाई व्यवहार करें तो संसार में कोई भी मनुष्य या प्राणी ऐसा न रहे जो उनके धर्म में न आवे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिंग पुराण का संस्कृत साहित्य पर प्रभाव

संस्कृत साहित्य पर किसी एक पुराण की दन्तकथाओं का प्रभाव नहीं है। सब पुराणों का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत साहित्य पर प्रभाव दिखाई देता है। इसलिए किसी एक पुराण की दन्तकथाओं तथा काल्पनिक अर्थवादों का निश्चित तथा स्पष्ट रूप में संस्कृत साहित्य के काव्यग्रन्थों पर क्या प्रभाव पड़ा है—इसका विवेचन करना असम्भव नहीं तो कठिन जरूरी है। एक दन्तकथा अनेक रूपों में भिन्न-भिन्न पुराणों में लिखी गई है। इसलिए कौन सी कथा मूल रूप में किस पुराण विशेष से सम्बद्ध है, यह निश्चित करना कठिन है। लिंग पुराण के सम्बन्ध में यह दिक्कत और भी अधिक जटिल हो जाती है। क्योंकि शिव पुराण तथा लिंग पुराण का विषय तथा उद्देश्य एक ही है।

पुराण का संस्कृत साहित्य पर जो प्रभाव पड़ा है उस के आलोचन की आवश्यकता इसलिए है कि साहित्य किसी जाति व राष्ट्र का लिखित चित्र होता है। शिव तथा लिंग की पूजा करने वाले राजाओं या समाजों के इतिहास के निरीक्षण में जो साहित्य पैदा हुआ है उस पर शिव पुराण तथा लिंग पुराण की धार्मिक कल्पनाओं का प्रतिबिम्ब पड़ना अनिवार्य है। इस तरफ ध्यान देने की आवश्यकता इस लिए भी है कि भारतीय इतिहास में शिव और लिंग की पूजा करने वाले व्यक्तियों ने अपने समय में बड़े-बड़े वीरतापूर्ण कार्य किए हैं।

चित्तौड़ के महाराणा एकलिंग के पुजारी थे। हर हर का नारा लगाकर इन्होंने कई बार विदेशियों तथा अत्याचारियों के छक्के छुड़ाए।

आज भी उदयपुर से थोड़ी दूरी पर अवस्थित एकलिंग जी के विशाल मंदिर को देखकर, उसके चारों तरफ की पर्वत माला के उच्च शिखरों पर कहीं-कहीं मंदिरों के चिन्ह देखकर, वह भावना हृदय में पैदा हुए विना नहीं रहती कि यह मंदिर केवल धर्ममंदिर ही नहीं थे-यह युद्धमंदिर भी थे।

पत्थर के गोल-गोल लिंग केवल पूजा के साधन नहीं थे अपितु मर्कटी यन्त्र द्वारा दुश्मनों पर फेंके जाने वाले गोले थे। इसी प्रकार, आज भारतवर्ष में इसी एकलिंग पशुपति का नाम लेकर, राज्य करने वाले नैपाली लोग स्वतन्त्र हैं। भारतीय इतिहास के वीर नायकों से कवियों ने किसी न किसी प्रकार से शिव की पूजा करादी है। महाराष्ट्र के भूषण शिवाजी महाराज ने भवानी तलवार की मूर्ति में भवानी की धारणा करके, अपने समय में भारतीय साहित्य में शिव तथा लिंग पुराण की कथाओं का काफी प्रचार किया था। केवल यही नहीं; भारतवर्ष में अंग्रेजों के आने पर, बिखरी सेनाओं के सिपाहियों ने ठगों का बाना पहनकर, हिन्दू-मुसलमान सबने मिलकर, भवानी की पूजा करने में संकोच नहीं किया था। इन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घटनाओं के द्वारा शिवपुराण तथा लिंग पुराण की दन्तकथाओं का आम जनता पर काफी प्रभाव पड़ा। कालिदास के कुमार सम्भव में लिंग पुराण की कथा की झलक दिखाई देती है।

लिंग पुराण के पंचम अध्याय तथा अन्य स्थानों पर जो सृष्टि-वणन किए गए हैं उनमें धृति श्रद्धा आदि गुणों को देवियों का रूप दिया गया है। प्रबोध-चन्द्रोदय जैसे नाटकों में पुराणों की इस कल्पना के आधार पर, नाटकों द्वारा इन गुणों का प्रचार करने का यत्न किया गया है। ऐसा मालूम होता है कि इन कथाओं के रचयिताओं ने कथा तथा काव्य के ढंग से लोगों को ज्ञान उपदेश देने की परिपाटी चलानी चाही थी परन्तु पीछे से लोग अलंकार के तत्व को भूलकर उन्हें असली देवी-देवता समझने लगे। कुमारसम्भव की कथा तथा वृत्तान्त में स्थान-स्थान पर प्रकृति वर्णन तथा मनुष्य-स्वभाव का वर्णन आलंकारिक ढंग से किया हुआ दिखाई देता है परन्तु शब्दों को रूढ़ि मानने वाले, स्थूल बुद्धि वाले लोगों ने अर्थ का अनर्थ कर दिया है।

मध्यकाल में अशिक्षित अदूरदर्शी लोगों ने पुराणों की आलङ्कारिक तथा यौगिक व्याख्या को भुला कर, संस्कृत साहित्य को जीवन-हीन कर, भारतीय राष्ट्र को नुकसान पहुँचाया था। अब आवश्यकता इस बात की है कि इन आलङ्कारिक भावों का फिर से प्रचार किया जाय। तभी सच्चे अर्थों में मूर्तिपूजा का खण्डन हो सकेगा। रूढ़ि पूजा और मूर्ति पूजा में कोई भेद नहीं हैं।

लिंग पुराण तथा अन्य पुराणों ने, संस्कृत साहित्य में तथा आम जनता में बहु देवतावाद का प्रचार किया। यह बुराई तभी दूर हो सकती है जब कि हम जनता के सामने इस बात को स्पष्ट कर दें कि पुराण तथा लिंगपुराण यह धर्म ग्रन्थ नहीं हैं किन्तु यह लौकिक साहित्य के सामान्य ग्रन्थ हैं। यदि इस प्रकार इनका अध्ययन किया जायेगा तो भारतवर्ष के वर्तमान साहित्य पर इनका उत्तम प्रभाव पड़ेगा। इस उत्तम प्रभाव को पैदा करने के लिए, दन्तकथाओं को आलङ्कारिक व्याख्या तथा पुराणों को धर्मग्रन्थ न मान कर, उन्हें लौकिक साहित्य का अंग मानना ही एकमात्र उपाय है। आशा है भारतीय साहित्य का निर्माण करने वाले इसी दृष्टि से साहित्य का निर्माण करेंगे।

—०—

लिंग पुराण की रचना में दोष

लिंग पुराण की समालोचना को पूर्ण करने के लिये आवश्यक है कि लिंग पुराण के दोषों को भी पाठकों के सामने उपस्थित किया जाय। लिंग पुराण में कई प्रकार के दोष विद्यमान हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिंग पुराण से अध्ययन से मालूम होता है कि ग्रन्थ रचना के नियमों की दृष्टि से इसमें कई दोष विद्यमान हैं। हम क्रमशः इन दोषों पर विचार करेंगे।

(१) ग्रन्थ रचना की दृष्टि से अप्रासंगिक बातों का वर्णन। (२) परस्पर विरोध तथा अनावश्यक पुनरावृत्ति (३) आचार की दृष्टि से अर्थवादों तथा कथाओं के दोष।

(१) ग्रन्थ रचना की दृष्टि से अप्रासंगिक बातों का वर्णन

लिंग पुराण के पूर्वभाग और उत्तर भाग में परस्पर सम्बन्ध नहीं दिखाई देता। लिंग पुराण के पूर्व भाग के अन्तिम अध्याय के अन्तिम श्लोक को छोड़ कर शेष सारा अध्याय शिव तथा रुद्र के माहात्म्य का समर्थक है। अन्तिम श्लोक में पता नहीं, भक्तों को विष्णुलोक में क्यों पहुँचाया गया है। लिंग पुराण का उद्देश्य भक्तों को रुद्रलोक में पहुँचाना है। ऐसा मालूम होता है कि अन्तिम श्लोक किसी वैष्णव ने अपनी टांग ऊँची रखने के लिए लिख मारा है। लिंगपुराण के पूर्वभाग में शिव, रुद्रलोक, पार्वती, सृष्टिवर्णन, लिंगपूजा आदि सब विषयों का विवरण दिया गया है। इस पूर्व भाग के पढ़ने के बाद ऐसा मालूम होता है कि अब लिंग पुराण अपने प्रतिपाद्य विषय की दृष्टि से समाप्त हो चुका है। सब प्रकार के माहात्म्य, मन्त्रपाठों का फल-निर्देश किया जा चुका है। इस पूर्वभाग में केवल मात्र, लिंगपुराण की कथा प्रारम्भ करने वाले, सूत, नैमिषारण्य के ऋषियों तथा नारद को अन्तिम नमस्कार नहीं किया गया। बीच में ही लिंगपुराण के अन्तिम श्लोक में भक्त को विष्णु लोक में भेजकर उत्तर भाग का प्रारम्भ विष्णु कृष्ण के माहात्म्य से किया गया है। उत्तर भाग के प्रथम भाग में ज्यादा जोर वैष्णव भक्ति तथा विष्णु अवतार के माहात्म्य पर दिया गया है। विष्णु पुराण में यह वर्णन संगत मालूम हो सकता है, परन्तु यहां लिंग पुराण में जहां बीच में अनेक वार, ब्रह्मा-विष्णु की लड़ाई कराकर, उन्हें रुद्र के सामने नीचा दिखाया है, इस प्रकार विष्णु की स्तुति अप्रासंगिक ही नहीं किन्तु लेखक के दिमाग की विचित्र दशा की परिचायक हैं। हमारा अनुमान है कि यदि लिंग पुराण के शिवजी को. या उनके भक्त को यह विष्णु माहात्म्य का स्तोत्र सुनाया जाय तो वह अवश्य ही किसी न किसी ढंग से नई कथाएँ घड़कर, विष्णु महाराज को नीचा दिखाने का यत्न करेंगे।

(२) परस्पर विरोध आदि

लिंगपुराण में जितनी कथाएँ आई हैं, उनका प्रारम्भ सूत और श्रोता ऋषियों ने शिव माहात्म्य का प्रदर्शन करने के लिए किया है। अतः उनमें परस्पर विरोध दिखाई नहीं देता। परन्तु फिर भी जहाँ महादेव से भव, विष्णु और ब्रह्मा की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उत्पत्ति का वर्णन है वहाँ पढ़ने वाले के हृदय में यह प्रश्न पैदा होता है कि विष्णु और ब्रह्मा की भाँति भव की भी अलग स्थिति होगी। परन्तु जब भव का स्वरूप-वर्णन पढ़ते हैं तो महादेव और भव में किसी प्रकार का भेद भाव दिखाई नहीं देता।

ग्रन्थ-रचना की दृष्टि से एक ही ग्रन्थ में बार-बार एक ही बात का नाम मात्र के परिवर्तन के साथ पुनः पाठ करना भी ठीक नहीं है। लिंग पुराण में यह दोष अनेक स्थलों पर पाया जाता है। सृष्टि वर्णन, शिव माहात्म्य प्रदर्शन, कम से कम ६ बार बिना किसीं विशेष भेद के दुहराया गया है। इसी प्रकार शिव स्तोत्रों तथा शिव माहात्म्यों का बार-बार दुहराना भी ग्रन्थ-रचना शास्त्र की दृष्टि से अनुचित है। इस दोष के कारण पाठक तथा लेखक का समय खराब होता है। इस प्रकार के पुनरावृत्ति के दोष अनेक स्थलों पर पाठकों को बिना किसी विशेष यत्न के दिखाई देंगे। तीसरा स्थल भी पाठकों के सामने रख देना अप्रासंगिक न होगा। शिव के सामने विष्णु और ब्रह्मा की हीन स्थिति का दिग्दर्शन एक बार कराना पर्याप्त था, परन्तु लिंग पुराण के संग्रहकर्ता या लेखक इससे सन्तुष्ट न होकर, जहाँ कहीं अवसर देखते हैं, नई कथा तथा नया सिलसिला छेड़ कर शिव के सामने ब्रह्मा और विष्णु की स्थिति को कम करने में नहीं चूकते। त्रिदेवतावाद की दृष्टि से यह भी आवश्यक था कि लेखक महोदय कहीं तीनों शक्तियों का समन्वय दिखाते। इसके लिये थोड़ी बहुत कोशिश की गई है, परन्तु आवश्यकता इस बात की थी कि इस समन्वयवाद के लिए विशेष जगह दी जाती, परन्तु ऐसा नहीं किया गया।

लिंग पुराण के कुछ स्थलों पर, वेद संहिताओं के मन्त्रों का पाठ किया गया है। परन्तु इन मन्त्रों की प्रतीक आदि नहीं लिखी गई। यह नहीं बताया गया कि कौन सा मन्त्र किस वेद से लिया गया है। इसी प्रकार पञ्चाक्षर मंत्रोपदेश का माहात्म्य तो गा दिया है, परन्तु उसका स्वरूप निर्देश स्पष्ट रूप में नहीं किया गया। ग्रन्थरचना की दृष्टि से लिंग पुराण में यह भी बड़ी भारी त्रुटि है कि इसमें किसी एक ग्रन्थ-लेखक का व्यक्तित्व नहीं झलकता। निःसन्देह कथा श्रावक सूत है, परन्तु अनेक स्थलों पर ऐसा मालूम होता है कि लेखक बदल रहा है, परन्तु इसका वर्णन कहीं नहीं किया गया। लिंग पुराण में कोई ऐसा सूत्र या तार नहीं है जिसमें किसी एक लेखक का व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित किया गया हो।

(३) आचार शास्त्र की दृष्टि से

आचार शास्त्र की दृष्टि से अर्थवादों, कथाओं तथा माहात्म्य वर्णनों की समालोचना लिंग पुराण जैसे किसी भी ग्रन्थ की श्रेष्ठता का निर्णय करने के लिये, आवश्यक है कि उस ग्रन्थ में वर्णित स्त्री पुरुषों के परस्पर सम्बन्ध का निरीक्षण किया जाय। इस दृष्टि से लिंग पुराण घटिया स्थिति का ग्रन्थ सिद्ध होता है। लिंग पुराण में स्त्रियों का जो वर्णन किया गया है उससे पता लगता है कि लेखक स्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाति को भोग का साधन और अस्वतंत्र समझता था। इसके लिए निम्न लिखित उद्धरण हम पाठकों के सामने उद्धृत करते हैं।

गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी के लिए ब्रह्मचर्य का उपदेश करने के बाद बैखानसों के विषय में लिखते हैं :—

स्त्रियः सदा परित्याज्याः संगं नैव च कारयेत्।
कुणपेषु च यथा चित्तं तथा कुर्याद्विचक्षणः॥

स्त्रियों का सदा परित्याग करना चाहिए। इनका कभी संग न करे। बुद्धिमान् इन्हें लाश की भांति माने।

विण्मूत्रोत्सर्गकालेषु वहिर्भूमौ यथा मतिः।
तथा कार्या रतौ चापि स्वदारे चान्यतः कुतः।
अङ्गारसदृशी नारी घृतकुम्भसमः पुमान्।
तास्मान्नारीषु संसर्गं दूरतः परिवर्जयेत्।

लिंग पु० अ० ८। श्जोक २१।२२।२३।

मनुष्य जिस प्रकार गृहशौच तथा मलमूत्रोत्सर्ग करते समय बाहर भूमि में संग करता है उसी प्रकार केवलमात्र रतिकाल में अपनी स्त्री का संग करे। अन्य स्त्री का संग न करे।

स्त्री जलते हुए कोयलों के समान होती है। पुरुष घी से भरे हुए घट के समान होता है। इसलिये स्त्रियों का दूर से ही संग छोड़ देना चाहिए।

इन श्लोकों में स्त्री जाति की अंगार के साथ उपमा दी जाती है। उन्हें भोग का विषय माना है। काम या भोगवाद को बढ़ाने वाली केवल स्त्रियाँ ही नहीं होतीं, पुरुष भी इसमें विशेष कारण होते हैं। आदर्श ब्रह्मचर्य रखने के लिये, जिस प्रकार से पुरुषों को स्त्री-संसर्ग से बचने का आदेश दिया है उसी प्रकार से स्त्रियों की दृष्टि से भी उपदेश होना चाहिये। परन्तु इसकी आवश्यकता का अनुभव ही नहीं किया गया। किया भी क्यों जाय, जबकि लिंग पुराण के लेखक स्त्रियों को सर्वथा अस्वतन्त्र समझते हैं! स्त्रियाँ भोग्य वस्तु हैं, यह विचार लिंग पुराण के इस वाक्य से भी सिद्ध होता है।

स्त्रियः सर्वा न हन्तव्या पापकर्मरता अपि॥
न यज्ञार्थं स्त्रियो ग्राह्याः सर्वैः सर्वत्र सर्वदा।
सर्ववर्णेषु विप्रेन्द्राः पापकर्मरता अपि॥

लिं० पु० अ० ७८। श्लो० १८।१९।

पाप कर्म में लगी हुई स्त्रियों की भी हत्या नहीं करनी चाहिए। यज्ञ कार्य में किसी समय भी किसी दशा में स्त्री का ग्रहण नहीं करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कामतोपि कृतं पापं भ्रूणहत्यादिकं च यत् ।
तत्सर्वं शूलदानेन भिद्यान्नारी न संशयः ।
सायुज्यं चैवमाप्नोति भवान्या द्विजसत्तमाः ।
कुर्याद्वा नरः सोपि रुद्रसायुज्यमाप्नुयात् ।
पौर्णमास्याममावास्यां वर्षमेकमतन्द्रिता ।
उपवासरता नारी नरोपि द्विजसत्तमाः ।
नियोगादेव तत्कार्यं भर्तृणां द्विजसत्तमाः ।
जपः दानं तपः सर्वमस्वतन्त्राः यतः स्त्रियः ।

लि० पु० अ० ८४। १२।१६।

कामवश भी जो भ्रूणहत्यादि पाप हो जाए, तो स्त्री शूलदान से उसे नाश करदे । हे द्विज श्रेष्ठो ! इस प्रकार वह पार्वती का सायुज्य प्राप्त करती है । पुरुष भी यदि ऐसा करे, तो वह भी रुद्रसायुज्य को प्राप्त करे । पुरुष तथा नारी एक वर्ष तक आलस्य रहित होकर पौर्णमासी अथवा अमावस्या में उपवास करें । स्त्रियों को जप, दान, तप, सब पतियों की आज्ञा से करना चाहिए, क्योंकि स्त्रियाँ स्वतन्त्र नहीं हैं । स्त्रियाँ परतन्त्र होती हैं । उन्हें पतियों की आज्ञा से ही कार्य करना चाहिए ।

पोडषस्त्रीसहस्राणि शतमेकं तथाविधम् ।
कृष्णस्य तासु सर्वासु प्रिया ज्येष्ठा च रुक्मिणी ।।

लिं० पु० ६९ अ० ६६ श्लोक

कृष्ण की १६१०० स्त्रियाँ थीं । परन्तु उन सब में उन्हें केवल रुक्मिणी ही सबसे अधिक प्रिय थी ।

इन सब श्लोकों का भाव यह है कि "स्त्रीरत्नं दुष्कुलादपि" के अनुसार, पापिनी से पापिनी स्त्री को भी नहीं मारना चाहिये, अथवा भोग वासना को तृप्त करने के लिये उसको रत्न की तरह संभाल कर रखना चाहिये । इसी भोगकामना को पूर्ण करने के लिये भी यह लिखा है कि भ्रूणहत्यादि भोगकामना के पापमय परिणाम भी शूल दान से मिट जाते हैं । धर्म यज्ञ तप आदि के करने के विषय में भी वह पतियों के अधीन हैं, अस्वतन्त्र हैं । भोगी पुरुष भला कब चाहेगा कि उसकी स्त्री यज्ञ योगादि करके अपने स्वरूप को समझने लगे और उसकी भोग वासनाओं में बाधक सिद्ध हो । महाभारत के योगी कृष्ण के नाम पर, १६ हजार स्त्रियां लिख कर, अपने भोगदारमय सिद्धान्तों का समर्थन किया गया है । परन्तु लेखक महोदय, रामायण की उस घटना को भूल गये हैं, जहां रामने विश्वामित्र की आज्ञा से ताडका को मारा था । यदि स्त्रियों को यह मालूम हो कि उन्हें भी पाप या अधर्म का बुरा फल भोगना पड़ेगा तो वह अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीवन की रक्षा के लिये स्वयं पाप मार्ग से बचें। परन्तु जब उन्हें कहा जाता है कि पाप करने पर भी उन्हें कोई खतरा नहीं तो वह उससे क्यों बचें, और क्यों धार्मिक कामों में प्रवृत हों? यदि उन्हें मालूम हो कि उनका अपना भी धर्म कोई पृथक् पदार्थ है तो वह सुदर्शन या उस जैसे अन्य पापी पतियों की काम वासनाओं या भोग वासनाओं का प्रतिवाद करें। इसी लिंग पुराण में सुदर्शन की कथा का वर्णन है। इससे पता लगता है कि किस प्रकार अस्वतन्त्र स्त्रियाँ पतियों की मूर्खता तथा अज्ञानता के कारण दूसरों की भोगतृप्ति का साधन बनती हैं। इस कथा का प्रारम्भ इन श्लोकों से किया गया है—

गृहस्थैश्च न निंद्यास्तु सदा ह्यतिथयो द्विजाः।
बिरूपाश्च सुरूपाश्च मलिनाश्चाप्यपंडिताः॥
सुदर्शनेन मुनिना कालमृत्युरपि स्वयम्।
पुरा भूमौ द्विजाग्र्येण जितो ह्यतिथिपूजया॥

लिं० पु० २६ अ०। ३४ श्लोक

गृहस्थियों को अतिथियों की कभी निन्दा नहीं करनी चाहिये। अतिथि कैसे ही क्यों न हो। सुरूप हों, कुरूप हों, मलिन हों या मूर्ख। द्विजश्रेष्ठ सुदर्शन मुनि ने अतिथिपूजा से स्वयं कालमृत्यु को जीता था।

सुदर्शन ने कालमृत्यु को जीतने की इच्छा से अपनी धर्मपत्नी को कहा कि तुमने घर आए हरेक अतिथि का सब प्रकार से विना किसी संकोच के आतिथ्य करना। अतिथि साक्षात् शिवरूप है। सुदर्शन की स्त्री ने न चाहते हुए भी विवश और संतप्त होकर, पति की आज्ञा को मानना स्वीकार किया। दोनों की परीक्षा लेने के लिए धर्म द्विजोत्तम का रूप धारण करके अतिथि बनकर, उनके घर गया। सुदर्शन बाहर गया हुआ था। स्त्री ने अन्नादि अर्घ्य से उसका स्वागत तथा आतिथ्य किया। इसके बाद वह अतिथि पूछता है कि तुम्हारे पति कहां गए हैं, अभी वह कोई उत्तर नहीं देती कि धर्म उस स्त्री को कहता है—शेष कथा श्लोकों में इस प्रकार से लिखी हैं—

अन्नाद्यैरलमद्यार्यें स्वं दातुमिह चार्हसि।
सा च लज्जावृता नारी स्मरन्ती कथितं पुरा॥५५॥
भर्त्रा न्यमीलयन्नेत्रे चचाल च पतिव्रता॥
किं चैत्याह पुनस्तं वै धर्मे चक्रे च सा मतिम्॥५६॥
निवेदितुं किलात्मानं तस्मै पत्युरिहाज्ञया।
एतस्मिन्नंतरे भर्ता तस्या नार्यः सुदर्शनः॥५७॥
गृहद्वारं गतो धीमाँस्तामुवाच महामुनिः।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एह्य हि क्व गता भद्रे, तमुवाचातिथिः स्वयम् ॥५८॥
भार्यया त्वनया सार्धं मैथुनस्थोहमद्य वै ।
सुदर्शन महाभाग किं कर्तव्यमिहोच्यताम् ॥५९॥
सुरतान्तस्तु विप्रेन्द्र संतुष्टोहं द्विजोत्तम ।
सुदर्शनस्तं प्राह सुप्रहृष्टो द्विजोत्तम ॥६०॥
भुंक्ष्व चैनां यथाकामं गमिष्येऽहं द्विजोत्तम ।

२९अ० श्लो० ५५-६१

इन श्लोकों का शब्दार्थ लिखने का सामर्थ्य हममें नहीं है। श्लोंको का भाव यह है कि वह स्त्री अपने आप को अतिथि की भोग वासनाओं की तृप्ति के लिए समर्पण करती है। उसका पति भी "भुंक्ष्व चैनां यथाकामम्" "तुम यथेच्छ इससे भोग करो" कह कर, जाने को तय्यार हो जाता है। यह कथा केवल काल्पनिक या आलंकारिक हो सकती है परन्तु इस प्रकार की कथाओं का साधारण बुद्धि वाले लोगों पर जो बुरा असर होता है वह किसी से छिपा नहीं है। आज भी इसी प्रकार के विचारों के कारण कितनी स्त्रियां अतिथि रूप में, घरों में आने वाले नामधारी सन्तों के हाथ में अपने आपको भेंट कर देती हैं। लिग पुराण के लेखक ने देवता के अतिथि रूप के महत्त्व को सिद्ध करने के लिए कहानी लिखी, परन्तु यह नहीं सोचा कि इस कहानी का कमजोर लोगों पर क्या बुरा प्रभाव पड़ेगा? इसी प्रकार पापी से पापी आदमी को भी लिंग के छूने तथा देखने से पाप मुक्त होने की प्रेरणा करके, लिंग पुराण के लेखक ने अधर्म के लिए रास्ता खोल दिया है। आचार तथा सदाचार की दृष्टि से इस प्रकार की त्रुटियाँ लिंग पुराण में अनेक स्थानों में दिखाई देती हैं। नारद और पर्वत की कहानी में किस प्रकार, विष्णु छलिया बनकर, स्वयंवर में अम्बरीष की कन्या श्रीमती का पाणिग्रहण करता है। यह कथा भी इस दृष्टि से अच्छी नहीं है। इस प्रकार संक्षेप से हमने इम विषय पर विचार किया है। इस प्रकरण को समाप्त करने से पूर्व, यह कह देना अप्रासंगिक नहीं कि आम जनता तथा कुछ पढ़े लिखे विद्वानों में, लिंग पुराण तथा लिंग शब्द के सम्बन्ध में जो गन्दे भाव पाए जाते हैं; उसका लिंग पुराण में कहीं भी जिकर नहीं है। लिंगपुराण में उपरिलिखित प्रकार से भोगवाद का वर्णन अवश्य है, परन्तु वाममार्गियों की भांति पुरुष के लिंग तथा स्त्री की योनि की पूजा आदि का कहीं वर्णन नहीं है। लिंगपुराण के सम्बन्ध में फैले हुए, इस भ्रम को भी दूर करना चाहिए।

इसके बाद धर्म स्वरूप दिखाता है, वर देता है, शंकर की भक्ति का प्रसाद देता है और कहता है कि मैंने इससे भोग नहीं किया, केवल परीक्षा के लिये आया था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विचारणीय तथा मननीय स्थल

अन्य पुराणों की भांति लिंग पुराण में भी कलियुग का वर्णन मनोरंजक ढंग से किया गया है। इस वर्णन के पढ़ने से मालूम होता है कि कोई साक्षाद्द्रष्टा कलियुग की अवस्था का वर्णन कर रहा है। पुराणों में कलियुग के जो वर्णन हैं उनसे लेखक की दूरदर्शिता का पता लगता है। धनवाद, भोगवाद तथा साम्प्रदायिकतावाद और अज्ञानवाद की वृद्धि के परिणामों का वर्णन किया गया है। आज भी यूरोप में कई ऐसे ऐतिहासिक या अनुमानप्रवीण महानुभाव विद्यमान हैं जो समाज की वर्तमान अवस्था को देखकर दूर के भविष्य का सही चित्र खींच देते हैं। १९१४ ई० में यूरोप में जो बड़ा भारी युद्ध हुआ, उसका वर्णन यूरोप के कई विद्वानों की पुस्तकों में कई साल पूर्व लिखा जा चुका था। लिंग पुराण के इन वर्णनों के पढ़ने से पता लगता हैं कि लेखक की दृष्टि दूर तक जाने वाली तथा समाज की वर्तमान अवस्था के परिणामों को ढूँढने में चतुर थी। इन कलिवृत्तान्तों से पता लगता है कि यदि समाज की अवस्था सुधारनी है तो इन बुराइयों को दूर करना चाहिये। इन बुराइयों को दूर करने के लिये, लिंग पुराण में अनेक स्थलों पर सदाचार सम्बन्धी विषयों का उत्तम ढंग से वर्णन किया है। पाठकों के मनोविनोद तथा मनोरंजन के लिये हम उनमें से कुछ श्लोकों को यहाँ उद्धृत करते हैं।

सदाचारी जपन्नित्यं ध्यायन् भद्रं समश्नुते।
सदाचारं प्रवक्ष्यामि सम्यग्धर्मस्य साधनम् ॥१॥

सदाचारी पुरुष ही जप करता हुआ, ध्यान करता हुआ मंगल को प्राप्त करता है। सदाचार ही धर्म का साधन है ॥१॥

यस्मादाचारहीनस्य साधनं निष्फलं भवेत्।
आचारः परमो धर्मः आचारः परमं तपः ॥२॥

आचारहीन पुरुष के सब काम तथा साधन निष्फल होते हैं। आचार ही परम तप तथा परम धर्म है ॥२॥

आचारः परमा विद्या आचारः परमा गतिः।
सदाचारवतां पुंसां सर्वत्राप्यभयं भवेत् ॥३॥

आचार ही विद्याओं तथा परम प्रतिष्ठा का मूल कारण है। सदाचारी पुरुष सब जगह निर्भय होकर रहता है।३।

तद्वदाचारहीनानां सर्वत्रैव भयं भवेत्।
सदाचारेण देवत्वमृषित्वं च वरानने ॥४॥
उपयान्ति कुयोनित्वं तद्वदाचारलंघनात्।
आचारहीनः पुरुषो लोके भवति निन्दितः ॥५॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तस्मात्संसिद्धिमन्विच्छन्सम्यगाचारवान् भवेत् ।
यस्य यद्विहितं कर्म तत्कुर्वन्मत्प्रियः सदा ॥६॥

इसके विपरीत आचारभ्रष्ट मनुष्य कदम-कदम पर भयभीत होता है । सदाचार द्वारा ही देवत्व और ऋषित्व का पद मिलता है । आचारहीन पुरुष निकम्मी योनियों में जन्म लेता है । इसलिये सफलता के अभिलाषी को सदा सदाचारी बनना चाहिए । जिसका जो काम या धर्म है उसे उसी का पालन करना चाहिये ।

संध्योपासनशीलः स्यात्सायं प्रातः प्रसन्नधीः ॥
उदयास्तमयात्पूर्वमारभ्य विधिना शुचिः ।
कामान्मोहाद्भयाल्लोभात्संध्यां नातिक्रमेद् द्विजः ।
संध्यातिक्रमणाद्विप्रो ब्राह्मण्यात्पतते यतः ।

मनुष्य को सायं प्रातः प्रसन्न चित्त होकर संध्या करनी चाहिए । सूर्योदय तथा सूर्यास्त से पूर्व, काम क्रोध मोह लोभ आदि किसी भी कारण से संध्या का परित्याग नहीं करना चाहिए । संध्या न करने से मनुष्य ब्राह्मण भाव से च्युत होता है ।

शूद्रान्नं यातयामान्नं नैवेद्यं श्राद्धमेव च ।
गणान्नं समुदायान्नं राजान्नं च विवर्जयेत् ॥
अन्नशुद्धौ सत्वशुद्धिर्न मृदा न जलेन वै ।
सत्वशुद्धौ भवेत्सिद्धिस्ततोऽन्नं परिशोधयेत् ॥

शूद्र के अन्न, बासी भोजन, नैवेद्य, श्राद्ध, समुदायों के साझे अन्न तथा राजा के अन्न का यथाशक्ति परित्याग करे । अन्न शुद्धि से ही सत्व शुद्धि होती है । मिट्टी व जल से आत्मा शुद्ध नहीं होता । इसलिये सदा शुद्ध अन्न का ही सेवन करना चाहिये ।

असत्यं न वदेत्किञ्चिन्न सत्यं च परित्यजेत् ।
यत्सत्यं ब्रह्म इत्याहुरसत्यं ब्रह्मदूषणम् ॥
परदारान् परद्रव्यं परहिंसा च सर्वदा ।
क्वचिच्चापि न कुर्वीत वाचा च मनसा तथा ॥

झूठ बिल्कुल न बोले और न ही सत्य को छोड़े, क्योंकि सत्य ब्रह्म है, असत्य तो ब्रह्म दूषण है, परस्त्री, परद्रव्य तथा पर हिंसा मन, वचन तथा कर्म्म से कभी कहीं न करे ।

इस प्रकार इस प्रकरण में ८५ अध्याय के ३० से लेकर ६० श्लोकों तक सदाचार का विधान है । इसमें कई बातें साम्प्रदायिक दृष्टि से भी लिखी गई हैं, उन्हें छोड़ना चाहिए । परन्तु व्यावहारिक दृष्टि सें सार्वभौम सचाइयों का भी अच्छे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ढंग से वर्णन किया है। इसी प्रकार व्यवहार की दृष्टि से निम्नलिखित श्लोक भी द्रष्टव्य तथा स्मरणीय है।

स्त्रीसंगमे तथा गीते द्यूते व्याख्यानसंगमे।
व्यवहारे तथाहारे त्वर्थानां च समागमे।
आये व्यये तथा नित्यं त्यक्तलज्जस्तु वै भवेत्॥

लि० पु० उत्तर भाग ३।६०।६१

स्त्री के साथ समागम करने, गाने, जूआ खेलने, व्याख्यान आदि के समय, लेन देन के व्यवहार में तथा रुपये के अर्थ पुरुषार्थ के इकट्ठा करने में, नित्य के आय व्यय के लेखे में लज्जा को छोड़ कर काम करना चाहिए।

रेरेकारो न कर्तव्यस्तुंतुंकारस्तथैव च।

लिंग पुराण उत्तर भाग १८ अ०। १६ श्लो०

किसी भी मनुष्य को "रे रे" तथा "तू तू" शब्द से सम्बोधन कर के नहीं बुलाना चाहिए।

इतिहास तथा अन्य विद्यान्वेषण में व्यग्र विद्वानों के लिये भी लिंग पुराण के निम्नलिखित स्थल विचारपरम्परा में काफी सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

जलस्य नाशो वृद्धिर्वा नास्त्येवास्य विचारतः।
ध्रुवेणाधिष्ठितो वायुर्वृष्टिं संहरते पुनः॥

लिं० पु० पूर्वार्ध अ० ५४।६७ श्लोक

वैज्ञानिक विचारशील लोगों की दृष्टि में इस सृष्टि में न तो जल का नाश होता है और न इस की वृद्धि होती है।

(ख) इसी प्रकरण में षट्ऋतुओं का वर्णन वैदिक नामों के साथ किया गया है। मित्र वरुण शुचि शुक्र विश्वावसु आदि नामों के प्राकृतिक विज्ञान की दृष्टि से क्या अर्थ हो सकते हैं, उसका थोड़ा बहुत निर्देश यहाँ उपलब्ध होता है।

नवयोजन साहस्रो विस्कम्भः सवितुः स्मृतः।
त्रिगुणस्तस्य विस्तारो मंडलस्य प्रमाणतः॥

सूर्य का विष्कम्भ नौ हजार योजन है मण्डल के परिमाण से उसका विस्तार तिगुना है।

लिंग पुराण के ६६ अध्याय में अग्निविद्या का वर्णन किया गया है। कठोपनिषद् में नचिकेता ने द्वितीय वर से जिस अग्नि विद्या के सीखने की इच्छा प्रकट की है, उसका थोड़ा बहुत वर्णन यहाँ मिल जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिंग पुराण अध्याय २४ में "परिवर्त" शब्द का निश्चित अर्थ मालूम हो जाय तो भारतवर्ष के इतिहास तथा संस्कृत साहित्य के विकास पर काफी प्रकाश डल सकता है।

लिंगपुराण पूर्वभाग अध्याय ४४ में नदियों का वर्णन जाम्बूनदी स्वर्णोदका आदि नाम से किया गया है और अन्त में इसी प्रकरण को—

य: पञ्चनदमासाद्य स्नात्वा जप्येश्वरेश्वरम् ।
पूजयेच्छिवसायुज्यं प्रयात्येव न संशय: ।। ४८ श्लो० ।

जो आदमी पञ्चनद में स्नान कर जप्येश्वर की पूजा करता है वह विना किसी सन्देह के शिव पद को पाता है।

इस श्लोक से समाप्त किया गया है। यहां पञ्चनद का क्या अर्थ है? यदि पञ्जाब अर्थ माना जाय तो इन नदियों के विषय में जिज्ञासा का भाव पैदा होता है। इन नदियों के इस पुराण में यह नाम हैं। यह महादेव की जटा से निकली हैं, जटादेश, इसी जटादेश से वृषध्वनि, जाम्बूनदी स्वर्णोदका आदि नदियां निकलती हैं।

न विषं कालकूटाख्यं संसारो विषमुच्यते ।
८६ अ० लि० पु० ५ मा० ५ श्लो०

कालकूटादि विष विष नहीं हैं। संसार ही विष है।

कालकूट नाम से प्रसिद्ध विष कोई अलौकिक चीज नहीं है, यह संसार का ही नाम हैं।

इसी प्रकार सृष्टि वर्णन के प्रकरणों के विशेष मनन से प्रश्न पैदा होता है कि वराह अवतार हिरण्यकशिपु तथा त्रिपुर को एक पुर बनाने की दन्त कथाओं का असली भाव क्या है? क्योंकि यदि इनको जीवित जागृत पुरुष या देशविशेष मानें तो इनके सम्बन्ध में लिखे हुए वर्णन असम्भव मालूम होते हैं। इस प्रकरण को हम निम्नलिखित श्लोकों के साथ समाप्त करते हैं।

इन श्लोकों में यह वर्णन किया गया है कि किस प्रकार मनुष्य पहले पहाड़ों और समुद्र के तटों पर रहते थे फिर वृक्षों में, फिर शहर में फिर क्रमश: घर बना कर रहने लगे। साथ ही इन श्लोकों में यह भी वर्णन किया गया है कि किस प्रकार मनुष्य समाज ने धीरे-धीरे अपनी जीविका के साधनों में परिवर्तन किए। सारे उद्धरण को छोड़कर कुछ पंक्तियां पाठकों के सामने पेश करते हैं :—

(१) "पर्वतोदधि वासिन्यो ह्यनिकेताश्रयास्तु ता: ।" १७
(२) "प्रादुरासंस्तदा तासां वृक्षास्ते गृहसंज्ञिता ।।" २२
(३) "द्वन्द्वै: संपीड्यमानाश्च चक्रुरावरणानि तु ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कृतद्वन्द्वप्रतीघाता: केतनानि गिरौ ततः ।।
पूर्वं निकामचारास्ता ह्यनिकेता यथाभवन् ।
यथायोगं यथाप्रीति निकेतेष्ववसन्पुनः ।।

लिं० पु० अध्याय ३९ । श्लोक । ३३।३४।।

(क) "ईश्वर की बनाई हुई मनुष्य प्रजाएं पर्वत और समुद्रों के प्रान्त भागों में रहती थीं। उनके घर मकान आदि कुछ न थे।"

(ख) "इसके बाद कुछ समय बीतने पर, वे वृक्षों के आश्रय में, उन्हें ही अपना घर समझ कर, रहने लगे।

(ग) "सुख, दुःख, शीत, गर्मी आदि से सताये जाने पर उनसे बचने के लिये वही मनुष्य कुछ समय बाद मकान आदि बनाकर उनमें रहने लगे।

(घ) पहले मनुष्य विना घर वार के टोलियाँ(निकाय)बना कर रहते थे परन्तु धीरे-धीरे अवस्थायें अनुकूल होने पर आवश्यकताएँ बढ़ने पर घरबार बना कर रहने लगे।

समाज के विकास का इतिहास जानने वालों के लिये यह उद्धरण बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। यूरोपियन साहित्य की भांति यहाँ भी मनुष्य समाज की Arborial Stage (वृक्षों में फलादि पर निर्वाह करने की स्थिति) का वर्णन मिलता है।

इस प्रकार की कई पहेलियाँ पाठकों के सामने रखी जा सकती हैं, परन्तु स्थानाभाव तथा विषयान्तर होने से इसे हम समाप्त करते हैं।

उपसंहार

लिंग पुराण की श्लोक संख्या के विषय में विशेष मतभेद न होने के कारण इस विषय में कुछ न लिखकर, अपने प्रस्तुत समालोचनात्मक विवरण को समाप्त करते हैं। इस समालोचनात्मक विवरण का उद्देश्य यही है कि लिंग पुराण के विषय में लोगों को यथार्थ ज्ञान कराया जाय।

लिंग पुराण का अनुशीलन करने के बाद हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि लिंग पुराण धर्म-ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। इसमें आलंकारिक ढंग से, सृष्टि-उत्पत्ति का वर्णन किया गया है। बीच-बीच में व्यवहारोपयोगी बातों का भी वर्णन होने से हम इसे किसी अंश तक व्यावहारिक नीति ग्रन्थ भी कह सकते हैं। आशा है उदार पाठक, इस समालोचना पर उदारतापूर्वक विचार करेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

दयानन्द संस्थान

(पंजीकृत—न्यास) द्वारा प्रकाशित

प्रमुख वैदिक साहित्य की सूचि

१. सम्पूर्ण वेद भाष्य : ४ जिल्दों में — मूल्य २८४)
२. सम्पूर्ण वेद भाष्य : ३ जिल्दों में — २७१)
३. सम्पूर्ण वेद भाष्य : २ जिल्दों में — २५०)
४. सम्पूर्ण वेद भाष्य आर्ट पेपर पर — ६०४)
५. यजुर्वेद भाष्य महर्षि दयानन्द कृत सजिल्द — ३०)
६. अथर्ववेद परिचय : पं० विश्वनाथ मिद्यामार्तण्ड — ५)
७. अथर्ववेदीय चिकित्सा शास्त्र : मिद्यामार्तंड स्वामी ब्रह्ममुनि जी कपड़े की सुनहरी जिल्द (द्वितीय संस्करण) — १५)
८. वेदामृत पृष्ठ ४०० से अधिक : सजिल्द — १०)
९. शतपथ ब्राह्मण (प्रथम काण्ड) : स्वामी समर्पणानन्द जी — २५)
१०. संक्षिप्त महाभारत : स्व० पं० सन्तराम — १०)
११. सामवेद भाष्य — २५)
१२. वैदिक गीता भाष्य : सजिल्द १५) — मुनहरी जिल्द २०)
१३. वेदांजलि — सजिल्द १५)
१४. अपने प्रभु से : प्रार्थना — सजिल्द १०)
१५. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश : — सजिल्द ८) अजिल्द ६)
१६. अथर्ववेदीय मन्त्र विद्या — सजिल्द ८)
१७. वेदों का यथार्थ स्वरूप — सजिल्द १०)
१८. उपनिषद् संग्रह : महात्मा नारायण स्वामी जी — सजिल्द १०)
१९. वैदिक सत्संग पद्धति (हिन्दी) नया संस्करण — अजिल्द ८० पैसे
२०. वैदिक अर्थनीति—श्रीपाद दामोदर सातवलेकर — ४० पैसे
२१. वैदिक अर्थशास्त्र परिचय : पं० भारतेन्द्र नाथ — १)
२२. क्या वेद में मांस भक्षण का विधान है ? लेखक—आचार्य शिवपूजन जी, कानपुर — १)
२३. वेद और बाईबिल—दीनानाथ सिद्धांतालंकार — १)
२४. मोक्ष का वैदिक मार्ग - आचार्य वैद्यनाथ व योगीराज पथिक — १)
२५. वैदिक सिद्धान्त—पं० यशपाल सिद्धांतालंकार — ३)
२६. गायत्री शतक—पं० शिवदयालु आर्य — २)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२७. ईश्वर-भक्ति—स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती मूल्य १)५०
२८. माँ गायत्री : तृतीय संस्करण १)५०
२९. धर्म का मार्ग—पं० सुरेशचन्द्र विद्यालंकार १)
३०. अमृतपथ—पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार सजिल्द ५)
३१. नारायण अध्यात्म सुधा - श्री महात्मा नारायण स्वामी जी १)
३२. शतक-त्रयी—पं० शिवदयालु जी आर्य १)५०
३३. उपनिषद्-वचनामृत—पं० दीनानाथ सिद्धांतालंकार १)
३४. ईशोपनिषद्—पं० हरिशरण सिद्धांतालंकार १)
३५. उपनिषद् त्रयी—पं० शिवदयालु आर्य १)५०
३६. स्वर्ण पथ—स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती अजिल्द १)५०
३७. वैदिक धर्म ही क्यों ? महात्मा नारायण स्वामी ५० पैसे
३८. महान् अनुपमेय--ऋषिराज स्वामी दयानन्द १)५०
३९. धर्म का का सार : कथाएं १)
४०. आर्याभिविनय (काव्यमय व्याख्या) १)५०
४१. प्रभु के चरणों में—हरिशरण सिद्धांतालंकार १)५०

अन्य उपयोगी साहित्य

४२. ऋषि दयानन्द ने कहा था १)५०
४३. योगेश्वर श्री कृष्ण--स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती ६० पैसे
४४. १८५७ के भूले विसरे शहीद—बनारसी सिंह। १)५०
४५. कल्याण का मार्ग—श्री जगन्नाथ पथिक २५ पैसे
४६. यज्ञ प्रसाद महात्मा आनन्द स्वामी जी ६० पैसे

विवाह पर बांटने के लिए

४७. वैदिक गृहस्थाश्रम—विद्यामार्तण्ड पं० विश्वनाथ जी ८)
४८. धरती का स्वर्ग : गृहस्थाश्रम २)
लेखक पं० शिवकुमार शास्त्री महामहोपदेशक सजिल्द ३)
४९. आदर्श परिवार—श्री युगल किशोर चतुर्वेदी ६० पैसे

आर्यसमाज सम्बन्धी साहित्य

५०. स्वामी दयानन्द (जीवन चरित्र सजिल्द ६) अजिल्द २)
५१. ज्योति स्तम्भ ६)
५२. आर्य क्रांतिकारी—श्री बनारसी सिंह ३)

ईसाईयत सम्बन्धी साहित्य

५३. पोप की सेना का भारत पर हमला २० पैसे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५४. बाइबिल को चुनौती मूल्य २० पैसे
५५. बाइबिल कसौटी पर २५ पैसे

विविध साहित्य

५६. वेद-ज्योति सजिल्द ६) । अजिल्द ४)
५७. बाल-सत्यार्थप्रकाश : स्वामी जगदीश्वरानन्द २)५०
५८. भाई परमानन्द : जीवन चरित्र—बनारसी सिंह २)
५९. वन्दना के स्वर : क्षेमचन्द्र सुमन सजिल्द १५)
६०. बाल्मीकि रामायण : (संक्षिप्त) श्री प्रेमचन्द्र शास्त्री ३)
६१. दयानन्द चित्र-दर्शन २०)
६२. ज्ञान-दर्शन लेखक डा. भवानीलाल भारतीय एम. ए. पी. एच. डी. सजिल्द १०)
६३. दयानन्द चित्रकथा— ५० पैसे
६४. चार फल— ३० पैसे
६५. योग की राह पर : ५० पैसे
६६. पातंजल योगशास्त्र : १)
६७. भारत की अवनति के सात कारण ६० पैसे
६८. शक्ति रहस्य : पं० यशपाल सिद्धान्तालंकार १)५०
६९. बृहस्पति राज धर्म सूत्र : २)
७०. उपनिषद कथा माला : महात्मा नारायण स्वामी १)
७१. अध्यात्म योग : पं० दीनानाथ सिद्धान्तालंकार (कपड़े की जिल्द) ८)
७२, स्वामी श्रद्धानन्द (जीवन परिचय) ४० पैसे
७३. महर्षि दयानन्द का ऐक्यवाद १)
७४. महर्षि दयानन्द ऐतिहासिक संस्मरण १)
७५. राष्ट्रवादी दयानन्द १)
७६. ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में १५)
७७. जनज्ञान—(शताब्दी विशेषांक) १०)
७८. योग और ब्रह्मचर्य्य (सचित्र) १)५०
७९. कायाकल्प : स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती २)
८०. ज्योतिर्मय : टी. एल. वास्वानी १)५०
८१. मुझे आर्य समाज क्यों प्रिय है १)

आदेश के साथ १।४ धन अगाऊ भेजें । रेलवे स्टेशन लिखें ।

दयानन्द संस्थान

वेद मन्दिर, ३१ नाईवाला, करोल बाग नई दिल्ली-५ ।

दूरभाष : ५६६३९/८०१२२१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी धर्मवेश जी
आप सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड आदि में प्रचार कर भारत लौट आए हैं। हमें विश्वास है कि आप भविष्य में भी वैदिक धर्म को सेवा करते रहेंगे। —सम्पादक

गढ़वा बिहार के श्री लक्ष्मीचन्द जी की पौत्री नन्हीं बेटी : गढ़वा यात्रा में इस से वेद मन्त्र सुनकर हम बहुत प्रभावित हुए।

—सम्पादक

वेद मन्दिर निर्माण
व
वेद भाष्य प्रकाशन

के महान् कार्य को चलाने के लिए उदारता पूर्वक अपना दान भेजिए

अध्यक्ष : **दयानन्द संस्थान**, वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

मुद्रक-प्रकाशक-सम्पादक—पं० राकेशरानी द्वारा स्वस्ति प्रेस, ५, रैगड़ पुरा, नई दिल्ली-५ में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

जुलाई
१९७८

Regd No. D(C) 201
Regd. No. 107119/75

ऋषि दयानन्द का वास्तविक चित्र

मिर्जापुर वासी पं० सूर्यदेव शर्मा के परिवार को शहीद लेखराम जी ने ऋषि का यह कैमरा चित्र दिया था। उन्होंने कैमरे से खींचा यह वास्तविक चित्र हमें प्रदान किया। वस्तुतः समाधि स्थिति में ऋषि का यह चित्र देश की अनमोल निधि है। [illegible]

Dr Vivek Arya Vedic Library, Delhi